

लौन्दर्य योग शिल्प विशेषांक

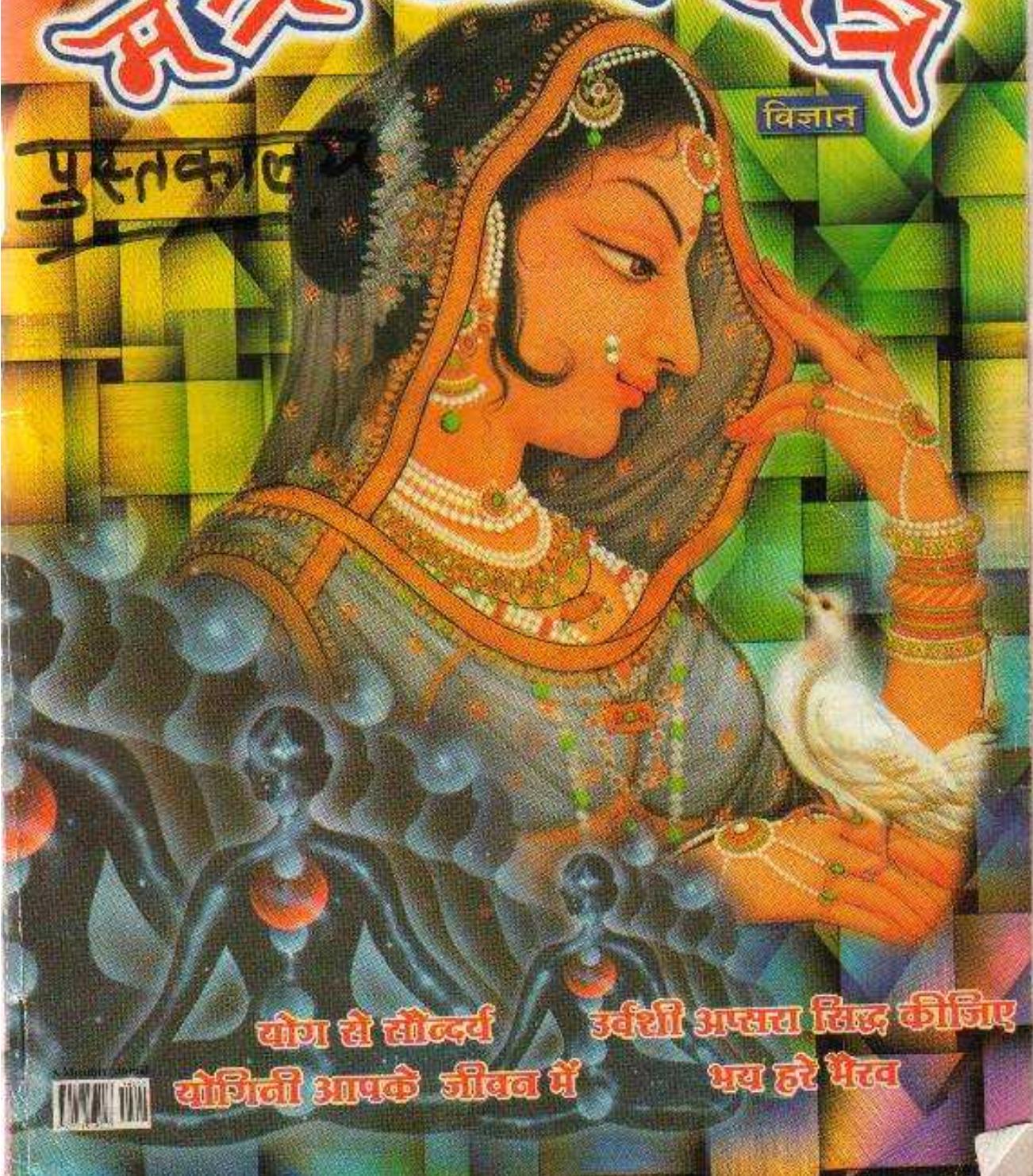
मई 2003

मूल्य : 10/-

सत्तत-यंत्र-यंत्र

विज्ञान

पुस्तकालय



योग से सौन्दर्य

गोगिनी आणके जीवन में

उर्वरी असाम सिल्क कीजिए

भय हरे पैदव





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

आने मध्ये कल्पी यात् विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोऽभूती उत्ति प्रगति और नारायण चूँ निराउर्मा से संबंधित नसिक लिखि

श्रीव्योपकाश

॥ उ० पद्म तत्वाय नाशयणाय गुरुकृत्यो नमः ॥



सद गुरुदेव

सदगुरु प्रवचन	5	Bhaagyodaya Kalp
गुरु वाणी	44	Sadhana
स्तम्भ		82
शिष्य धर्म	43	Kriyamaan Vijay
नक्षत्रों की वाणी	60	Sadhana
मैं समय हूँ	62	Chakreshwari Sadhana
वराहामहीन	63	Amritatva Sadhana
जीवन सरिता	64	
इस मास दिल्ली में	80	तनाव मुक्ति उपाय
एक दृष्टि में	86	समोहन विज्ञान

वर्ष 23	अंक 5
मई 2003	पृष्ठ 88



सिद्धाश्रम, 303 बोडर एक्सेस, वीतमपुर, दिल्ली-110034, फोन: 011-27182246, टेली-फोन: 011-27196700
भृत्र-त्रय विज्ञान, डॉ श्रीमती गार्ग शिक्षाट मौलिनी, जबलपुर-392001 (मध्य), फोन: 0291-2432200, टेलीफोन: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

साधना

गुरुकृत्यो नमः	32
उवर्शी रथ्मा	
अप्सरा साधना	50
शशिदेव्य साधना	55
बटुक भैरव साधना	66
सूर्यन गीरी साधना	70
योगिनी विश्वविणीसाधना	73
जीवन सीधार्थ साधना	75



स्तोत्र	
मंगल कवच	78



:: सम्पर्क ::

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस श्वामी
निखिलेश्वरानन्द जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किंगोर श्रीमाली
कार्य वाहक सम्पादक
श्री कैलाशपात्र श्रीमाली
संघीजक व्यवस्थापक
श्री उरविन्द श्रीमाली



प्रकाशक एवं स्वामित्व
थो कैलाश बन्द श्रीमाली
दास
नानू जाट लिंगम
C-178, नारायण इंडिस्ट्रीजल
पाल्या कैम्प 2, नन्द दिल्ली
से मुख्य नदा
मन तत्र यत् विज्ञान शक्तिकोर्त
कल्पनी जीवपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 195/-

नियम

पवित्र ने प्रस्तुति तथी रचनाओं का अधिकार परिवर्तन कर दिया। इस 'भज-त्रै-यज्ञ' विज्ञान' पवित्र में प्रकाशित लेखों से तमादक का सहमत होना उपर्याप्त नहीं है। तर्क-कुत्सु करणे वाले पाठ्यकारों में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्य रखनी। किसी नाथ, भगवान् या धर्मना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यही कर्त्ता प्रदन, नाम का तथ्य मिल जाय, तो उसे संखेण ताम्हो। पवित्र के लेखक गुप्तकार सत्य-तीरे देते हैं, जहाँ उनके पाते के नारे में कृष्ण भी अन्य जानकारी वेष सम्बन्ध नहीं होता। पवित्र में इकाईत निर्मली भी लेख या सामग्री को बारे में कान्द-विवाद का तर्क मान्य नहीं होता और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, गुप्तक या सम्पादक निर्मला होती। किसी भी सामग्री को किसी भी प्रश्नार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रश्नार के ताद-विवाद में जोषपुर न्यायालय की मान्य बोला। पवित्र का में प्रकाशित किसी भी सामग्री को सामग्री या पाठ्यक वर्णी से भी आत कर भक्तते हैं। पवित्रक वक्ताओंना से संगवाले पर हम अपनी तरफ से प्राप्तिक और तर्ही सामग्री अवधार यज्ञ बेजाते हैं। पर किर भी उसके बाद में अल्लों का नकारी के बारे में अवधार प्राप्त बोले या न होने के बारे में इमरी निर्मेयारी नहीं होती। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पवित्र का वायलय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या कान्द-विवाद मान्य नहीं होता। पवित्र का वायिक गुप्तक लक्षण में ३६५/ है, पर यह किसी विद्युत पर अपरिहार्य कारणों से पवित्र को प्रेसरिल या यज्ञ करना पड़े, तो वित्तने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उनीं में वार्षिक स्वरूपता अवधार की वर्ष, तीन वर्षों या पवित्रपीय स्वरूपता की पूर्ण समझ, इसमें किसी भी प्रश्नर की आपति या आलोचना किसी भी स्वर में लीकर नहीं होती। पवित्र में प्रकाशित किसी भी साधना में लक्षण अस्पष्टता, वार्षीय लाभ की निर्मेयारी साधक की स्वर्ण की विशेषता साधक कोई भी ऐसी उपायना, जप का संब्र प्रयोग न करे जो वैदिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पवित्र में प्रकाशित लेखों के लेखक वो भी या सामग्री लेखने के विचार भयन नहीं है, उन पर भाषा का अवधारण पवित्र के कर्मवारितों की तरफ से लेता है। पाठ्यकों की मात्रा पर हम अंक में विवर के विषये लेखों का भी ज्यों का त्यों समानेत्र विद्या गया है, जिससे कि नवीन पाठ्यक लाभ उठा सके। साधक या लेखक उपर्याप्त अनुभवों के अधिकार पर जो क्षमा, तत्र या यज्ञ (भले ही वे जातीय व्याख्या के इतर दी) बताते हैं, वे की दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में अलोचना नहीं बर्ख है। आतरण पूर्ण पर या अन्वर जो भी प्रोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी निर्मोक्षरों फलों के बारे भेदभेदकर अवधार आविष्ट की जाती। वीक्षा ग्राप करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उपर्याप्त सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सके, पर तो धीरी और सलत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण धब्दा और विश्वास के साथ ही दीक्षा ग्राप करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार जो कोई भी आपति या आलोचना त्योकार्य नहीं होती। पुरुदेव या पवित्र का परिवार हम सम्बन्ध में किसी भी प्रश्नर की निर्मेयारी बात नहीं करते।

प्रार्थना

यत्स्तो भान्यमदेश्य योगजतिर्भाग छद्यभृतं सतां
तत्योत्तं वध्यातिर्देवतमत्तो रवेष्टोहिता सञ्जज्ञा।
जीवितापि शिवस्य योगमहिता सौत्वर्य शाश्वदभवं
तत्सर्वं तद्गु शान्तिरूप लिपिं तोषं परं दीयताग्॥
योग जनित भोगात्म से परिपूर्ण तोकर साधक निरन्तर ब्रह्मानन्द
में निमन रहत है। योग के प्रमाण से निर्मल चित्त हुए राधक संदेश
सम्मोहन भाव में द्वितीय बोकर जीवन की आनन्दशूर्ण प्रियति का
अनुभव बात है। जीव का विव के साथ योग जनित सम्बन्ध ही
स्मृत्युसार, योग से सम्मोहन तथा सम्मोहन ही नीनर्व है, इसकी
उपलब्धि से साधक निरन्तर आत्मवान बना ध्यानगमन रहता है।

* स्वस्थ प्रेरणा *

किसी गव में एक लक्ष नियान करते थे। उस गोव में सन्त को
तोड़कर जोग सभी लोग कोस प्रयुक्त के थे, कोई किसी को कुछ देना नहीं
था। सन्त की कृतिया एक बोने में थी। अपने पास आए हुए अपकि को बे
पेड़ से कल लाकर खाने को देने के और बक्की का दृश्य देने को देने थे।

एक बार सन्त ने किसी को कहा, कि बहुत जल्द ही तुम्हें गदा
से नाना मिसान बाला है और उनकी बाल संघ निकली। एक अन्य
स्वरूप पर उन्होंने किसी को कहा, कि तुम्हारे मकान की छत जल रहा
है जिसे बानी है और व्यक्ति ने उनकी बाल पर विश्वास किया और
मकान में बाहर ही रहा। सन्त की बाल पुनः सत्य उत्तर, छत बस्तब में
अगले दिन ही आए गई।

सभी के अन्दर यह धारणा बग चुकी थी, कि सन्त की कही बात
कभी गलत नहीं होती है। उनीं पांच में स्कूल अनायास थी या, जिसमें
कुछ दिनों से बिल्कुल थी दन नहीं आया था, वहाँ के बच्चे भी जल व
बर्बाद के लिए तरस गए थे। ऐसी स्थिति में आश्रम के अधिक सन्त के
पास पहुंचे और किसी की —

‘ते नपेषुनि! आप ने आज तक जो भी कहा है, वह सत्य-शुआ है,
परन्तु मैं आप से एक शुरु बोलने की जरूरत करता हूँ, जार बस इतना
कह द, कि ताज दिन बद्ध प्रलय होने वाली है।’ ‘जह जैसे संघर्ष है,
यह तो कह ही रहा।’ मैं नाना हूँ पूर्णवर। परन्तु जापक एक शुरु से
अनायासम के कह बच्चों ने नीचन मिल सकता।

मेरे बाठ बोनने से बच्चों का बयान सम्बन्ध, परन्तु दिवि तुम्हें लगता
है, कि मेरे बाठ बोनने से बच्चों को जानन आदि मिल सकता है, तो
मुझे मनव बोनीकार है तूसेरे दिन सन्त ने किसी से कहा, कि ताज दिन
में ग्रन्त दोन बाले हैं। बाल जला की तरफ पर गत्व में फैल गई। सधी
नानने थे, कि सन्त की बाल होशी संघ तुम्ह है। किसी ने कहा ग्रन्त के
समय जल और बल गिर जाते हैं। तीसरे दिन सभी मंदिर के प्रांगण में
एक दोकर प्रायिका आरने लगे।

एक दिन पूर्व ही अनायासम का अध्यक्ष पुजारी से मिलकर सार्व
बाल बता रुका था। मंदिर के पुजारी ने योग्या की, कि यहि सबको
सम्मान ही दोना है, ता क्यों न बाल पुण्य कर ली बर। यह सुनकर लोग
अपन परां को दीड गए, जिसने जो पाया — जल, धन, वश, वस्त्र सभी
कुछ दब दिया, अनायासम में भी दिया। तीसरा दिन आय और चला
भी गया, प्रलय जैसी कोई घटना नहीं थी, परन्तु दान पुण्य करने से
ग्राम वासियों को एक अद्भुत आमन्द मिला, तृप्ति मिली जिसका कि
उन्होंने कभी स्वाद तक नहीं लगा था। उस दिन के बाद से बहा के
लोगों में प्रसिद्धन आ गया और लोगों ने अपनी कृपया थोड़ बा.
पराइति जिसन में छिपे त्वार को बे चख चुके थे। वास्तव में किसी अच्छे
करण के लिए बोला गया इन्हु भी कल्याणकर होता है।

वश मैं करा
कराल दुर्ग

कृष्ण के जीवन चरित का उदाहरण देते हुए सदगुलदेव ने इस गारणभित्र प्रवचन में शिष्यों को यह आह्वान किया है कि जन्म से कोई महान् नहीं होता, शिष्य बन कर गुल से शान प्राप्त कर वह महानता प्राप्त कर सकता है जिससे उसके जीवन का अर्थ ही सके और वह अपनी समर्थ्याओं को जीतने वाला बन सके। सदगुलदेव की ओजस्वी वाणी में एक विशिष्ट प्रवचन -

सहाकार्त्य रूपं सहितं सदेवं
क्रोधोऽमतो पूर्णं सदेव रूपं,
सत्योऽसतां पूर्णं सदेव तत्त्वं
एकोऽपि सूर्यं भगवान्
सदेवं

यह इलोक भगवान् कृष्ण के मुख से निकला एक इलोक है और भगवान् वे सभी व्यक्ति हैं जो साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करते हैं। मैं कृष्ण को भगवान् मानता हूँ, आप भी मानो। मगर भगवान् का तात्त्व यह है जिसमें पूर्ण जान और चेतना है वह भगवान् है। क्योंकि इसमें ऐंदर है तो यह ईश्वर है

और अगर है तो नहीं तो राक्षस है। कभी दोनों ही नहीं है तो उम मनुष्य है, सामान्य जीव है जो विचरण करते हैं और मर जाते हैं।

इस इलोक के माध्यम से मैं भगवान् कृष्ण का उपदेश दे रहा हूँ और भगवान् कृष्ण की व्याख्या कर रहा हूँ कि उनका व्यक्तित्व क्या था, क्योंकि भगवान् कहलाए। जितना दुःख उन्होंने देखा उतना तो आपने देखा ही नहीं। उनको जीवन में सुख जैसी चीज़ मिली ही नहीं। वे जेल में पैदा हुए, पिता वासुदेव एवं देवकी के गर्भ में पैदा हुए और विनाक वहाँ पैदा हुए। उनके साथ वे चार पटे भी नहीं रह सके। नंद-यशोदा के बड़े रहे, अपने माता-पिता के पास रह ही नहीं सके। जब वे कवल चार पटे के बीच तो उनका उठाकर वासुदेव ने यशोदा के घर पहुंचा दिया। मां का सुख क्या होता है, पिता का क्या सुख होता है उन्होंने देखा ही नहीं। यिन मां-बाप का मुत्र कैसा होता है वह भगवान् कृष्ण के लिए मैं आप रख नैं, और जेल में पैदा हुए। इसने बहा, दुःख तो कोई हो सकता नहीं कि मां-बाप थोड़ी पैदा हुए हों, चारों नरफ शरु हों। वहाँ वे पैदा हुए और यशोदा के घर में जब वे छःमहीने के बालक थे तो पूर्णा ने आकर उन्हें मारने के निए प्रयोग किया कि किसी तरह इसे समाप्त कर दें और दूध में जहर मिलाकर समाप्त करने का प्रयत्न किया-केवल छः महीने के बालक को। वह जिया रह गए तो बकासुर आया, बकासुर आया कई राक्षस आए, कालिया नाग आया और प्रत्येक ने एक ही काम किया कि इन व्यक्ति का मिठा देना है, समाप्त कर देना है।

और उसके बाद यशोदा गए तो जरानंद ने प्रथल किया कि इसको समाप्त कर देना है, जिस रखना तो नहीं है उसको क्योंकि यह व्यक्ति कुछ ऐसा है जो बहुत ताकतवाल है, क्षमतावाल है, एक व्यक्ति अद्वारह अक्षीणी सेना के बराबर है।

और इस इलोक में यही बताया कि सूर्य एक ही बहुत है। भगवान् कृष्ण के जीवन में इन्हें दुःख वे भगव वे उनसे परासन नहीं हुए। उन्होंने एक बस, निश्चय कर लिया कि मुझे आपने जीवन में कुछ ऐसा करके जाना है कि

आने वाली पीड़ियों मुझे याद रख सके। ऐसा किया उन्होंने। कृष्ण हमारी तुम्हारी तरह है या मगर उच्चने कहा कि मैं कुछ ऐसा गंथ लिखूँगा कि आने वाली पीड़ियों याद रखेंगी। वाहे एक शब्द ही लिखूँगा। और गीता जैसा गंथ अपने आप में अद्वितीय है। यों तो धेराहु रस्तिना भी हो, अष्टावक्र गीताएं तो यैकड़ी लोगों ने लिखी हैं। गीता का मतलब है गिरलको बहुत अच्छी तरह ने गा सके।

गीतते सह गीता॥

जिसको बहुत अच्छी तरह गा सके, पढ़ सके, बह गीता है। गीता पूर्ण रूप से गंथ है, उसको गाने पर जो पूर्ण रूप से आनंद आता है वह अपने आप में अंदर उतर जाता है। हमने गीता को पढ़ा है गाया नहीं है। और गीता का अर्थ है गायत। गीता कृष्ण ने लिखी, अष्टावक्र ने लिखी, धेराहु ने लिखी। कम से कम पचास कवियोंने गीताएं लिखी, कोई एक कवि ने ही गीता नहीं लिखी और सब में एक शुद्धर व्याख्या की गई है। गीता में कार्योग की व्याख्या है, कि कार्य करते रहना चाहिए और जो कुछ बने अद्वितीय बनें। एक ही उद्देश्य है कृष्ण का कि कोरब पांडव लड़े तो लड़े, मुझे अपने जीवन में सफलता पानी है। यहां मधुरा में काय नहीं चल रहा है तो धारका जाकर बस जाऊँगा। मगर करन्जा वह जो अपने आप में अद्वितीय होगा।

और श्रीकृष्ण सांदीपन आश्रम में गए, क्यों गए सांदीपन आश्रम में? क्या बीच में कोई ऋषि मुनि नहीं थे?

गुरु वहां मिलेंगे जहां जान होगा। जहां गुरु पूर्ण तंत्र की व्याख्या करके समझाएँ, वह जान होगा। ऐसा ही जान में आपको दे रहा है जो आपने पहली बार सुना होगा। आप अपनी पिछली पांच पीड़ियों से जाकर पूछ लौजिए या कोई जंश नाकर दिखा दीजिए कि गुरुजी जो प्रयोग आपने करता वह इसमें लिखा हुआ है। मैं नेयर हूँ।

और सांदीपन आश्रम में जाकर कृष्ण ने गुरु को प्रणाम किया और कहा - मैं यदु कुल का एक बालक हूँ और आपके पास केवल जान के लिए आया हूँ और ऐसा जान चाहता हूँ जो आपने आप में अन्यंत विलक्षण हो। ऐसा जान चाहता हूँ जिसकी कोई कीमत नहीं लगा सके, जिसकी तुलना नहीं हो, जो अमूल्य हो।

सांदीपन ऋषि उस समय की उच्चकौटि के शान्त थे तंत्र के भी, मत्र के भी, योग के भी, दर्शन के भी, मीमांसा के भी। ऋषि तो उस समय और भी बहुत थे। आप देखे तो, रघु के गुरु भी वशिष्ठ थे और राम के गुरु भी वशिष्ठ थे। उनके पूर्व लव-कृष्ण हुए तो उनके भी गुरु वशिष्ठ ही थे। एक गुरु इनना

पीढ़ियां देख सका जबौदे और राजा मरते गए क्योंकि उनके प्राप्त तपस्या का अंग था, सबकल भी, शमन भी।
कृष्ण ने रामदीपन में कहा मैं कछु बनना चाहता हूँ, जीवन में हाना चाहता हूँ, प्रसा जान भज्जे चाहिए, ऐसा
किसी गिटा जीवन नीमे में लोहे नहीं है। ऐसा जीवन में चाहता ही नहीं है।

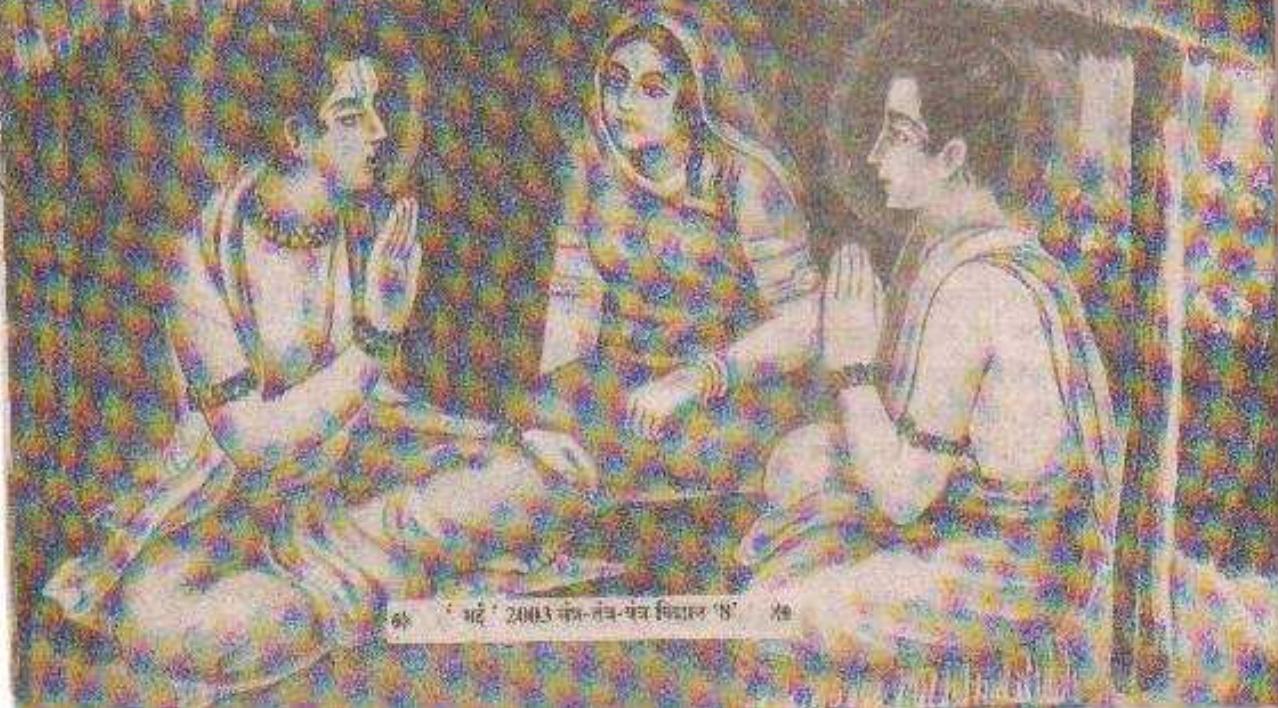
और गुरु राधीजन ने कहा अधिक जान देंगा, तुमने मांगा है और छानी दूर से आए हो। और तुम गीरहला ही
चाहने हो तो मैं भिड़ाऊंगा। मगर उझों तो तुम जगन में जाओ और लबड़ियों का दूकर लाजा। राजा का बेटा,
राजा के पर पैदा हुआ और बंगल में लबड़ियों का टने जा रहा है। आप कल्पना की जाएँ।

गजर कृष्ण ने कहा - मैंही कह लना है मैं जनूमा तो जटिलीप बर्जन। लकड़ियों तो एक दिन बया वस नहल
कटाग्नी तो भी काढ़ुंगा, गाय चरने भेजेंगा तो नाय चरने जाऊंगा। यह इनिहाया तो आपके स्वामने है। मैं बता रख
दूँ कि कृष्ण कह चरित इनमा सरल नहीं है। आपने तो वस गा लिया।

मैथा में जही माल्लन खायो
भेर भयो ज़इन के पीछे,
मथुर भेरही पठायो।
मैथा में जही माल्लन खायो।

और आप खुश हो गए कि मगजान कृष्ण बहुत प्रेम करते थे, महसीन बहने वे, आनंद ही आनंद है।
अपन उस लव्यकि के चरित्र ने देखिए कि कैमे एक एक पांग को द्युन और पसीने से सीधे बर किए उस चराह
पड़ता है जहाँ हम उनके स्मरण करते हैं। और उससे लकड़िया कटवाकर गुरु वेष्वना चाहता है कि उसमें ताकत
और क्षमता बया है, गुरु में कितनी श्रद्धा और विश्वारा है। मैं अगर आपको शिष्यों को तीन दिन की साधना
देता हूँ कि जारी और दीपक ही नीषक नलाकर साधना में बैठता है तो मैं देखना चाहता हूँ कि वह आप इनसी
आंच में लेठ सकते हैं। वह प्रवालि तप कहलाएँगा। आंच होनी तो तेजस्विता आज्ञी, उन शीषकों में आंच होना
होगी, उर आंच के लिए आप पक गए हों या नहीं गुज़े वह देखना है। जनना नहीं है, मगर आपका शरीर पर
कुदन के समान तम होना है, सामने के समान चमकने वाला जनना चाहिए। इनसिंग गुरु पैदा विघान वे सकता
है।

तो कृष्ण ने लकड़िया कही,



गाह चराई, जात्रा में रोज घासू लिकाला और स्वयं उपने हाथ से खाना बनवात के सांकेतिक और उनकी पत्नी को छिलाश कर्यालय उन्होंने निपचय किया था कि मुझे कुछ प्राप्त करना है और उन्होंने कड़ प्रकार की तभ विद्या सीखी, कड़ मत्र विद्याएं सीखी, योग सीखा और जो सांकेतिक का पापा गा वह सलकठ सीखा।

आप तो मेरे पास आते हैं मानसिंहपुर से, जिस्तर से ऐसा न
मगर कृष्ण इनी दूर से पैदल चलकर यहाँ के पास पहुँचा क्योंकि
उस समय देव और दाम नहीं थीं। मगर एक अद्वितीय लालसा था
कि वह जान प्राप्त कर जो हमारे शृणुवों को धराहर है, जो
अद्वितीय है।

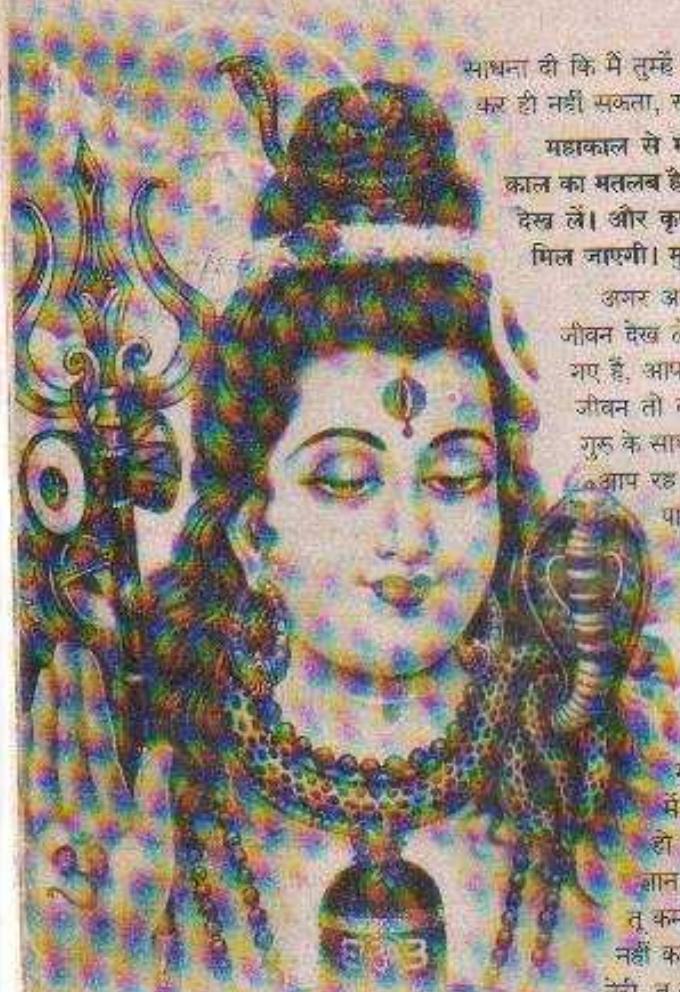
और उसने बाबापन सेकहा कि वह जान दीजिए कि मैं आकाश गमन करता पहुँच नो अकाशगमन कर सकूँ, जल गमन करना पहुँच ताकूल गमन कर सकूँ और ताकूल क्षमता ऐसी आ सके कि उन्हाँने लाला हजार, पोर्टियां मुझे न्यारग रखा। सके, मैं हूँ तो जीवन हूँ, बस मैं इन्हाँ दी चाहाँ हूँ आप से। आप मुझे वित्तना ही कष्ट है, वह मैं गोपने के लिए तैयार हूँ। एक ही उद्देश्य है मेरा, उस लक्ष्य को ही पाल करना चाहाँ है।

और जल्दी कुछ ज्ञान प्राप्त करने, मधुमत्ता भाग सापेख तो देखा कि शत्रु ही शत्रु है। जरासंघ और सद्गुरु शत्रु रख का एक ही चिंतन किये विश्वी ब्रह्मार इस लक्षित का वध हो जाए। उन्होंने अपने आपको हर समय संवेदन रखा और उसके बाद मन्त्रवरी में कृष्ण को मधुरा वो छोड़ना पड़ा। यदि वह प्रेमी होता और प्रेम में ही मग्न होता तो लृकामन भला जाता। मधुरा और वृद्धकर्म मैं-लड़ किलोग्राम की दूरी है। मगर जीवन का यह उद्देश्य महीना या जीवन का लक्ष्य एक था कि मैं हूं तो मैं हूं अजी कोई नहीं आ सकता।

कोई भी व्यक्ति में जीवन में आम नहीं आ सकता। या तो मुझे में खुद पौरुष होगा तो आम आप्सा और दूसरा कोई मेरे जीवन में सहायक नहीं बन सकता।

और कृष्ण मथुरा से निकलकर द्वारका चल जये और द्वारका जाकर उन भीतों के बावजूद, आदिवासीयों के बीच राज्य स्थापित किया। ऊप उनके कविता को देखिए और नहामारत युद्ध हुआ तो एक तरफ विनाश प्रच पालु, एक तरफ कड़ाइ अधीरी सेना को एक दुष्प्रभाव दृश्यासन, दोषानाम, अज्ञात्वा कीर सधी का एक छी विनाश कि किस प्रकार उन पाँचों को अमनकर। मरु कृष्ण वहा भी युद्ध से बचकर हुए उनके बीच में और उन्हें कड़ा विनाश के साथ हूं सत्य के साथ हूं मरुर मैं साथ बोई शब्द नहीं उड़ाऊना।

कृष्ण के पास
वह जान था कि
सांकेतिक ने दिया
सांकेतिक ने उन्हें
महाकाल



साधना दी कि मैं तुम्हें ऐसा बनाना चाहता हूँ कि कोई तुलसा कुछ अद्वितीय ही नहीं सकता, समझ ही नहीं है, मृत्यु ने बहुत दूर की बात है।

महाकाल से महाकाली बनी है जिसको इस याद करते हैं। और काल का मतलब है कि पूर्व जीवन, वर्तमान जीवन और आगे का जीवन देख लें। और कृष्ण ने देख लिया कि इस प्रकार पांडवों को विजय मिल जाएगी। मुझे इन्हें सफलता देनी है।

उग्र आप भी ऐसी क्षमता प्राप्त कर लें और अपना मिठाना जीवन देख लें तो आपको बहा आश्चर्य होगा कि आप वहाँ फस गए हैं, आपका जीवन कैसे दुखी और दरिद्र हो गया है। आपका जीवन तो बहुत शानदार था, कैसे उलझनों में फस गया। इस गुरु के साथ सन्याली जीवन में या, यहाँ कहाँ कहाँ फंस गया हूँ। और आप रह नहीं पाएंगे यहाँ एक क्षण भी अपने घर में नहीं रह पाएंगे। और वह दिव्य शक्ति भी गुरु आपको दे सकता

है, मैं आपको दे सकता हूँ और वह साधना भी कर सकता हूँ जिसके माध्यम से वह सभव हो सके, आप पीछे का सब देख सकें। वह बड़ी ही तेजस्वी साधना भी जो कृष्ण को सांदीपन ने संपन्न कराई और अद्वारह दिन तक युद्ध हुआ, भारत पाकिस्तान का युद्ध तो केवल चार दिन हुआ और हजारों लोग मर गए। वह अद्वारह यिस तक युद्ध हुआ और उस युद्ध में इनके कोलाहल में जहाँ तलबार, तीर, भाले चल रहे हो उनके बीच कृष्ण ने अर्जुन को यथ पर खड़ करके उसे जीत का, जीता का उपदेश दिया। कृष्ण ने अर्जुन से कहा - तू कमवीर बन, तू कायर मत बन, बुजदिल मत बन। तू कुछ नहीं कर सकेगा बुजदिल बन कर, जिसी बरबाद हो जाएगी तू, तू कर्मठ बन, मैं तेरे साथ यथ पर खड़ा हूँ तेरा सारथी बन कर, मैं तेरा मिथ हूँ, मैं तेरा विजय किनारा हूँ। इनका दूर ध्वनिमूर्ति कि नहाकालन पांच मील दूर गिर आप वह साधना मुझमें है। वह साधना मैं कर चुका हूँ।

और उधर दूर्योधन और दशारथ ने सोचा कि कृष्ण अकेला करेगा भी क्या?

और कृष्ण ने वह प्रतिज्ञा भी कर ली कि मैं शस्त्र नहीं उठाऊंगा। कृष्ण ने कहा- मेरा जीवन क्षमतावान जनना चाहिए, मैं पीसत्वावान बनूँ, उर छालत में बनूँ। पुढ़ हो रख है तो हो, सुख को चिंता नहीं है। जीवन उनका संघर्ष पूर्ण था। मगर वह उस संघर्ष में विचलित नहीं हुआ कोई उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि एकांत कमरा होना चाहिए, गुलाब के फूल दिले होने चाहिए सामने कलम अच्छी होनी चाहिए, दवान होनी चाहिए। उस कोलाहल में भी उसके अंदर से जो कुछ भी निकला पूर्ण ज्ञानाय निकला और वह जीता अपने आप में महाकाल जान जीता कहलाई। आप उसे भगवद् जीता कहते हैं, मैं कहता हूँ कि वह महाकाल जीता है।

जिस मैंने पढ़ले कहा एक नहीं पचास प्रकार की जीता है। आपने केवल एक जीता का नाम सुना है। अष्टावक्र ने जो जीता लिखी वह इस जीता से तो करोड़ मुना अच्छी, यम ने जो जीता लिखी है वह भी इससे करोड़ मुना अच्छी जीता है। यह जीता भी अपने आप में उच्ची जीता है क्योंकि इसमें कर्मयोग की व्याख्या के साथ-साथ महाकाल का विवेचन है। इसलिए महाकाल जीता इसका नाम है।

महाकाली जिसे दुर्गा कहते हैं उसी महाकाल से निकली शक्ति है भीम
काली की साधना करने से काल जान प्राप्त हो सकता है। रामकृष्ण परमहंस ने
काली की साधना की तो वह अद्वितीय योगी बन गया। जिस-जिस ने भी यह
साधना की वह अद्वितीय बन गया और उससे भी उच्च कोटि की साधना
महाकाल साधना है। महाकाल का मतलब है कि मृत्यु हमारे पीछे के नीचे
रीढ़ी जाए। मृत्यु या काल हमारे नीचे हो, काल को हम देख सके कि कहाँ
सफलता मिल सकती है, मैं जीवन में किस क्षेत्र में बढ़ूँ।
आप जीवन में यह धमता प्राप्त करें और जीवन में बढ़ें,
अपने परिवार के साथ बढ़ें। मैं कोई आपको परिवार छोड़ने
की सलाह नहीं दे रहा हूँ। अपने व्यापार के साथ बढ़ें,
अपनी नौकरी के साथ बढ़ें, मगर आप बढ़ जैस्तर, बनें तो
अद्वितीय बनें, ऐसे बनें कि मरण के हड्डार वर्ज बाहर भा
आपका नाम रहे, आपका नाम मिटे नहीं, भीर मिट गया तो
जीवन भी क्या हुआ आपका? फिर मैं पैदा ही क्यों हुआ
और मैं गुरु बनकर आपके बीच आया हूँ क्यों, फिर
फायदा भी क्या हुआ मेरा। हनना चौखुने, विल्लासे दा
बोलने से लाभ भी क्या हुआ? मैं इसलिए प्रवचन नहीं
कर रहा हूँ कि आपको कोई भाषण दूँ।

मैं तो आपका कह रहा हूँ कि आप ओं वह चौथा
प्राप्त हो जिससे आप कृष्ण के समान अद्वितीय युग
पुरुष बन सकें। वह कृष्ण जो इतने दुःख झेलने के बाद,
इतने कष्ट झेलने के बाद भी ब्रह्मपुर से या जन्म से
लगाकर के उस महाभारत के युद्ध तक भी अद्वितीय रहा
रहा, उसने उन पांच लोगों को जिनवा दिया। अद्वितीय
अक्षीणी सेना के भी विरुद्ध। अडायह लाल लोगों के
मामने पांच लोगों को जिनवा दिया। इसलिए जिसवा
दिया क्योंकि उनके पास वह साधन थी महाकाल का।
जिसको आप सुदर्शन चक्र कहते हैं वह महाकाल चक्र
है। आपने उनका नाम सुदर्शन चक्र रख दिया। सुदर्शन
का अर्थ है बहुत सुंदर विद्वने वाला, वह घृणा सुए बहुत
सुंदर उत्तराधि देता है इसलिए उस सुदर्शन कह दिया।
मूल रूप से वह महाकाल यक्ष है जो अपने आप खेली
भी शत्रु को समाप्त कर सके, कोई
शत्रु रहे ही नहीं काल रहे ही
नहीं, काल अपने आपमें
समाप्त हो जाए।

ऐसी ऋमता
प्राप्त होगी तभी
आप साधनाप्त
समझ कर पाएंगे,
ऐसी ऋमता होगी

तभी आप रोगों को समाप्त कर पाएंगे। रोग जीवन से रह जाएं फिर मरलब ही क्या हुआ। कष्ट रह जए, बाधाएं रह जाएं, अद्विने रह जाएं और आप लमजोर ही रह जाएं, मन ही बसेजोर हो गया, या बुझ गया तो जीवन का अर्थ ही क्या। इन सब पर विजय प्राप्त करने की साथसा है मठाकाल साधना।

और यितना दुख कृष्ण ने अपने जीवन में केखा उतना दुख तो आपको ही नहीं। उसके जैसा तो एक भी चरित्र आपके सामने नहीं है। और उन्होंने दौदों को विजय दिलाकर के द्वारका पर राज्य किया। एक भी राजा नहीं बचा, कृष्ण के सामने खड़ा ही सके देखा बचा तो नहीं। और ऐसा शंथ निखा और अपना जीवन चरित्र ऐसा बनाया कि हम आज भी कृष्ण को शाद कर रहे हैं। ऐसा जीवन बनाया जिसकी आज भी तुलना नहीं हो सकती। ६४ कलाओं से युक्त और कोई ६४ कलाओं से दूसरा व्यक्तिन्य नहीं बन सका। और वह व्यक्ति भी वैसा ही था जैसे आप हैं, मैं हूँ। इतना दुख तो आपने भी नहीं देखा जन्म से लकार कर उभी तक जितना उसने हेत्ता। फिर भी वह विचलित नहीं हुआ और हमेशा विजय हुआ। वह उसका जीवन चरित्र बता रहा हूँ, इतिहास बता रहा है।

वह एक सामान्य व्यक्ति जो अपनी माँ की गोद में खेला नहीं, दूसरों के घर में जिसका पालन पोषण हुआ वह अपने जाकर ऐसा युग प्रस्तु बन गया, इतिहास प्रस्तु बन गया। क्या आप इतिहास पुरुष नहीं बन सकते? क्या बरस कापर एस्स बनेंगे, ब्रजदिल बनेंगे, क्या काल आप पर हाथी हो जाएंगा, मृत्यु आप पर हाथी हो जाएंगे, ब्रह्मपा आजाएंगा, बुद्धबन्धा आजाएंगी, समाप्त हो जाएंगे, लक्षण्ये पर जाकर रहो जाएंगे?

कौस याद करेंगा आपको? और अगर याद हो नहीं किया तो फिर पैल हो क्यों हुए, आप और मेरे शिष्य बने हो क्यों, मुझे लज्जित किया हो क्यों? फायद में क्या हुआ जीवन क?

मैं रेज देलसा हूँ कि कोई मरा और अमरान में जाकर उसे जलाने हैं, 'राम नाम सन्त्व है' बोल देते हैं। राम ना गन्य है ही, मैंने कब कहा राम आज नक शूठ बोलते हैं, नगर वह जो मरा उसने जीवन में क्या किया?

और आप हाय धोकर के, ननान करके दुकान पर बैठ गए। और तुम दो मिनट पहले देख रहे हो इस गरीर का कार्ड पर्याप्त नहीं है,

उपर्योग नहीं और आप ब्रापस माकर उसी व्यापार में फैल जाने हैं। मेरी जात कड़वी हो सकती है, मगर मैं तो आपको जानी में जान नार कर जात करूँगा, बुरा लगे, अच्छा लगे आपको मर्जी है, मुझे इस जात की चिंता है ही नहीं। मेरा तो प्रथमत्व है कि आप वह जान प्राप्त कर सकें, महाकाल साधना को समझ सकें।

कृष्ण के चक्र की महाकाल वज्र कहा गया, वह सुदर्शन चक्र नहीं था, वह तो दशन युक्त या इसलिए हमने सुदर्शन चक्र कहा। वह किसी व्यक्ति को कहे कि बहुत सुदर्शन पुरुष है तो इसका अर्थ है बहुत सुखर है, देखते ही नुसिं हो जाती है। मगर वह चक्र अपने आप में महाकाल अज्ञ था, जहाँ गया वहाँ वध कर दिया, एक भी शत्रु को छोड़ा ही नहीं चाहे द्रोण हो, चाहे दुर्योधन हो, चाहे दुश्मासन हो, सभी को समाप्त कर दिया, रहने हो नहीं दिया एक भी शत्रु को।

कृष्ण ने कहा - मैं रहगां तो जीवन रहेगा, मैं नहीं हूँ, तो जीवन का मतलब नहीं है, जीवन का कोई अर्थ नहीं है। और ऐसा मुझे जीवन चाहिए कि आने वाली पीढ़ियां मुझे याद रख सकें। और सांदीपन ने कृष्ण से कहा - यह सिद्धि मैं तुम्हें दूँगा।

कृष्ण ने कहा - और कोई सिद्धि मुझे चाहिए भी नहीं और उसके लिए आप लकड़िया काटने के लिए भेजें तो लकड़ियां काट लूँगा, पास काटने के लिए भेजें तो घास काट लूँगा, जो आप कहें वह मैं करूँगा लेकिन मुझे वह महाकाल ज्ञान दीजिए जो अपने आप में युगों-युगों से है और लुम है।

वह जान सांदीपन के समय तक लुम हो गया था। केवल सांदीपन युक्त थे अंकेले जो हम महाकाल ज्ञान को जानते थे नहीं तो कृष्ण यद्युरा से इतनी दूर उनके पास नहीं जाते। कृष्ण को पता था कि यह ज्ञान वहाँ से प्राप्त हो सकता है, किसी और वजह से प्राप्त नहीं हो सकता। और अगर यह ज्ञान प्राप्त नहीं किया तो मेरे जीवन की उन्नति क्या रहेगी, आने वाली पीढ़ियां मुझ कैसे याद रख सकेंगी।

और मैं भी आपसे पूछ रहा हूँ कि आने वाली पीढ़िया आपको कैसे याद रख सकेंगी, कौन सी युक्ति बनेगी?

और कोई बेटों की वजह से याद रहना ही नहीं। कृष्ण के बेटों की वजह से कृष्ण का नाम जिदा नहीं है। दशरथ की वजह से राम जिदा नहीं है। ब्रुद के पिता की वजह से ब्रुद जिदा नहीं हैं। महाकावीर के पिता की वजह से महाकावीर जिदा नहीं हैं। इसी प्रकार राम, ब्रुद, महाकावीर अपने बेटों वी वजह से जिदा नहीं हैं। बेटों और पोतों की वजह से आप जिदा नहीं रह सकते। वह तो एक गृहस्थ थर्म है, कर्तव्य है वह चलेगा। पति है या पत्नी है, वह है, मगर आपका व्यक्तित्व आपकी पर्याप्तता, आपका ज्ञान, काल पर प्रढार करने की समता आपसे

कहां है? आने वाली पांच हजार पीढ़ियां आपको कैसे याद रखेंगी? और मैं चाहता हूँ कि भेरा प्रत्येक शिष्य पांच हजार बधौं तक याद रहे, प्रत्येक व्यक्ति उसे याद करे, ऐसा चाहता हूँ मैं।

कई बार गुड़ासे पूछा गया कि कृष्ण मथुरा से ठेठ सांविपन जान्ने उल्जन क्यों चाहे? क्या जरूरत थी वहा जाने की? कई शिष्यों ने यह प्रश्न किया। मैंने कहा - ठीक है गए होंगे, वहां पहुँचना दोगा उनको।

गुणवास्तविकता यह थी कि कृष्ण को वह जान सांविपन ही दे सकते थे इसलिए उन्होंने दूर चल कर जाना पहा कृष्ण को। कृष्ण का कोई और उद्देश्य था ही नहीं। एक ही लक्ष्य था कि कर्म करना है मुझे और उस जान को प्राप्त करना है जिसके माध्यम से उहाँ मैं पांच साल जिदा रहे या पचास साल भिन्न रहे मगर पचास हजार साल तक लोग मुझे भूज नहीं सके। जिखु ना अभिवृचनीय लिखूँ। जिसका कोई गुवाहला नहीं हो, पुढ़ कर्ता हो एसा करूँ कि कोई देर सामने टिक नहीं सके।

और कोई शबू कृष्ण के सामने टिक नहीं सका, मौत उसके सामने आ नहीं सका, मृत्यु उसके ऊपर हावी नहीं हो सकी। और इसलिए नहीं हो सकी क्योंकि उसने पूर्णता से महाकाल साधना किया की।

और हसी महाकाल से महाकाली स्वरूप पेहा हुआ। और यदि आप महाकाली को देखें तो उसके पैर के नीचे, पृष्ठ दर्शा हुआ है। उसने काल को दबा रखा है। काल उसके ऊपर हावी नहीं हो सकता। ऐसे से पहार कलके उसे दबा रखा है। आप महाकाली के स्वरूप को देख लाइए। महाकाल से महाकाली का स्वरूप बना। उसका एक छाता है जगदंबा। उसमें आमता है। मगर महाकाल तो पृष्ठ काल को अपनी आखो में बचाने की किया है, ताकत है, क्षमता है, पीछे है अपने अपर्यामेनेगस्तिना है और वह क्षमता है कि जब तक जीवित रहना चाहे रहे, और गम्भीर हो नहीं।

आप आते हैं और कहते हैं कि मुकदमा चल रहा है। मुकदमा चल रहा है क्योंकि आप वह साधना प्राप्त ही नहीं कर पाए। किसी गुरु ने आपको वह जान नहीं दिया। और आज तक मैंने भी नहीं दिया। मैं भी इस बात का स्वीकार करता हूँ। मगर इसलिए नहीं दिया क्योंकि आपमें पश्चिपक्षता आई ही नहीं आप में ताकत क्षमता नहीं ही कि उस साधना को लेर सको। मैं कह कि आप इतने जिन मेर पास रहीं आप नहीं रह पाए हैं, मैं आपकी परीक्षा लूँ, आप परीक्षा नहीं द पाए हैं। मैं कह रहा हूँ कि यह जीवन का श्रेष्ठतम प्रयोग है मगर आप नहीं कर पाएगा। यह न्यूनता आपकी है मेरी न्यूनता नहीं है इसमें। मैं जान देने का नियम हूँ, मगर मैं इतना जान दूँगा तेजस्विता दूँगा। आप आनंदसात नहीं कर पाएगे क्योंकि यह कियि अपने आप में बहुत भेंचदा और कठून है।

और कृष्ण में सांविपन से कोई दीव और नहीं सीखी। सांविपन

आश्रम में रहे, पूरे न्यायह वर्ष तक रहे, एक दो दिन नहीं रहे, पूरे न्यायह वर्ष रहे, साढ़े दस वर्ष वे बस गए चरते रहे, लकड़िया काट कर लाते रहे। केवल छः मर्हीने सांदीपन ने वह विद्या सिखाई। और संसार में उस समय केवल सांदीपन थे जो महाकाल जान वे लकते थे। और उसके बाद उन्होंने कृष्ण से कहा - अब तर्हे कोइ विजित नहीं कर सकता, हरा नहीं सकता, तुम्हे - जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, कर्म के क्षेत्र में भी, जान के क्षेत्र में भी, योरप वे क्षेत्र में भी और सुन्दरता के क्षेत्र में भी।

कृष्ण के जैसा कोई सुंदर बना ही नहीं, आज भी उन्हे देखते हैं तो उनका रूप अपने आप में अवशुन दिखाई देता है। आज भी वो सुदर्शन चक्र लेकर लड़े होते हैं तो आंखों में वह भाव पैदा हो जाता है, आज भी वीर शोद्धा की तरह खड़े होते हैं तो देखने ही बनते हैं, आज भी वो प्रेम करते हैं तो लग जाता है कि इन से बड़ा प्रेम करने वाला कोई है ही नहीं। आज भी ऋषि में उन्नात हो जाते हैं तो द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृष्णचार्य अपने आप में अस्थशन लग जाते हैं। और जान देते हैं तो श्रीमद्भगवत् गीता जैसा देते हैं।

आज भी वे जीवित हैं, जायत हैं, आज भी धृते घड़ियाल उनके मंत्रियों में बनते हैं, आज भी हम उन्हें प्रगति बानते हैं वर्गोंकि उन्होंने अपना पौरुष जीवित रखा। उन्होंने कहा - मुझे यही जान प्राप्त करना है। इसी जान की इच्छा उन्होंने रखी, और प्रतीक्षा की और साढ़े दस साल तक कोई जान नहीं लिया, कोई नेत्र नहीं किया, कोई भव नहीं लिया, कोई योग नहीं लिया, कोई वर्णन मीमांसा नहीं ली। उन्होंने कहा - मुझे कुछ सीखना भी नहीं है अगर एक ही चीज़ में सीख लूँगा तो बहुत कुछ प्राप्त हो जाएगा। मेरा जीवन संवर जाएगा, पूरा जीवन नहीं आने वाले दस हजार साल संवर जाएगे।

वह काल जान संत्र बर्ग था, काल जान सिंहि बवा थी? कहीं आपने पढ़ा? कृष्ण ने साढ़े दस साल तक एक ही चीज़ की रट क्यों रखी? क्या आपको पता है?, और जब उसके गुरु के लड़के की मृत्यु हो गई तो उसके प्राण बापस लाकर उसे जीवित कैसे कर दिया?

जो गुरु नहीं कर सका उसे शिष्य ने बरके दिखा दिया क्योंकि गुरु ने पूर्ण काल जान दीक्षा दी, सफलता दी, और यह आजीवाद दिया कि तुम अविजित ही रहोगे, हार नहीं सकते किसी भी क्षेत्र में।

और इस साधना के माध्यम से ऐसी स्थिति प्राप्त होती ही है। पूर्ण विग्रह प्राप्त होती ही है, जर क्षेत्र में और नमहों सामने लट्ठ क्षेत्र है - गृहस्थ एक क्षेत्र है, वह आपको रखना पड़ेगा, ग्रन्त आप बही चाहे तो भी पैदा होते रहेंगे, नीकी आपको करनी ही पड़ेगी, व्यापार आपको करना ही पड़ेगा, बेटे आपके पांडा होते ही रहेंगे, समस्याएं आपकी जिनकी ही आती ही रहेंगी, कठिनाइयाँ और दुर्भिक्ष आपके जीवन में

जाते हो रहेंगे, मगर हमाने आप खुब ही पिछ कर समाप्त होते जा रहे हैं। और आप समाप्त हो ही जाएंगे तो पहले रहेगा ही क्या? फिर क्या चीज़ रहेगी?

पत्नी ज्यादा से ज्यादा उँच महोने आसू लड़ाई कि गेरे पति थे मर गए बेचारे। साल भर बाद वह कापस जीत गाने लग जाएगी। बेटे बस आड़ के पक्ष में कहेंगे, मेरे पिताजी थे, बहुत भले थे, स्वर्गवासी हो गए, ब्राह्मणों का भोजन करा दी।

होना थह है। सत्य थह है। आप इसको चाहे कितना ही अमर में समझे यह माया है। सत्य यह है कि आप जीतें रहें, लाभदात रहें, जीतन्य रहें, पांच हजार, दस हजार साल तक लोग आपको याद रखें।

आपका निहावा घर सलवाती स्थापित हो जाए, शंथ निरंतर तो अद्वितीय शंथ लिख दें, जो जीतना ही वह अद्वितीय जीतना बन जाए, आपसे वही लेखन प्रतिभा है, गायन प्रतिभा है। जायन करे तो लोग मंत्र मूर्ध हो जाएं।

कृष्ण बांधुरी बनाने तो सभी पशु पक्षी आकर खड़े हो जाते थे। गाएं दूर-दूर होती तो पास आकर खड़ी हो जाती थी, मधूर आकर नाचने लग जाने थे। कृष्ण इतनी सुंदर रास लीना करने वाला कि ऐसी रास लीला करने वाला पैदा ही नहीं हआ। आप बताएं कि किस क्षेत्र में कृष्ण हारे। गृहरथ में हारे? युद्ध में हारे? जान में हारे? गीता जैसा उथ लिखा, उसमें हारे? ऐसे में हारे? शत्रुओं का संहार करने में हारे? कहा वे हारे?

हारे ही नहीं और इसलिए नहीं हारे कि उन्होंने काल पर पूर्ण विजय प्राप्त की। और काल पर पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए उन्होंने गांदीपन को चुना और कि पूरे गारुदवर्ष में नहीं पूरे संसार में केवल एक ऋषि था, जिसे काल जान पूर्णता से जान था। कितना तेजस्वी मंत्र ज्ञान होगा कि उस सामान्य व्यक्ति को, एक जर्दे को, एक धून के कण को आकाश में उठा दिया। एक मास्तुको व्यक्ति निचने दुख ही युख देखा था, सूख की कल्पना ही नहीं की थी उम्मीद भी नहीं की थी, उसे मानूम ही नहीं था कि महाभारत युद्ध में मरा नाम होगा। और उस युद्ध में पांच भी उनको प्रणाम कर रहे थे, कौरव भी प्रणाम कर रहे थे। दोषाचार्य भी प्रणाम कर रहे थे, भीष्म भी प्रणाम कर रहे थे। पांच भी कहते कृष्ण मेरे हैं, कौरव भी कहते कृष्ण मेरे हैं।

और कृष्ण कह रहे थे कि मेरा कुछ नहीं केवल पसन्नेलिटी मेरी है, व्यक्तित्व मेरा है, मुझे कुछ काम करना है, ऐसा काम करना है जो और कर नहीं लेके। शेर के समान दहाड़ना है तो शेर के समान दहाड़ना है। कृष्ण ने अपने वीरस्व को बनाए रखा, प्रबलता वाले बनाए रखा, वह उसके जीवन का गुण था।

कृष्ण से हमें यह शिखा नहीं लेनी है कि वे मगवान् थे। वे मगवान् बने किसे, वह जानना है। उन्होंने एक ही उपवेश अर्जुन को दिया

“कर्मण्ये दाविकारस्ते मा फलेषु
कर्तावन्”

जो कुछ होगा देखा जाएगा, अर्जुन वस कर्म कर दू। जो तुझे समझा रहा हूँ वह तू कर।

मैं वही दोहरा नहा हूँ कि तुम कल की खिता भत करो, कब करने रहो, निम्मवारो मेरे
हैं मैं स्पष्ट रखवाला हूँ, जो करना है मैं अपने आप करना रहूँगा।

और क्या आप इन्हीं लीकण साधना, छँ मरीजे को साधना कर लकने हैं?
और जीवन की श्रेष्ठतम दीक्षा और साधना यही है और अगर गुरु ने यही
नहीं दी तो जीवन को अर्थ ही क्या? फिर आप नृत्यनय बनेंगे कैसे?

कृष्ण जैसा नृत्य करने वाला कोई नहीं था, कृष्ण जैसा यात्रा
लीला करने वाला कोई नहीं था। कृष्ण जैसा प्रेम करने वाला कोई
नहीं था, कृष्ण जैसा योद्धा पैदा नहीं हुआ। कृष्ण जैसी जीता
लिखने वाला पैदा नहीं हुआ।

और आपका नाम भी अगर कन्हैयालाल है, तो
कन्हैयालाल है और भूये मर रहे हैं आप। कृष्ण या कन्हैया
आपका नाम तो है पर कृष्ण का ज्ञान, चेतना क्या प्राप्त
की? क्या उस जगह आप पहुँचे? आपकी पचास पीढ़ियां
नहीं पहुँच पाई आने वाली पचास पीढ़ियां पता नहीं पहुँचे
या नहीं पहुँचे। मगर आगे पचास पीढ़ियां आपकी याद रख
सके उस जगह मैं आपको, अपने धिक्षियों को पहुँचाना
चाहता हूँ। ऐसा अश्लील युग पुरुष बनाना चाहता हूँ।
यह मेरी जीवन की इच्छा और लक्ष्य है। धार्मिक
ज्ञान देना मेरा लक्ष्य है।

नवरात्रि के प्रत्येक दिवस का अपना महत्व है,
प्रथम शैलपुत्री, द्वितीय ऋष्णनारिणी। ब्रह्मचारिणी
का अर्थ है पूर्ण ब्रह्म को जानने की क्षमता,
कान को पहचानने की क्षमता।

ब्रह्म का गतानन्द है जान, जेतना। कोई
ब्रह्मचर्य वरा पालन करने को बहाचर्य नहीं
कहते, यह आपके मन के कान्सेप्ट गलत है
कि शादी कर दी, ब्रह्मचर्य खालित हो गया।
ब्रह्मचर्य खालित कहाँ से हो गया? जो ब्रह्म
को जानता है वह ब्रह्मचरी है। शादी करने से
ब्रह्मचर्य खालित हो गया आपका? मैं ब्रह्मवारा
हूँ ही नहीं? फिर ब्राह्मण कहाँ से बनूँगा? जब
ब्रह्म को ही नहीं जानूँगा तो ब्राह्मण कहाँ से
बनूँगा? और सन्यासी बन जाऊँगा? क्या बाल
बढ़ा कर रीछ बनने से मैं महापुरुष बन
जाऊँगा? जटा बढ़ाने से कुछ बोला तो शर
की बहुत है, गीदड़ी की बहुत है। आप से
बढ़ा ज्यादा लंबे लंबे बाल हैं।

उससे बुझ नहीं हीगा। पीरस्थ हो, कल
को आप गौर सके, युग पुरुष आप बन सके

और अद्वितीय युगपुरुष बन गए। आगे बाली पीढ़िया आपको याद रख सके, आप इतिहास पुरुष बन गए - यह सब बनेंगे तो जीवन का अर्थ होगा। आप में से प्रत्येक ऐसा बन सकता है जो पुरुष हो या स्त्री हो।

नवरात्री का प्रत्येक दिवस आप में काल रात्रि है, योग रात्रि है, सिद्ध रात्रि है, ब्रह्मरात्रि है और मैं दस रात्रों के लिए आपको दूर्जा साधना करने के लिए कठ सकता था नवार्ण साधना या बगलामुखी या भूमावती साधना भी करने के लिए कठ सकता था मगर उस बगलामुखी या भूमावती से कुछ होगा नहीं। आप बगलामुखी साधना को और भर जाएं तो होगा क्या? किर आगे बाली पीढ़ियों याद कैसे रखेंगी? और याद हो नहीं रखा तो, जीवन का मतलब हो क्या हुआ? पहले काल जान आवश्यक है और आपको कुछ प्राप्त ही नहीं हुआ तो गुरु का मतलब ही क्या हुआ? किर गुरु बनने का लाभ ही क्या हुआ? किर सांदीपन बनने का लक्ष्य ही क्या हुआ?

वह सांदीपन बना और उसने कृष्ण को भगवान् कृष्ण बना दिया। मैं गुरु हूं तो तुमको इनका उन्ना उठा ही दूंगा, यह विश्वास दिनाता हूं ऐसी साधनाओं के माध्यम से। गारेटी के साथ मैं।

मैंने आपको इनने साधनाएं दी फिर क्यों युगपुरुष आप नहीं बने, मुझे यही समझना है? आपमें ६४ कलाएं क्यों नहीं आई? आप युग पुरुष क्यों नहीं बन पाए, कृष्ण क्यों बन गया? उसके बाद तो कई पीढ़ियाँ बीत गईं, बाकी क्यों नहीं बन पाएं?

इसलिए नहीं बन पाए क्योंकि सांदीपन जैसा गुरु बाद में नहीं भिला। सांदीपन होता हो और वो चार शिख्य गेसे तेयार कर देता। कोई वैसा गुरु नहीं बन पाया, तो वह जान समाप्त हो गया। कुछ जान नो ताढ़पत्री पर था उसे दीमको ने खा दिया, कुछ भोजपत्री पर जो था उसे भी दीमको ने खा दिया, कुछ मुगलों ने खत्म कर दिया और जो कुछ बाकी बचा था उसे अगेंगों ने समुद्र में डुबा दिया और आप जैसे के तैसे इथे जोड़ कर खड़े रह गए - जब भगवान् कृष्ण की जय।

उस जय नियकार से क्या हो गया? होमा तब जब आप युग पुरुष बने, अद्वितीय बने, ऐसे बने कि प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिले। और जब भी मैं आप को पूछता हूं तो आप कठ सके कि मैं इस क्षेत्र में अद्वितीय हूं गुरुदेव। धन के क्षेत्र में तो शन के क्षेत्र में सफल हूं। गुरु के क्षेत्र में तो यद्ध और मुकदमों में सफल हूं। सम्मोहन के क्षेत्र में तो रघुनाथ शक्ति मेरे जैसी किसी भी ही नहीं। पीरुष - आप मुझे देख तो जिए मैं आपने आप में बहुत ताकतबान हूं। दुर्गान भी मुझे ही प्यार करते हैं और भिन्न भी मझे ही प्यार करते हैं।

ऐसा आपका व्यक्तित्व बने ऐसा व्यक्तित्व बने कि आज इनने हनुर वर्ष बाद कृष्ण को याद रख सके। मैं भी चाहता हूं कि आप ऐसे अद्वितीय युग पुरुष बने कि आज से दस हनुर वर्ष बाद आपको लोग याद रख सकें क्योंकि एक बार, फिर सांदीपन आपके सामने आता है। फिर वह आपको जान देने के लिए आदेता है।

और आपको जान दीना चाहिए कि जब भी साधना शिविर होता है तो सात आठ रात में सोता नहीं हूं क्योंकि जितना तापना का अंश शिष्यों को, आपको देता हूं उतना इक्कट्ठा करता है और आपका भी यह कर्तव्य है कि आप पूर्णा से उस जान को ग्रहण करें जो, मैं आपको हूं और मैं हर हालत में आपको वैसा अद्वितीय बना कर छोड़ूंगा, यह विश्वास रखिए, छोड़ूंगा नहीं, आपको।

जीवन का अर्थ ही तब है जब जो भी जीवन में चाहें, जिस प्रकार से भी चाहें वह अपने आप में सिद्धि प्राप्त हो और जीवन का लक्ष्य जीवन का चिंतन अद्वितीय बनने में है। मैं जानता हूं कि भौतिक सुख है, मैं जानता हूं यह परिवार है, मैं यह भी जानता हूं कि जो आपके जीवन में भौतिक आवश्यकताएं हैं उनकी धूर्ति होनी चाहिए। मगर यह जीवन का एक लक्ष्य है।

एक दूसरा दृष्टिकोण और है जिससे आप बिल्कुल अद्यत है। एक ऐसा दृष्टिकोण है

जो एहसास करता है कि पूरी रात बीत जाती है और आप सब के वशेन नहीं कर पाते। जीवन का आधा भाग समाप्त हो जाता है और आप सब नहीं रेख पाते।

मेरे जीवन में भी ऐसी लिखितियाँ बनीं कि निषेच लेना वह कि अबा मुझे संन्यास लेना चाहिए या गृहस्थ में रहना चाहिए और पूरे धर बाले इसी भ्रत में थे कि आप गृहस्थ में रहें और नीकरी करें, व्यापार करें और इस तरह से सामाजिक जीवन व्यापक करें।

परन्तु मेरे जीवन का लक्ष्य यह पूर्ण रूप से नहीं था। मेरे जीवन का लक्ष्य यह भी था कि मैं उन अनदेखे पहलुओं को दृढ़ जिनके माध्यम से गुस्तेव कहते हैं कि इसमें सफलता ग्रिनने के बाद व्यक्ति अडिलीय युग्मानुरूप बन जाता है और यही अर्थों में कृष्ण ही अकेला व्यक्तित्व है जो दृष्ट कला प्रधान है, वह अकेला ही व्यक्तित्व है जिसने आपसे और हमसे ज्यादा संघर्ष किया है। वह ऐसा व्यक्तित्व है जिसने आपने जीवन में समस्त सुखों को लान मार दी और सुख जैसी दीज जीवन में देखी ही नहीं। उसके बाबजूद भी उसके मन में एक ही उच्छा रही है कि मुझे अपने व्यक्तित्व को ऊंचा उठाना है एक ही धूम, एक ही लग्न, एक ही लक्ष्य।

और अगर उनकी गीता को पढ़े तो उन गीता में दूसरा बोई उपदेश नहीं है। केवल उपदेश यह है कि तुम काम करते रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा गुफ हूँ। दसलिए कहा गया -

कृष्ण देव जगदगुरुं

उन्हें भगवान नहीं कहा गया भगवान नो बहुत बाद में कहा गया उच्च कोटि के योगी, कर्मि, भीष्म, द्रौण जो उस समय थे उन्होंने कहा कृष्ण एक जगदशुरु के रूप में है। क्योंकि जान के बान गुरु वे सकता है। वह ही समग्रा सकता है कि कौन सा रासना सही है और किस रासने पर चल कर सफलता प्राप्त की जा सकती है। और अगर गुरु कह दे तो फिर मान लेना चाहिए या फिर बिलकुल नहीं मानना चाहिए। बीच में लिखितियों में आप नहीं रहें।

आप उन लिखितियों को प्राप्त करें जो जीवन के अनश्वर प्रसंग हैं। आप सोचिए कि कृष्ण अगर सामाजिक दंग से सोच कर घर बैठ जाता तो उसे कोई तकरीब नहीं थी। वह राजा का पुत्र था, राजगद्वी पर बैठ जाता, शत्रु द्वारे तो उनसे लड़ता, मार पीट करता, कुछ लगाती, कुछ लगाता और जैसे-वैसे मधुरा पर राज्य करता रहता।

गगर क्या फिर
हम उनको समरण
रख पाते? क्या
वासुदेव को हम
रमरण रख
पाए? क्या
वासुदेव के
पिता का हम
रमरण रख
पाए?

हम उसको स्मरण इसलिए नहीं रख पाए क्योंकि उस्सेंने ऐसा संवर्द्ध नहीं किया इस जीवन के उद्देश्य को समझा ही नहीं। अद्वितीय बनना जीवन का उद्देश्य और चित्तन है और इस चित्तन को प्राप्त करना हमारे लिए जरूरी है।

अब यह अलग बात है कि इसके कई अंग उपर्युक्त हैं। वह इतना सरल रस्ता नहीं है एक-एक कदम बढ़ कर उस अंतिम बिन्दु पर पहुंचा जा सकता है जहां आने वाली पीढ़ियां स्मरण रख सकें। और अगर आने वाली पीढ़ियां स्मरण नहीं रख पाएंगी तो न्यूनता आपकी ही रहेगी। आपके परिवार वालों की नहीं रह पाएंगी। परिवार वाले कहेंगे हमने कब आपको मना किया था। वे तो एक किनोर जाकर खड़े हो जाएंगे और उस समय जब शरीर शिथिर हो जाएगा, मन शिथिर हो जाएगा, जब वृद्धावस्था आपको प्राप्त हो जाएगी तब आप चाहेंगे भी कि मैं जीवन में कुछ करूँ तब आप शायद नहीं कर पाएंगे।

आपमें से आधे से ज्यादा अमरनाथ नहीं जा सकते। आपमें से आधे से अधिक चाहेंगे भी तो गौमुख नहीं जा सकते क्योंकि शरीर साथ नहीं देंगा। क्यों नहीं जा सकते? इसलिए क्योंकि आप में वह शारीरिक ऊर्जा नहीं रह पाई। वह तपत्त्या का अंश नहीं रह पाया। वह पूर्ण सफलता की ओर अग्रसर होने की किया नहीं रह पाई और आपको जो गुरु मिले वे केवल सामान्य मंत्र देते रहे।

वह निषिद्धत्व स्वप्न से है कि रीढ़ी सीढ़ी पर चढ़ने के लिए पहले पहली सीढ़ी पर चढ़ना पहला है, फिर दूसरी, तीसरी, पचासी, साउंटी, और नब्बवी और फिर सीढ़ी सीढ़ी। एकदम छलांग लगाकर उस जगह नहीं पहुंचा जा सकता। और तीस वर्षों तक मैं यही काम करता रहा। इनने वर्षों से आप जुड़े रहे और ब्राह्मर आपको गतिशील करता रहा। क्योंकि पहली कलास याले को मैं एम.ए के पीरियड नहीं दे सकता था। पहली, दूसरी, तीसरी और तीस ही मुझे परिषक्तता नजर आएगी कि ये अब उस जगह पहुंच गए हैं जहां से आप एक छलांग लगा सकते हैं तो मैं स्वयं आपको वह चेतना प्रदान कर दूँगा। मेरा ब्राह्मर यही चित्तन रहा कि शिष्यों को उस जगह ले जाकर खड़ा कर देना है मुझे और हमारे जीवन का प्रत्येक द्वाण जीवन जीयत हो, यह हमारे जीवन का लक्ष्य, यह हमारे जीवन का उद्देश्य है।

और आपने अगर साधनाएं की और उनमें कई कारणों से सफलता नहीं मिल पाई तो ऐसा क्यों हुआ?

कलास रूम में साठ लड़के बैठे और मैंने उनको पढ़ाया - एक ही कलास एक जैसे लड़के, एक ही अध्यापक, एक ही बातावरण एक ही कोस, उतना ही पढ़ाया और उसके बाद भी ३३ प्रतिशत रिजल्ट रहा और बाकी ६७ प्रतिशत फेल हो गए। क्यों हो गए? जबकि बातावरण भी एक जैसा था, गुरु भी एक जैसा था, पाठ्य पुस्तक भी एक ही थी।

इसलिए कि उनमें एक चेतना होनी चाहिए भी जो उसको आत्मसात कर पाए। न्यूनता गुरु की नहीं आपकी रही। गुरु ने तो उतनी ही चेतना प्रदान की परंतु आप आत्मसात नहीं कर पाए। सांकेतिक के पास भी ऐसीड़ी शिष्य ये मनर केवल कृत्ता ही अद्वितीय बन पाए।

इसलिए मैंने गर्भस्थ चेतना दीक्षा देना शुरू किया कि गर्भस्थ बालक को ही चेतना देवे शुरू से ही। वह आपने आप में शुरू से ही ऊर्धवरिता बन जाए। जब बालक बने तभी से ही उसे अद्वितीय की ओर अग्रसर कर दें। जब यजोपवीत का अवसर आए तो उन्हें यजोपवीत दे दें, उनको उस रास्ते पर शुरू से ही प्रारंभ कर दें।

और आप चेतना शुरू करेंगे तभी आप उस जगह पहुंच पाएंगे। पानी का छन गम करें तो विज्ञान का नियम है कि १०० सैलसियस होने पर ही पानी खीलने लगेगा, अगर वह १०० पर आकर आप सोचें कि पानी खीला ही नहीं लकड़िया जला दी, और आप भगोना उठा कर नीचे रख दें तो जहां १०० डिग्री पर आप पहुंच गए, थे वहां से वापस नीचे उतर आए। केवल १५ डिग्री और रुकना या आपको और पानी खील जाता।

आप धीरे थीरे ही उस जगह पहुंच पाएंगे जहाँ से हल्लांग लगा सके अद्वितीयता की ओर। कृष्ण ने अपने जीवन में मुड़वर भी नहीं देखा कि देवकी कीन थी है या वाशुदेव कीन या है। नंद कीन सा है या मथुरा कीन सा है, नहीं देखा उसमें। तकलीफ क्या थी उन्हें देखने में? क्या अंहकारी हो गए थे? क्या उनके मन में लोई बटैचमेट नहीं रह गया था?

प्रश्न यह नहीं था। प्रश्न यह था कि मझे अपनी परसानेतिटी को अपने ज्ञान को, अपनी चेतना को, कुण्डलिनी जागरण से सातों चक्र जागत करने हुए और मधाकाल रिक्षि द्वारा इतनी ऊबाई तक पहुंचा देना है जहाँ पर केवल मैं युग्मपूर्व बन सकूँ, बेतल मैं।

और मैं कहता हूँ कि आपमें से प्रत्येक, प्रत्येक और प्रत्येक युग पुराव बन सकता है और गारंटी के साथ बन सकता है। यदि आपमें जीवट शक्ति है, चेतना शक्ति है, यदि आप शिष्य हैं, यदि आपमें मेरे प्रति समर्पण है यदि मैंने आपको गले से लगाया है, यदि आप मेरे चरणों में लूक है, यदि मैंने जी कहा वह आपने किया है तो सारी जिम्मेवारी आप मेरे ऊपर रख दीनिए। किस आपकी जिम्मेवारी तो बहुत कम हो गई।

और आपमें समर्पण ऐसा होना चाहिए कि हे गुरुदेव आपने जैसा कहा विशा मैंने कर दिया, अब आप उस भिट्ठो के लौटे को कीपक बना दें, सुराही बना दें, बड़ा बना दें, जो कुछ बना दें, कुछ ऐसा बनाएं कि आने वाली पीढ़ियों को मैं युख पहचा सकूँ ऐसा प्रदा बनाएं कि मैं आने वाली पीढ़ियों को ठंडा पाकी पिला राकूँ। मेरे जीवन का यह उद्देश्य है कि मैं अद्वितीय बन सकूँ।

और मैं भी आपको गरटी देता हूँ कि यदि आपका समर्पण है ऐसा, तो मैं आपको उस उच्चता तक पहुंचा कर छोड़ूँगा। और आप भी अपने जीवन में उन उच्च साधनाओं और दीक्षाओं को यदगुरु से प्राप्त करते हुए अद्वितीय बन सके ऐसा ही मैं हृदय ने आशीर्वाद देना हूँ कल्याण कामना करता हूँ।

सदगुरुवेच परमहंस निखिलेश्वरानन्द जी

अपनी से अपनी बात

साधक शब्द की उत्पत्ति साधना से हुई है तथा साधना और साधक शब्दों से साधु शब्द बना है। सामान्य लोग व्यवहार में साधु शब्द का यह तात्पर्य है, जिसने अपना धर बार छोड़ दिया है। उस संसार, धर गृहस्थी की कोई चिंता नहीं है और वह एकाकी जीवन व्यतीत करता है। जबकि वास्तविक रूप से साधना का उद्देश्य ही जीवन में पूर्णता प्राप्त करने से है। जीवन की यह पूर्णता तीन प्रकार से प्राप्त हो सकती है। १. शारीरिक सौन्दर्य और आरोग्यता, २. श्रेष्ठमानसिक विकास तथा बुद्धि की तीव्रता, ३. गुरु अथवा मन्त्र के माध्यम से अपने इष्ट को प्राप्त करना।

संसार ने पुनर्जन्म होते हैं। जीवन के उपरान्त भी मुक्ति नहीं पिल पाती, अतः मनुष्य देह से मृत होकर आत्मा अतृप्त होकर घृणनी रहती है। यह आत्मा अवृद्धि रूप में अपनी अपूर्ण कामनाओं के कारण बस्तु रहती है। इसका मूल कारण यह है कि जब यह जीवन प्राप्त हुआ तो उसका पूरा-पूरा उपयोग नहीं हुआ इसके पीछे शारीरिक सौन्दर्य और आरोग्य में कमी एक प्रथमन कारण है। दूसरा कारण अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं होना है। भौतिक जीवन में भौतिकता से संसार के भूखों से लगाव डूँगा प्रकृति का नियम है। पिछली कुछ शास्त्रावधियों से जब से मत्तियम का विकास हुआ है उसके बाद ही साथ एक प्रकार धोपे गये वैशाख भाव को भी प्रधानता दी गई है। बार-बार यह कहा जाता है कि इन संसार में भौतिक वस्तुओं में कुछ नहीं रखा है। जो संसार को जितना अधिक वैशाख रखेगा वही अगले जीवन में श्रेष्ठ बनेगा। जब मुनिश इस जीवन में ही श्रेष्ठ नहीं बन सका अर्थात् सौन्दर्यवान्, ज्ञानवान् और धनवान् नहीं बन सका तो अगले जीवन में वह कठु बनेगा ही इस बास की कोई नारंटी नहीं है। आगे की चिंता छोड़ कर बरीगान जीवन में जो कुछ पाप हुआ है उसका पूर्ण उपयोग किसे प्रकार किया जा सकता है। वही जीवन का साक्षात् रात्य है। जो अपने जीवन में अपने इह की पूजा नहीं करता वह दैवत के द्विष्ट है उस देह रूपी उपहार का आपमान बरता है।

इह के सौन्दर्य के लिये आधुनिक युग में बनाये गये कृत्रिम साधन अस्वाद हैं।

इह सौन्दर्य के लिये ग्राकृतिक साधन ही सर्वाधिक उपयोगी है। इसके लिये छापेर शास्त्रों ने उचित भाषाएँ, उचित व्यवहार, उचित निव्र एवम् उचित व्यायाम की सलाह दी गई है। यह भागत का दुभाष्य ही कहा जाता जहां से मूल रूप से योग और साधना की उत्पत्ति हुई उसी रसायन पर इन विद्याओं का स्वरूप कम प्रचार है।

प्रस्तुत अंक नीन्दर्य एवम् अपसरा साधना विद्याओं के और सौन्दर्य का आधार नारी को ही माना गया है। जहां सौन्दर्य है वही जीवन में रस और आनन्द है।

अप्सराओं के सम्बन्ध, वक्षणीयों के सम्बन्ध में, योगिनीयों के सम्बन्ध में कोई गलत धारणा आपके विमान में तो उसे निकाल दीजिये। ते उच्च कोटि के साधनां तो मनवान शिव के शीघ्रुम से उल्लेखित हैं। इन साधनाओं को हमारे प्रत्येक व्राणि ने अपनाया है और जीवन के सौन्दर्य का उपयोग एवम् उपभाग दोनों ही किया है। इसी कारण वे जागीर्य में श्रेष्ठ, आशु में श्रेष्ठ, विन में श्रेष्ठ, साधना में श्रेष्ठहुये हैं और संसार ने इन्हें पूजा है। यदि हम दुर्जा साधना कर सकते हैं, ध्यामती, ब्रगलामुखी, तारा, गीरो, नाधना कर सकते हैं। सरस्वती साधना कर सकते हैं, लक्ष्मी साधना कर सकते हैं। कृष्ण साधना कर सकते हैं तो अपसरा साधना, योगिनी साधना करने में भी कोई दोष नहीं है। केवल आवश्यकता इन बात की है कि हम अपने जीवन में योग विद्या को अपना ले। योग का तात्पर्य है ऐह और मन दोनों को पूर्ण रूप से स्वस्य बना कर जीवन में सब प्रकार के सुखों को आनन्द रूप में परिणीत कर अपने जीवन को अमृत रस से मिलित कर जीना है। आत्मजान की प्राप्ति साधना के माध्यम से ही हो सकती है। योग विद्या युक्त साधना, अपसरा साधना पुरुषों के लिये जितनी आवश्यक है उतनी ही विद्यों के लिये भी आवश्यक है।

प्रस्तुत अंक में योग साधना के सम्बन्ध में विस्तार से लिखा गया है इसके एक-एक शब्द को ध्यान से पढ़ें कि वास्तविक योग दो बार शारीरिक आसन से ही नहीं है। सौन्दर्य केवल बाह्य वस्तु नहीं है यह जीवन का आधार है। चेतना युक्त सौन्दर्य होना, चेतना युक्त बुद्धि होना, चेतना युक्त जीवन के नियमों का पालन कर उसे आनन्द पूर्वक व्यतीत करना ही मूल रूप से योग है।

योग साधनायें, अपसरा साधनायें, सौन्दर्य साधनायें, युक्त साधनायें, जीवन के तनाव को कम कर तृष्णाओं को बहाती नहीं अपितु तृष्णाओं की पूर्ति करती है। सौन्दर्य की हम पूजा करें, शिव और गीरी को, कृष्ण और राधा को, उर्वशी और रम्भा को अपने जीवन में उतारें। केवल स्वप्न नहीं देखे अपितु अपने स्वप्नों को साधना के माध्यम से साकार कर जीवन के वास्तविक आनन्द को प्राप्त कर सकें। आप सब साधकों को यही आशीर्वाद है कि आप जीवन में आनन्द रस से परिपूर्ण हो।

आपका अपना . . .

नृसंदेश

योग सौठदर्थ

और जीवन

मनुष्य में सर्व शक्तिशाली क्षमता उसकी बुद्धि तथा प्रसिद्धि है। यह बुद्धि द्वारा मनुष्य से कोई अलग वस्तु नहीं अपितु उसका अधिक अंग है योग के माध्यम से चेतना के स्तर को उच्च किया जा सकता है योग शब्द का अर्थ अत्यन्त व्यापक है और जब शरीर तथा इन्द्रिय चेतना से योग क्रिया द्वारा साधक आगे बढ़ता है तो एक नवीन चेतना का उदय होता है तथा मनुष्य अत्यन्त शक्तिशाली बन जाता है योग दिया के सभी स्वरूपों को स्पष्ट करता यह सारगार्भित लोख -

वर्तमान समय में शरीर को शेष बनाने हेतु, उसे सुन्दर बनाने हेतु, उसे दीमारियों से मुक्त रखने हेतु योग को अर्थ है जोड़ना अथवा घिलाना। जब वो व्यक्ति या वस्तुएँ सर्वश्रेष्ठ उपाय बताया गया है। हर स्थान पर योग का अभ्यास अलग होती है तो उसे वियोग कहा जाता है। और इसके हो रहा है और इसे केवल वेह और शरीर से संबंधित कर विपरित जब वो व्यक्ति अथवा वस्तुएँ एक दूसरे के निकट विद्या गया है। शारीरिक सोष्ठव को अनुकूल बनाने के लिए आते हैं तो उसे संयोग अथवा योग कहा जाता है। जब तथा अनिद्रा, पाचन, रक्त चाप, आदि रोगों के निवारण के योगाभ्यास के लिए उत्तरते हैं तो हम बाढ़ा चेतना को, वस्तु लिए योग का उपयुक्त इलाज बताया गया है। लेकिन मूल चेतना से अलग करते हैं। जब हम अपने आस-पास के प्रश्न यह है कि क्या योग केवल शारीरिक विज्ञान ही है? यातावरण को भूल जाते हैं और व्यक्तिगत चेतना बाह्य कथा योग के छारा वेह को अनुकूल बनाया जा सकता है? अनुभवों से मुक्त होकर उसका संयोग विश्व चेतना से होता अथवा योग इसमें बहुत अधिक आगे का विज्ञान है जो हमारी है जिसके छारा हम अपने भूत और वर्तमान का अनुभव करते चेतना के सभी चिन्हों को प्रशंसा करता है। योग के सम्बन्ध हैं। इसे वियोग के साथ संयोग कहा गया है।

मैं विभिन्न जगतियों ने अपने-अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं।

योग शब्द संकृत भाषा का एक शब्द है जिसका मनुष्य अथवा घिलाना। जब वो व्यक्ति या वस्तुएँ सर्वश्रेष्ठ उपाय बताया गया है। हर स्थान पर योग का अभ्यास अलग होती है तो उसे वियोग कहा जाता है। और इसके हो रहा है और इसे केवल वेह और शरीर से संबंधित कर विपरित जब वो व्यक्ति अथवा वस्तुएँ एक दूसरे के निकट विद्या गया है। शारीरिक सोष्ठव को अनुकूल बनाने के लिए आते हैं तो उसे संयोग अथवा योग कहा जाता है। जब तथा अनिद्रा, पाचन, रक्त चाप, आदि रोगों के निवारण के योगाभ्यास के लिए उत्तरते हैं तो हम बाढ़ा चेतना को, वस्तु लिए योग का उपयुक्त इलाज बताया गया है। लेकिन मूल चेतना से अलग करते हैं। जब हम अपने आस-पास के प्रश्न यह है कि क्या योग केवल शारीरिक विज्ञान ही है? यातावरण को भूल जाते हैं और व्यक्तिगत चेतना बाह्य कथा योग के छारा वेह को अनुकूल बनाया जा सकता है? अनुभवों से मुक्त होकर उसका संयोग विश्व चेतना से होता अथवा योग इसमें बहुत अधिक आगे का विज्ञान है जो हमारी है जिसके छारा हम अपने भूत और वर्तमान का अनुभव करते चेतना के सभी चिन्हों को प्रशंसा करता है। योग के सम्बन्ध हैं। इसे वियोग के साथ संयोग कहा गया है।

योग के संबन्ध में प्रथम परिभाषा यह है कि यह वह उत्तरति है जो चेतना के विभिन्न स्तरों पर पूर्ण विस्तृण प्रदान

करता है। इसका तात्पर्य यह है कि योग हमें वह क्षमता प्रदान करता है जिसके द्वारा हम अपने चेतना के विराट आशामों में प्रविष्ट हो सके तथा देख और जान सकें कि हमारी चेतना के किस आयाम में किस स्तर पर ब्याह हो रहा है और कितना छिपा हुआ है।

प्रत्येक व्यक्ति में महान् शक्ति ज्ञान, समझ तथा अनुभव उसकी आत्मा के अधिन अंश के स्वरूप में विद्यमान है। यह मनुष्य ही है जिसने अपने चेतन मस्तिष्क सञ्जाल के द्वारा आश्चर्यजनक खोजें, कार्य तथा अविष्कार किये हैं। सामाज्य व्यक्ति भी अपने अवचेतन और अचेतन मस्तिष्क पर नियंत्रण स्थापित कर कितने ही महान् और आश्चर्यजनक कार्यों को करने की क्षमता का स्वामी बन जाता है।

पांताजली योग सूत्र के अनुसार योग चेतना के आशामों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना है उनके अनुसार योग वह पद्धति है जिसके द्वारा हम चेतना

की विभिन्न अवस्थाओं का जान प्राप्त कर उन पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं।

बायं चेतना पांच इन्द्रियों द्वारा अर्थात् स्पर्श, अवण, गंध, वाक्-स्वाव एवम् दृश्य स्फीट कियाएं शरीर अंगों त्वचा, कान, नाभिका, जीव तथा नेत्रों की कियाएं हैं और इन पांचों इन्द्रियों की कियाओं के द्वारा एक अनुभव आता है और इन अनुभवों के आधार पर जीवन में जान, अजान की परतें बनती रहती हैं दूसरे अनुभव अद्यतन द्वारा अथवा दृश्यों के अनुभवों को सुन कर बाह्य चेतना विकसित होती है। लेकिन दूसरे भी पंच इन्द्रियों का कार्य रहता है। इसके अन्तरिक्ष व्यक्तिगत चेतना निद्रा तथा स्वप्न के समय भी कार्यरस रहती है। लेकिन आन्तरिक चेतना इससे बहुत अधिक विशाल और



विशाल है जो अवचेतन तथा अचेतन मस्तिष्क में छिपा हुई है।

जिस पर व्यक्ति को बोई नियंत्रण नहीं है। ऐसी रिक्ति स्वजन के समय में भी होती है। क्योंकि स्वप्न हम डरलिए नहीं देखते बर्तोंके हम उन्हें देखना चाहते हैं अपितु वहमें उन्हें देखना पड़ता है। यह बहुत कम व्यक्तियों को जानकारी है कि रात्रि गहरी नींद में पहुँचने के पूर्व तथा प्रातः उठने से पूर्व जिस मानसिक विधि में रहते हैं वह स्थिति अपवै शक्ति का भंडार तथा सभी शक्तियों के भंडार का नियंत्रण केन्द्र है। जो जान से परिपूर्ण है लेकिन वह व्यक्ति की असमर्थताना है कि हम इस नियंत्रण केन्द्र से अपरिचित रहते हैं। जित्य प्रातः इस जान केन्द्र के पास पहुँचते हैं और बिना कुछ जागत किये धुन बाह्य चेतना के स्तर पर आ जाते हैं।

योग का लक्ष्य है अपनी चेतना को अन्तर्मुखी ले जाना वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि योगी तपस्वीयों से शेष
और अन्तर्मुखी स्थिति में भी जागत रहना, इस प्रकार योग है। शास्त्र के जान वालों से शेष है तथा सकाम कर्म अर्थात्
अवस्थन नहीं है, सम्बोहन में एक स्थिति को भूल जाते हैं कर्मकाण्ड धूमा पाठ करने वालों से भी शेष है इसलिए है
और इसी स्थिति पर एकाग्र हो जाते हैं। वास्तव में “योग अर्जन तू योगी बन।

अवचेतन और अवचेतन अवस्था के अन्तर्मोहन की एक प्रक्रिया है। इस प्रकार योग जान, सजगता, समझ, अवलोकन तथा
अपने अनुभवों को जानने की प्रक्रिया है” जिसमें जागत अवस्था में निद्रा है और निद्रा अवस्था में अवचेतन और अचेतन
मन जागत है।

योग में चेतना पर विशेष बल दिया गया है। यह चेतना जब इन्द्रियों के माध्यम से कार्यरत होती है तो इसे इन्द्रियों
चेतना कहा जाता है। जिसमें जो दिखाई, सुनाई पड़ता है, जो
व्यञ्जि के माध्यम से जान होता है वही चेतना का स्तर रहता
है। जब यह चेतना शरीर के माध्यम से कार्यरत होती है तो
इसे शरीर चेतना कहते हैं। और जब यही चेतना बुद्धि के
माध्यम से कार्यरत होती है तब इसे भौतिक चेतना कहते हैं
और जब यह मन के माध्यम से क्रियारत होती है तो इसे
मानसिक चेतना कहते हैं।

जीवन में पाँडा और आनन्द का अनुभव कौन करता है? मनुष्य को विभिन्न माध्यमों से व्यक्तिगत चेतना प्राप्त होती है
उसी के माध्यम से वह कभी पाँडा, कभी आनन्द का अनुभव
करता है। यह सब ब्राह्मण चेतना का खेल है लेकिन जब
आनन्दिक जीवन जागत होती है तो वह किसी अनुभव अथवा
किसी इन्द्रिय शक्ति को माध्यम बनाकर वह चेतना शुद्ध रूप से
अनवरत रूप से विश्वमन रहती है अतः योग की मूल परिभाषा
यह ही सकती है कि “योग वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम
अपनी चेतना को, जान के किसी भी माध्यम से मुक्त कर
सकते हैं और यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपनी
चेतना को पूर्ण रूप से कार्यरत कर दिस्तार कर सकते हैं।”

योग एक कला और अपने मन में संघर्ष करने की पद्धति है
अपने मन को सीमाओं से मुक्त कर इस मुक्त अवस्था में
अधिक जान प्रकाश शान्ति, शिश्रुत, समझ, बुद्धि तथा
अपरिमित आनन्द की प्राप्ति कर सकते हैं।

योग दर्शन में विज्ञ की वृत्तियों को विख्यान से रोकने का
नाम योग कहा गया है। अर्थात् जिसमें अपनी विज्ञ वृत्ति और
बेष्टाओं को बहिर्मुखी होने से रोकर अन्तर्गुरुदी करना पड़ता
है।

गीता में कर्म की कुशलता को योग कहा गया है। गीता में
तो कर्मयोग, जानयोग इत्यादि सभी प्रकार के योगों का

योग विशिष्ट ने कहा है कि योग शास्त्रों क्रियों से भोजन
आयन की पवित्रा से भर्तीभावाति योग शास्त्र के परिशिलन से
सुखासन में बैठकर कुछ काल प्राठायाम के अभ्यास से उच्चक,
पूरक, कुंभक का भर्ती प्रकार से अभ्यास हो जाने से योगी के
पांचों प्राण उसके अधीन हो जाते हैं और उसकी शक्तियां एक
विशिष्ट मार्ग ले लेती हैं।

योग ही शहिर का स्रोत है :-

योग के माध्यम से विज्ञवित्तियों पर नियंत्रण किया जा
सकता है और इसके माध्यम से वाक्य इच्छाओं और कामनाओं
पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। यह सही है कि
समाजिक इच्छाएँ और कामनाएँ जीवन में आवश्यक हैं इसी
से दुःख और सुख की प्राप्ति होती है। लेकिन एक प्रकार से
जेसे-जेसे कामनाओं का संसार बढ़ता जाता है शक्ति का
विकास स्वक जाता है। इस भौतिक जगत में जड़ वस्तुओं से
लिपि होने का तात्पर्य है कि अपने आप को किसी के अधीन
कर देना और इस स्थिति में कई बार घोर निराशा भी उत्पन्न
होती है। इन भौतिक आकर्षणों को अपने अधिकार में कर
अपनी इच्छा शक्ति का विकास करना ही एक मात्र उपाय है।
जिससे व्यक्ति नहान बन सकता है। इच्छा शक्ति और शशणा
शक्ति के विकास करने का एक मात्र उपाय योग ही है। योग
का साधक कभी शक्ति से होन नहीं होता है। योग से रस्यूल
वृत्तियों सूझम बनती है और व्यक्ति जड़ता से बाहर निकलता
है। रस्यूलता से गूरुमता के मार्ग पर चलना ही शक्ति विकास
के मार्ग पर चलना है। इस प्राकृतिक नियम को आधुनिक मान
कर ही योग का अधिकार हुआ है। योग का निरस्तर अभ्यास
हामारी रस्यूलता को सूक्ष्मता में परिणित करता रहता है। यह
विधि शक्ति के स्रोत को खोल देती है। आधुनिक विज्ञान में भी
क्रिया उण् का विख्यान कर वराण्युओं के आपने के योग से
असाधारण शक्ति प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। इसी कारण
योग ही ऐसा विज्ञान है जो छोटे प्राकृतिक स्वयं देविय अलियों पर
अधिकार दिलाकर अपने स्वयं का स्वयं बनाना है।

पाठ्यान्त्रिक विज्ञान ने देह को सबोंपरि गाना। देह के दोष दूर
करने के लिए नदे-नद्ये अधिकार ददार्ये तथा दंव बनाये। वही

हमारे ऋषियों ने देह के साथ-साथ मन की ओर भी पूरा ध्यान
दिया तथा यह माना कि देह में जो योग उत्पन्न होते हैं उसका

मूल कारण मन है और मन से ही सुख-दुःख, बन्धन मोक्ष, है। संसार ने आज तक शरीरिक बल से युक्त व्यक्तियों को उत्तमि-उत्तमति आदि उत्पन्न होते हैं। मनुष्य जीवन में भीतिक महान् नहीं बनाया है। ऐसे व्याक क्रेवल सेवक के रूप में कार्य उत्तमि एवम् आध्यात्मिक उत्तमति मन के द्वारा ही संभव है। कर सकते हैं। जबकि जो शरीर के साथ साथ मानसिक शक्ति जिय व्यक्ति ने मन को अपने अधीन कर लिया अथान् मन को का ओ उच्चता से विकास कर लेते हैं वे संसार में महान् बनते अपनी इच्छानुसार चलाना सीख लिया वही व्यक्ति जीवन में है। इस प्रकार योग एक कला है और अपने मन में संघर्ष को सुखी, प्रसन्न, स्वस्थ, श्रेष्ठ, मठान्, गतिवान् और सिर्फ जीतने की प्रवृत्ति है। योग विद्या के द्वारा ही मन को सीमाओं माना जाता है। योग विद्या वेद पर तो निवन्नण रखती है साथ से सुख कर अधिक ज्ञान, प्रकाश, शान्ति, स्थिरता, समझ ही साथ मन पर नियन्त्रण कर वेद को मन के अधीन लगा देती है।

यह सत्य है कि जब भी हम अपनी इन्द्रियों को मन माना कार्य करने की स्वतंत्रता देते हैं तो वे हन्दियां शरीर वेद का नाश कर देती हैं। उसमें रोगों का चर बना देती है। इस देखनीव लियति से ऊंचा उद्धाने के लिए भा॒र॒त॑ य तत्ववेदाओं ने योग को सर्वश्रेष्ठ उपाय बताया है। इससे सूक्ष्म शक्तियों का विकास हो कर मन, हन्दियों पर नियन्त्रण करने की क्षमता प्राप्त हो जाती है। योग साधना में सर्वप्रथम जिन व्यक्तियों और कालणों से शक्तियों का व्यय होता है

उसे रोक कर शक्ति का संचय किया जाता है। इस प्रकार योग वृन्दियों जो उत्तम पवित्र कर उसके अपव्यव को रोक दिया जाता है। एक तो मन की एकाग्र नहीं होता उनके लिए योग एकाग्रता, सफलता एवम् वृन्दियों को उत्तम विकास कर देता है। योग के लिए हर जाता है तथा दूसरी और शक्ति के विकास के लिए अन्य व्यक्ति की परिभाषा अलग-अलग हो सकती है। क्योंकि संसार साधन अपनाये जाते हैं। सामान्य सिद्धान्त है कि यदि खर्च में हर व्यक्ति अपना एक अलग व्यक्तित्व लेकर उत्पन्न होता पर हमारा नियन्त्रण रहेगा तो सम्पन्नि में वृद्धि होगी। इसी है। वह सामान्य हो अथवा असामान्य लेकिन उसका अपना प्रकार योग विद्या द्वारा यदि शक्ति के व्यय पर नियन्त्रण किया व्यक्तित्व अवश्य होता है। उस व्यक्तित्व का सर्वाधिक विकास जो सके तो शरीरिक दृष्टि से शरीर स्वस्थ बनेगा और योग विद्या द्वारा संभव है। यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता मानसिक दृष्टि से भी शक्ति में वृद्धि होगी, इसके कारण से है कि “योग चेनना का विज्ञान है”।

वह अलंकृत कार्यों को संभव कर सकता है। योग विद्या को

आधुनिक मनोविज्ञान तथा भारतीय दर्शन में तीन प्रकार के केवल शरीर स्वस्थ रखने की विद्या एक भ्रामक धारणा है।

तीनों की बात कही गई है। इनमें प्रथम है - स्नायविक

वास्तव में योग विद्या शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखता

है।

‘मई 2003 अन्तर्राष्ट्रीय योग विज्ञान’ 26’

४४

बुद्धि तथा अर्साम आनन्द की प्राप्ति कर सकते हैं।

इन नंसार ने अनवरत संघर्ष है, तनाव है, दबाव है, असंतोष है तथा निराशा का वातावरण है। सामान्य मनुष्य संसार में नौकरी, व्यापार, राजनीति और सांसारिक कार्यकलापों में उलझा है। उनके लिए योग सुख, शान्ति, मानसिक गंतुलब एवम् शरीरिक और मानसिक शक्ति का प्रदाता है। जो व्यक्ति मानसिक शमनों के संबन्धित कार्यों मेंवस्त है उनके

लिए योग आत्मनियन्त्रण, आत्मअनुशासन

के भाव साथ उच्चसम उपलब्धि का मार्ग प्रशस्त

करता है। जिन व्यक्तियों का मन प्राथमा में, ध्यान में, में जक्कि विकास के दो उपाय अपनाये जाते हैं। एक तो मन की एकाग्र नहीं होता उनके लिए योग एकाग्रता, सफलता एवम् वृन्दियों को उत्तम विकास कर देता है। योग के लिए हर जाता है तथा दूसरी और शक्ति के विकास के लिए अन्य व्यक्ति की परिभाषा अलग-अलग हो सकती है। क्योंकि संसार साधन अपनाये जाते हैं। सामान्य सिद्धान्त है कि यदि खर्च में हर व्यक्ति अपना एक अलग व्यक्तित्व लेकर उत्पन्न होता पर हमारा नियन्त्रण रहेगा तो सम्पन्नि में वृद्धि होगी। इसी है। वह सामान्य हो अथवा असामान्य लेकिन उसका अपना प्रकार योग विद्या द्वारा यदि शक्ति के व्यय पर नियन्त्रण किया व्यक्तित्व अवश्य होता है। उस व्यक्तित्व का सर्वाधिक विकास जो सके तो शरीरिक दृष्टि से शरीर स्वस्थ रखेगा और योग विद्या द्वारा संभव है। यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता मानसिक दृष्टि से भी शक्ति में वृद्धि होगी, इसके कारण से है कि “योग चेनना का विज्ञान है”।

आधुनिक मनोविज्ञान तथा भारतीय दर्शन में तीन प्रकार के

तीनों की बात कही गई है। इनमें प्रथम है - स्नायविक

वास्तव में योग विद्या शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखता

है।

‘मई 2003 अन्तर्राष्ट्रीय योग विज्ञान’ 26’

४४

जन्माव शारीरिक तनाव, दरमा है- मानसिक तनाव तथा तीखरा है- यह सभी तनावों के लिए जीवन में चलने वाले तनाव प्रमुख के लिए जीवन में चलने वाले तनाव को मिलाने के लिए अधिक शरीरिक श्रम वर्ते रह सकते हैं। इसके साथ ही चाहे कितने तनाव के काल के लिए उस भय को टाल सकते हैं लेकिन जब भय का बहुत बड़ा विश्राम अथवा एकान्तवास में चले जायें तो भी मूल कारण ही नन में छुपा हुआ है तो उसके लिए उपाय मन मानसिक और भावनात्मक तनाव बने रह सकते हैं। इन तीनों तनाव के कारण ही शरीरिक एवं मानसिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। मूलप्रमाण है कि इन तीनों से मुक्ति प्राप्त करनी है लिए व्यायाम किया जाए, प्रायंत्रा की जाए, प्राणायाम किया जाए, ब्रह्म किया जाए अथवा कोई अन्य मार्ग अपनाया जाए, सकता है क्योंकि समसार में ऐसी कोई द्वारा नहीं बची जो इन आते सब योग के अन्तर्गत ही हैं। और योग विद्या जीवन के लिए प्रकार के तीनों से पूर्ण मुक्ति दिला सके।

योग शब्द का तात्पर्य ही एकता एवं मिलन होता है।

उसका सीधा अर्थ है कि हर व्यक्ति का व्यक्तित्व वो विशेष व्यक्तित्वों से भण दुआ है। इन वीनों के बीच निम्नतर संघर्ष होता है। इन वीनों विशेष व्यक्तित्वों को मिलाने के लिए मानसिक गति और शरीरिक गति तथा भावनात्मक गति आवश्यक है। कोई समुद्ध देखने में दुलजा-पतला, कुरुप हो सकता है लेकिन उसको मानसिक बेतना तो इसे सकती है। मनुष्य की इस विधिवता के कारण ही वैज्ञानिकों ने इस पर अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य के पूर्ण अधार नफलता है, परंतु यह सफलता आनन्द वा आशार विकास के लिए केवल विशेष वेश-भूषा और सामाजिक नहीं बन सकती है वास्तव में आनन्द मनुष्य के भीतर शिक्षाचार ही प्रर्याप नहीं है। पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए जामसकता की स्थिति है। आनन्द मनुष्य के मन, व्यक्तित्व, शरीरिक सजगता के साथ साथ मानसिक सजगता भी धारणा तथा वित्तन के विकास की स्थिति है। चंचल मन का आवश्यक है और यह मनुष्य मानसिक रूप से भग्न नहीं है नियन्त्रण में जाना सरल नहीं है क्योंकि मन की गति अन्यन्त तो उसका प्रभाव देख पर अवश्य आगता है।

जब मनुष्य शोध, बदल ही और कुन्दाजी से भर जाता है तो उसके शरीर में कुछ रसायनिक परिवर्तन होते हैं। व्यवहार तथा मानसिक संताप वे शरीर की सारी गतिशील प्रभावित होती है। क्योंकि जब मनुष्य का मन को धूष तथा मानसिक तनाव के चंगल में अलग हो जब शरीर कुछ विषाक्त द्रव्य उत्पन्न करता है ये विषाक्त द्रव्य रक्त में मिल जाते हैं तथा उन्हीं के कारण वेत में पेट में अलसर, डाइविटिन, किडनी में रक्त, अपिन्डा, रक्त ग्रन्थियों में रक्त वा जमाव आदि वीमारीयां उत्पन्न होती हैं। इसका कारण है कि हम सब तुषितिल समाज में अवश्य रह रहे हैं लेकिन इस समाज में ग्रानिस्पर्धा कृतिमता अधिक है और हमके कारण मानसिक तनाव उत्पन्न होता रहता है। जब यह मानसिक तनाव उत्पन्न होता है तो एक भय को उत्पन्न करता है, इस भय ने हुतकारा पाने के लिए व्यक्ति असाधारण कार्य कर सके। अलग पर चलना, कीलों पर लेटना, तरह-तरह के नशे द्वारा व्यस्त पाल लेता है लेकिन इसके हड्डी की धड़कन बढ़ करना, एक पैर पर खड़े रह कर तपस्या

बाबजूद भी भय बना रहता है। कुछ भासग के लिए कृतिम शांति व्यवश्य मिल जाती है लेकिन स्थायी शांति प्राप्त नहीं हो सकती क्योंकि नशा, व्यस्त अथवा तीव्र शरीरिक श्रम कुछ से भी दो तनाव बने रह सकते हैं। इसके साथ ही चाहे कितने काल के लिए उस भय को टाल सकते हैं लेकिन जब भय का नामसिक और भावनात्मक तनाव बने रह सकते हैं। इन तीनों को सुधार कर मन से उस व्यवस्था से मुक्ति प्राप्त करनी है और यह किया योग के द्वारा ही संभव है। अब इस योग के लिए ह्यान किया जाए, प्रायंत्रा की जाए, प्राणायाम किया जाए, ब्रह्म किया जाए अथवा कोई अन्य मार्ग अपनाया जाए, असे सब योग के अन्तर्गत ही हैं। और योग विद्या जीवन के लिए प्रकार के तीनों से पूर्ण मुक्ति दिला सके।

प्रत्येक श्रेष्ठ में कैली हुई है उसका रूप सबलप अलग-अलग

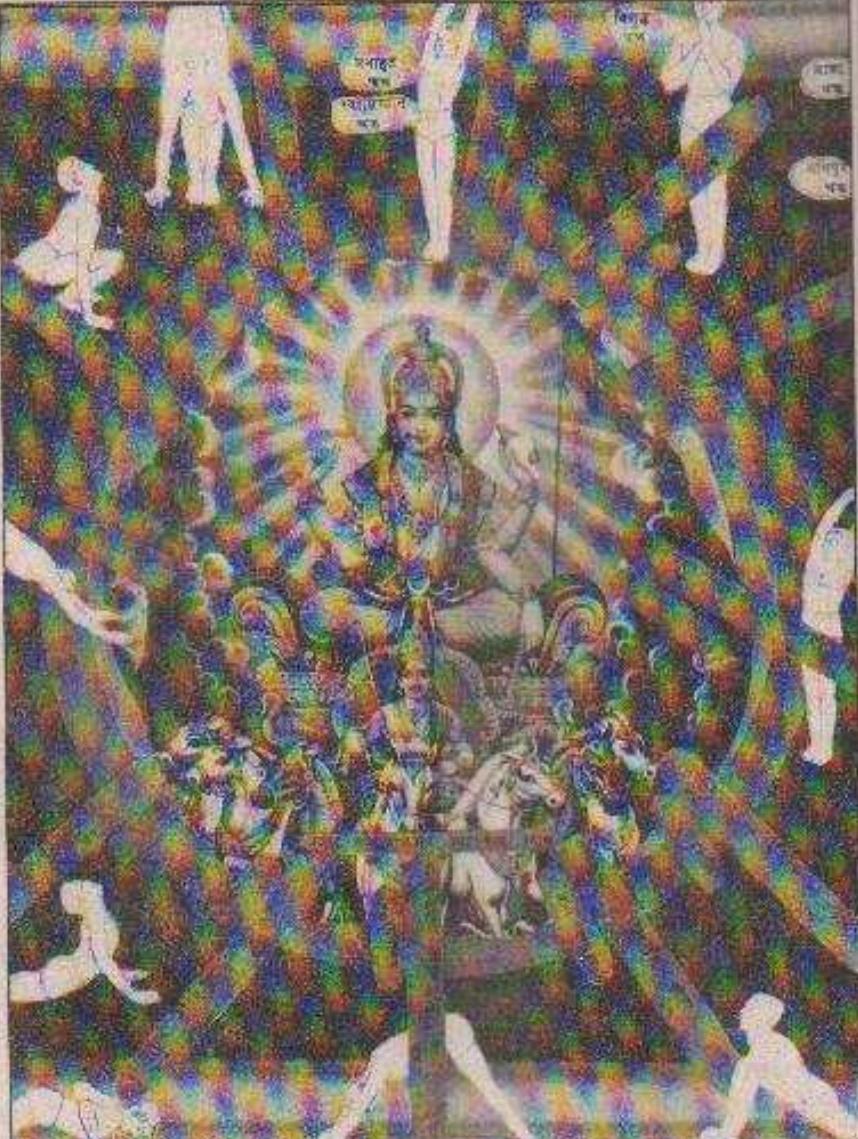
भारतीय दर्शन तथा योग गान्धी का यह निश्चिन मत है कि धैर्य और शांति की प्राप्ति व्यक्ति को केवल भीतर से ही हो सकता है। इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ना की आप धौतिक रूप से पूर्ण सफल है या नहीं। आनन्द से व्यक्ति शांति आवश्यक है। आनन्द से व्यक्ति शांति आवश्यक है। क्योंकि सूख बालर से प्राप्त होता है और सूख का अधार नफलता है, परंतु यह सफलता आनन्द वा आशार विकास के लिए जामसकता की स्थिति है। आनन्द मनुष्य के मन, व्यक्तित्व, शरीरिक सजगता के साथ साथ मानसिक सजगता भी धारणा तथा वित्तन के विकास की स्थिति है। चंचल मन का आवश्यक है और यह मनुष्य मानसिक रूप से भग्न नहीं है नियन्त्रण में जाना सरल नहीं है क्योंकि मन की गति अन्यन्त तो उसका प्रभाव देख पर अवश्य आगता है।

योग तथा योगियों के विषय में कई प्रकार की ग्रानिशीय हैं सामान्य रूप से योगी उसे कहा जाता है जो असेन्य और असाधारण कार्य कर सके। अलग पर चलना, कीलों पर लेटना, तरह-तरह के नशे द्वारा व्यस्त पाल लेता है लेकिन इसके हड्डी की धड़कन बढ़ करना, एक पैर पर खड़े रह कर तपस्या

करना ये सब योगिक कार्य कहे जाते हैं जबकि वातस्व में यह विद्या कोई योग विद्या नहीं है बातस्व में योग का संबन्ध विचारिक चेतना के पूर्ण विद्याम की किया है। जहाँ विचारों में मानसिक अशांति है वहाँ योग नहीं है जहाँ किसी वस्तु को जोर से पकड़ने की क्रिया है वहाँ योग नहीं है। यदि विचार शांत और स्थिर है तो मनुष्य अपने जीवन की समस्याओं का शांति पूर्वक समाधान तथा साधन छुट लेता है। योग अपने भीतर जागने की कला है, किया है, इसके लिए अध्यात्म छारा सम्भाइन की आवश्यकता नहीं है। सम्भाइन में व्यक्ति कुछ काल के लिए प्रभावित होता है जबकि योग के अध्यात्म छारा वह अपने दुख और जनावर को उसके कारण सहित पूर्ण रूप ये दूर कर सकता है।

योग के संबन्ध में हजारों विज्ञानों ने अपने भाष्यने मत प्रदान किये हैं और इसका एक स्वरूप ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग के रूप में गीता में शंखचान श्रीकृष्ण ने भी स्पष्ट किया। इस संबन्ध में पतंजलि कृष्ण ने अष्टांग योग के जो करना है। इस संबन्ध में पतंजलि कृष्ण ने जो योग सिद्धान्त मूँग स्पष्ट किये उम्मी के आधार पर योग विद्या के सभी प्रश्नानुत विद्या वह योग सिद्धान्त साक्षात् योग कहा जाता है। और अध्यात्म स्पष्ट हो जाते हैं। क्योंकि इन योग स्त्रों में मनुष्य इसके लिए उन्होंने वाठ कमबद्ध उपाय अनुयायी है। जिसमें जीवन के सारे घटल की आरीकी से परख कर देह और मन प्रथम सीढ़ी से चढ़ कर अंतिम सीढ़ी तक पढ़ूँचा जाता है।

प्रस्तुत अंक में हम योग के संबन्ध में जो चर्चा कर रहे हैं योग नहीं है वहाँ शक्ति उत्तम द्वाकर विभिन्न धाराओं में समाज-स्वरूप से शरीर को श्रेष्ठ बनाने, स्वस्थ बनाने और बढ़ने लगती है तथा उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है। इसीर की शक्ति का विकास करने पर ही भ्यान देने को योगमान लिया गया है। जबकि मैंने ऐसा उपर स्पष्ट किया कि योग यह के साथ-साथ मन को भी उत्तम बनाने, अपनी शारीरिक चेतना और मानसिक चेतना का विकास कर पूर्णत्व प्राप्त हो जाता है।



पतंजलि योग सूत्र के अष्टांग साधन -

१. यम, २. निष्ठम, ३. आसन, ४. प्राणायम, ५. प्रत्याहार,

६. धारणा, ७. ध्यान, ८. समाधि। इन्हें 'योगों' भी कहा

करता है।

१. व्रत

यम योग का प्रथम व्रत है। बाढ़ी और आपरियन्नर इन्द्रियों के सम्मान की दिल्ला को 'यम' कहा जाता है। यम पौच प्रकार के होते हैं। (१) भृहिंसा, (२) सत्य, (३) अस्त्रेय, (४) ब्रह्मचर्य, (५) अपरियग।

२. अहिंसा

अहिंसा का अर्थ है किसी समय किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करना। अहिंसा का अर्थ भी प्राणियों की हिंसा का परित्याग करना ही नहीं है, बल्कि इनके प्रति कुरु व्यवहार का भी परित्याग करना है। योग-दर्शन में हिंसा को सभी ब्रह्मादियों का भाष्यर माना गया है। यही कारण है कि इसमें अहिंसा के पालन पर अत्यधिक जोर दिया गया है।

३. सत्य

सत्य का अर्थ है मिथ्या वचन का परित्याग। व्यक्ति को वैसे वचन का प्रयोग करना चाहिए जिससे सभी प्राणियों का हित हो। जिस वचन से किसी भी प्राणी का अहिंस हो उसका परित्याग परमाभ्यक्त है। जैसा वेष्टा युना और अनुग्रहन किया उसी प्रकार मन का नियन्त्रण करना चाहिए।

४. उपस्तेय

अस्त्रेय तीसरा यम है। दूसरे के धन का अपहरण करने से की प्रवृत्ति का तात्पर्य ही 'अस्त्रेय' है। दूसरे की स्मृति पर अनुचित रूप से अधिकार लेना भृत्य कहा जाता है। इसलिये इस मरोवृत्ति का परित्याग ही अस्त्रेय का दूसरा नाम है।

५. ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य चौथा यम है। ब्रह्मचर्य का अर्थ विषय वासना का ओर धूकाने वाली प्रवृत्ति का परित्याग। ब्रह्मचर्य के द्वारा किसी इन्द्रियों के संथम का आदेश दिया जाता है जो कामेच्छा से सम्बन्धित है।

६. अपरियग

अपरियग पाँचवां यम है। लोभदश अनावश्यक वस्तु के बहण का त्याग ही अपरियग कहा जाता है। उपरोक्त पाँच यमों के पालन में वर्णन व्यवस्था, देशकाल के कारण किसी प्रकार का अपवाह नहीं होना चाहिए। योग-दर्शन में मन को सबन बनाने के लिए ये पौच प्रकार के यम का पालन आवश्यक समझा गया है। इनके पालन से मानव बुरी प्रवृत्तियों का वश में कलने में सफल होता है जिसके कालबद्धरूप वह योग-मार्ग में आगे बढ़ता है।

२. नियम

नियम योग का दूसरा अंग है। नियम का अर्थ है सदाचार को प्रश्रय देना। नियम भी पौच माने गए हैं।

१. शौच (Purity)

शौच के अन्दर बाढ़ी और आन्तरिक शुद्धि समाविष्ट है। स्नान, पवित्र, भोजन, स्वच्छता के द्वारा बाह्य शुद्धि तथा शैवी, करणा, प्रसन्नता, कृतज्ञता के द्वारा आन्तरिक अर्थात् मानसिक शुद्धि को अपनाना चाहिए।

२. सन्तोष (Contentment)

उचित प्रयास से जो कुछ भी प्राप्त हो उसी से संतुष्ट रहना भंतोष कहा जाता है। शरीर-यात्रा के लिए जो नियान्त आवश्यक है उससे भिन्न अलग चीज़ की इच्छा न करना भंतोष है।

३. तपस (Penance)

सर्दी-गर्मी सहने की शक्ति, लगातार जैते रहना और खदा रहना, शारीरिक कठिनाईयों को श्रेत्रना, 'तपस' कहा जाता है।

४. स्वाध्याय (Study)

स्वाध्याय का अर्थ है शास्त्रों का अध्ययन करना तथा जानी पुस्तक के कथनों का अनुशीलन करना।

५. इश्वर प्रणिधान (Contemplation of God)

ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखना परमाभ्यक्त है। योग-दर्शन में इश्वर के ध्यान की योग का सर्वथोष्ट विषय माना जाता है।

यम और नियम के अन्तर है कि यम निषेधात्मक है जबकि नियम आवश्यक सदृश्य है।

६. आसन

आसन तीसरा योगान है। आसन का अर्थ है शरीर को दिग्गंबर मुद्रा में रखना। आसन की अवस्था में शरीर का हिलना और मन की चंचलता इत्यादि का अभाव हो जाता है, तब-मन दोनों को लिये रखना होता है। शरीर को कष्ट से बचाने के लिये आसन की अपनाने का निर्देश दिया जाता है। ध्यान की अवस्था में यदि शरीर को कष्ट की अनुभूति विद्यमान रहे तो ध्यान में बाधा पहुँच सकती है। इसीलिये आसन पर जोर दिया गया है। आसन विभिन्न प्रकार के होते हैं। आसन की धिक्षा साधक को एक योग्य गुरु के द्वारा शैक्षण करनी चाहिए। आसन के द्वारा शरीर स्वस्थ हो जाता है तथा साधक को अपने शरीर पर ज़खिकर हो जाता है। योगासन शरीर की

सबल तथा निरोग बनाने के लिये प्रावृत्तक है।

४. प्राणायाम

प्राणायाम योग का चौथा अंग है। श्वास-प्रक्रिया को नियन्त्रित करके उसमें एक क्रम लाना प्राणायाम कहा जाता है। जब तक व्यक्ति की साथ चलती रहती है तब तक उसका मन चंचल रहता है।

श्वास-वायु के स्थगित होने से चित्त में स्थिरता का उद्यम होता है। प्राणायाम शरीर और मन को बढ़ता प्रभाव करता है। इस प्रकार प्राणायाम समाधि में पूर्णतः शाहायक होता है।

प्राणायाम के तीन भेद हैं - (१)

पूरक, (२)

कृषक, (३)

उच्चक। पूरक

प्राणायाम का यह अंग

है जिसमें गहरी सांस ली

जाती है। कुम्भक में श्वास

को घूंटर रोका जाता है। रुचक

में श्वास को छाउ निकाला जाता

है। प्राणायाम का अभ्यास किसी गुरु

के निर्देशनभार ही किया जा सकता है। अब्यास

के व्यायाम से इद्यु रबल दोता है।

५. प्रत्याहार

यह योग का पांचवां अंग है। प्रत्याहार का अर्थ है इनिद्रियों के बाह्य विषयों से छुटना तथा उन्हें मन के बड़ी में रखना। इनिद्रियों स्वभावतः अपने विषयों की ओर दौड़ती हैं। योगाभ्यास के लिये ध्यान का एक और लगाना होता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि इनिद्रियों को अपने अपने विषयों से बंधी नहीं हो। प्रत्याहार के द्वारा इनिद्रियों अपने विषयों के पाठे से न चलकर मन के ऊधों में हो जाती है। प्रत्याहार को अपनाना अन्यन्त कठिन है। अनवरत अभ्यास, दृढ़ संकल्प और इनिद्रिय नियंत्रण के द्वारा ही प्रत्याहार को भग्नाया जा सकता है।

६. ध्यान

ध्यान का अर्थ है - 'विन का अर्थोऽप्य विषय पर जमाना'

ध्यान भान्तरिक अनुशासन की पहली सीकु है। ध्यान में

चित्त किसी एक वस्तु पर केन्द्रित हो जाता है। इस व्योगाल में

चित्त को अन्य वस्तुओं से छुटाकर एक वस्तु पर केन्द्रीकृत कर

देना पड़ता है। वह वस्तु बाया या भान्तरिक दोनों ही

सकती है। वह वस्तु का कोई ज़रूर अधिका

सूर्य, चन्द्रमा या किसी देवता

की ऋतिमा में से कोई भी रह

सकती है। इस अवस्था को

प्राप्ति के बारे साधक

ध्यान के दोष हो जाता

है।

७. ध्यान

ध्यान सातवां योगाल है। ध्यान

का अर्थ है अर्थोऽप्य

विषय का निरन्तर

अनुशोलन। ध्यान

में वस्तु का जान

अधिचिन्तन सम से

होता है जिसके

फलस्वरूप विषय का

स्पष्ट ज्ञान हो जाता है।

पहले विषयों के अभ्यास का जान

होता है फिर सम्पूर्ण विषय की

समरेखा विद्यत होती है।

८. समाधि

समाधि अन्तिम योगाल है। इस अवस्था में ध्येय वस्तु की चेतना रहती है। इस अवस्था में मन अपने ध्येय विषय से पूर्णतः लौग हो जाता है जिसके कलस्वरूप उसे अपना कुछ भी जान नहीं रहता। ध्यान की अवस्था में वस्तु की ध्यान-किया और आत्मा की चेतना रहती है। स्वनु समाधि में यह चेतना तुम हो जाती है। इस अवस्था की प्राप्ति को जाने से 'चित्तवृत्ति का निरोध' हो जाता है। समाधि की योग-दर्शन में साधन के स्वरूप में विविध किया गया है। समाधि की महता इसलिये है कि उससे चित्तवृत्ति का निरोध होता है।

ध्यान, ध्यान और समाधि का साक्षात् सम्बन्ध योग से है। पहले पांच अथान् यम, नियम, असान, प्राणायाम और प्रत्याहार का योग से साक्षात् सम्बन्ध नहीं है। ये पांच योगाल

तो एक प्रवास से धारणा, ध्यान
जैसे समाधि के लिये तैयारी
मात्र है। इसने पौर्व योगांग
के बहिर्भूत साधन (Ex-

ternal Organs)

और अन्तिम तीन को

अन्तर्भूत साधन

(Internal Or-

gans) कहा

जाता है।

लग्नांग योग के

चालन से चित्त

का विकार नष्ट

हो जाता है।

आत्मा अपने

द्वयीय स्वरूप को

पहचान पाती है,

क्योंकि तत्त्वज्ञान की

वृद्धि होती है।

उपर लिये गये योग न्यून

में शारीर की बाह्य शुद्धि कर्त्ता

देह में सम्बन्धित अंगों को

पुष्ट करना है। उह के लियारों को नष्ट करना है।

शारीर को उच्चता की सौर ले जाने के लिये जिसमें व्यक्ति, को सम्मान दिया है। उनके भागों का अनुसरण किया है। आपके

साधक मन के गहरे स्थान सबके उत्तर कर अपने आप से

आत्मसाक्षात्कार कर सके। योग सूत्र स्पष्ट रूप से कहते हैं

कि दूसरे की शक्ति पहचानना उसके अनुग्रहों को जानना,

आपके आदर्श नहीं हो सकते और वाहे जीवन असीरिक स्व

उससे साक्षात्कार करना, किसी दूसरे से ऐसे करना अथवा

संवर्ष करना अत्यन्त सख्त है। लेकिन आपने आप से योग्य

मानसिक और ज्ञानीक दोनों स्तरों में स्वच्छ है। शीर ऐसे ही

करना, अपने आप की शान करना अपनी वृत्तियों को एक सही

मार्ग पर लाना अत्यन्त कठिन कार्य है।

जो लोभ साधन के पश्च पर गतिशील है अथवा जिन्होंने

अपने जीवन के नक्कों को जागृत करने की किया प्रारम्भ कर

दी है उन्होंने स्वयं की शक्ति को पहचानने की किया प्रारम्भ

कर दी है। जापनी आनंदशक्ति को जागृत करने की किया

प्रारम्भ कर दी है। उनके लिये योग के दोनों साधन अत्यन्त

आवश्यक हैं। यदि योग के बारे में सारभूत रूप में कहा जाए

तो यह कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति अपने मन मणिनालक

और बुद्धि के लगान लपने वाले हैं उसका आपने आप

पर नियन्त्रण होना है। वही व्यक्ति जीवन
में भौतिक एवं आध्यात्मिक उत्तरि
कर सकता है अथवा तो वह
अपना जीवन दूसरों के
अशोत अशांति के
आनंदरिक वातावरण
में अस्तुष्ट, आनन्द
में रहिन जीवन
जीता है।

योग साधना
के लिये किसी
प्रकार के विशेष
दिन अथवा गुहाने
की जावश्यकता
नहीं है। योग
साधना में काल
अथवा उम्र भी जाड़े
नहीं आती जिस दिन
आपने निश्चय कर लिया

उम्र दिन आप योग पश्च पर
चल पड़ते हैं और यागी बनने की

किया प्रारम्भ कर देते हैं। याद रखें कि

जीवन सम्यता के प्रत्यक्ष ने ही संसार ने योगीयों

शारीर की ऊर ले जाने के लिये जिसमें व्यक्ति, को सम्मान दिया है। उनके भागों का अनुसरण किया है। आपके

आवर्ण गम, कृष्ण, नरसिंह, नानक, ईसामसीह और शेष्ठ

गुरु हों सकते हैं। संसार के भोगी राक्षसी प्रवृत्ति के व्यक्ति

कि दूसरे की शक्ति पहचानना उसके अनुग्रहों को जानना,

आपके आदर्श नहीं हो सकते और वाहे जीवन असीरिक स्व

उससे साक्षात्कार करना, किसी दूसरे से ऐसे करना अथवा

संवर्ष करना अत्यन्त सख्त है। लेकिन आपने आप से योग्य

मानसिक और ज्ञानीक दोनों स्तरों में स्वच्छ है। शीर ऐसे ही

शेष्ठ योगीयों को पायिका कह यह अक समर्पित है। जिन्होंने

संसार में नया दर्शन दिया, नया विचार दिया, मानवता को

जीवन्त रखा तथा मानव जीवन के अद्वितीय की रक्षा की।

पत्रिका के बगले अंकों में ब्रह्म बद्ध रूप से योग विद्या के
वारे में नियमित स्तम्भ दिया जायेगा जिससे पाठक स्वयं
प्रत्यक्ष योग विद्या को अपने जीवन में उतार सके। उन
सिद्धान्तों का, अस्त्रों का परिपालन कर अपने विकारों को
समाप्त कर श्रेष्ठसाधक बन कर गुरु, ईष्ट और परमात्मा से
आत्मसाक्षात्कार कर सकें। जीवन विता एवं दुःख से रहित
होकर आनन्द एवं ज्ञान से परिपूर्ण रहें।

जीवन इच्छाता है
प्राप्त किया
जा सकता है

शुद्ध साधाना॥

से

जीवन, इच्छा का वृमण स्वरूप है, इच्छा प्रत्येक मनुष्य को इच्छा होती है, और न ही हर व्यक्ति धर-परिवर्त छोड़कर जीवन में आशा बिलाने हुए उसे आगे बढ़ने की भाँति, कुछ संभासी बन सकता है, उसे तो उपरे जीवन के प्रत्येक अपार प्राप्त कर लेने हेतु प्रेरित करती है, वह इच्छा ही आज के का आनन्द लेने की ही इच्छा रहती है, और जब तक ये जीवन में प्रथान बन जाती है, जिस के कारण प्रत्येक मनुष्य इच्छाएं अनुम रहती है, उसे संतोष मिल ही नहीं पाता, एक सब प्रकार के सांसारिक सुखों को प्राप्त करना चाहता है, धन इच्छा की पूर्ण दूसरी इच्छा को जन्म देती है, लेकिन यह तो के कारण दुखी व्यक्ति धन प्राप्त करना चाहता है, तो युवतिया आवश्यक है, कि आमान्द इच्छाएं तो पूर्ण होनी ही चाहिए, सुन्दर से सुन्दर होना चाहती है, किसी में जल प्राप्त करने की, कहने हो जाता है, और यह जीवन घटीठने हुए पूरा होता है, इस का जातपर्य यह है कि सांसारिक इच्छाओं का बोई अन्त प्रकार के इच्छाहीन अनुम जीवन में कहां मधुरना है? कहां ही नहीं है?

इन इच्छाओं की पूर्णि हेतु प्रत्येक व्यक्ति प्रयास उत्तम करता है, धन कमाने के लिए हर तरह के प्रथाय किये जाते वर्ष से तो नहीं है, लेकिन इसके लिए उसे कुछ ऐसे कार्य है, सौन्दर्य स्वरूप, व्यक्तिगत बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रकार के लेप, प्रसाधन सामग्री, विशेष प्रयोग किये जाते हैं, इन सब के बाकनूब सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है, जिससे एक ऐसी कुछ आ जानी है जो कि उसके व्यक्तिगत ये विकास को रोक देती है, व्यक्ति विराशाबादी हो जाता है, और उसे जीवन भार

जीवन का यह और सांन्दर्य तो व्यक्ति के स्थाय के अधीन, पूर्ण रूप से तो नहीं है, लेकिन इसके लिए उसे कुछ ऐसे कार्य अवश्य यथावृत्त करने पड़ते हैं, जिससे कि दूसरे उसकी और आकर्षित होते हैं, उसके जीवन में उत्पाद विरलतर बना रहता है, उसके जीवन का सांसारिक पथ उसे श्रेष्ठता प्रदान करता है, जहां पुरुषों में कामोदेव उस पर ग्रस्त होकर स्थाई देती है, व्यक्ति विराशाबादी हो जाता है, और उसे जीवन भार स्वप्न में निवास कर लेते हैं, जिससे कि उसके व्यक्तिगत में आकर्षण विरलतर बना रहता है, वही स्त्रियों में रहि उसमें सुन्दरता भर देती है, जिससे कि मन एवं शरीर हर समय तरो-ताजा, उत्साह से भरपूर एवं प्रसन्न रहता है।

लीति दृष्टि एवं आनन्द

जहां इच्छा, अभिनवा, काम जीवन के सुन्दर पथ के प्रतीक है, और यही इस सांसारिक जीवन का आनन्द भी है, हर व्यक्ति के मन में न तो परब्रह्म से साक्षात्कार करने की

जीवन से धण क्षण जीवे का आनन्द है, प्रत्येक क्षण अल्पनन् प्रदत्तपूर्ण है, और जो क्षण, जो नमय चला जाता है, वह तो

जापके जीवन से कभी बायम आ ही नहीं सकता है, तो फिर जिसी शुक्र के जीवन व्यर्थ किया जाय, प्रत्येक शुग के जीवन में से, ऐसे उनमें जीवन को भरोबोर कर दिया जाय कि आनन्द, ख़ुब प्रबल निरन्तर जीवन में दौड़ता जाये, अनुभ इच्छाएँ मूर्ति देने वाले, उस प्रकार का आनन्द न तो कोई अशामान्य नहीं है, तोर न ही कोई विकृति।

व्यक्ति और व्यष्टि

यह तो निश्चिन है, कि आकाश मण्डुन में जितने भी यह है उन नमी बहों की गिरियां पृथ्वी पर आती हैं, और उन गिरियों के द्वारा बहों का प्रभाव मानव पर पड़ता है, उसी के बहुतार उस व्यक्ति का जीवन और क्रियाकलाप बन जाता है, जो उठ-प्रभाव उसकी विवार थारा, उसकी जीवन वद्धति, उसके जीवन के द्वंग इत्यादि को निश्चिन करता है, यहों की जीवन कालस्वरूप व्यक्ति के कार्यों में परिवर्तन भाला है।

प्रत्येक यह विशेष गुणों की जिए हाए होता है, और उसका प्रभाव व्यक्ति के जीवन में उन्हीं गुणों, कार्यों पर विशेष रूप से पड़ता है, लेकिन जीवन में प्रत्येक कार्य एक दूसरे से जुड़ा होता है, इसी कारण प्रत्येक यह उस प्रभाव उसके पर कार्यों पर पड़ता है, यहों को युक्त यह एवं उसका किन कार्यों पर विशेष प्रभाव व्यक्ति के जीवन में पड़ता है, विवरण दिया जा रहा है -

शुक्र - रक्ष, और्जवर्द्ध, आनन्द

यहों के सम्बन्ध में विशेष प्रकार का विवेचन करने पर यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान युग में शुक्र यह अपना प्रभाव व्यक्ति के जीवन में विशेष रूप से उल्लेख है, और उसका प्रभाव उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के प्रमाणित रहता है, शुक्र की वृष्टि से प्रभावजाली व्यक्ति के व्यक्तित्व जल्द से ही दृष्टिकर होता है उसके विषय-कलाप मिराला ही होता है।

यह शुक्र शारीरिक बीमान्दर्थ, शारीरिक रचना, अवच्छता, तेजस्विता, आकर्षण, प्रेम, काम, आनन्द रस, कल्पत्वकर्ता, दृसरों को प्रभावित करने की क्षमता, विशेष व्यक्तियों से सम्पर्क, दृसरों का कारक यह है, शुक्र की श्रेष्ठता व्यक्ति के जीवन को आनन्द से सरबोर बर देती है, सांसारिक वृष्टि से वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी प्रकार की कमी अनुभव नहीं है और जीवन का आनन्द लेना है, वह आनन्द कोई व्यक्ति करता है, उसकी बात यों है, उसके व्यक्तिना में एक ऐसा श्रेष्ठ वर्तने में प्राप्त करता है, तो कोई श्रेष्ठ भवन से, कोई आकर्षण आ जाता है, कि दृसरे उसकी ओर रिंचे चले भाले श्रेष्ठ भोजन से, तो कोई सुन्दरता के साहचर्य से, तो कोई है, उसकी बात का प्रभाव दूसरों पर अवश्य ही पड़ता है, काम क्रान्ति से, प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा का आकार फैलाता है, उसकी ओर आकर्षित करने की एक विशेष क्षमता तो रहता है, लेकिन यदि उसका शुक्र प्रबल है तभी उसकी होती है, एक प्रकार से उसके अन्वर वर्णीकरण के समान हृच्छाएँ पूर्ण हो सकती हैं।

शक्ति आ जाती है, यदि ऐसा व्यक्ति गेनका, अप्सरा, वक्षिणी

साधना करता है, तो उसे इस प्रकार की साधनाओं में तरकाल सफलता प्राप्त होती है, ऐसे साधक जीवन को रस सीन्दर्घ एवं आनन्द की दृष्टि से ही देखता है, हर स्थिति में उसमें आज्ञा की भावना अवश्य रहती है।

शुक्र को प्रबल तैयार करने

आप दिये गये विवरण से यह भी स्पष्ट है, कि आप के धीरिक शुक्र में शुक्र के समान जीवन पर प्रभाव ढालने वाला कोई दृपर यह नहीं है, व्यक्ति जैसा स्पष्ट है, कि जहाँ जीवन में आनन्द, आकर्षण, प्रेम, सौन्दर्य नहीं है वह जीवन ही व्यर्थ है, यदि आप किसी भी अपनी बात को कहते हैं, और वह प्रभावित नहीं हो पाता है, तो आपका व्यक्तिगत मिथ्या है, यदि आप किसी को कार आकर्षित हो लो यह भी चाहेंगे कि वह भी आपकी ओर उत्ता ही आकर्षित हो, आपके जीवन में उत्ताह का व्याला निरस्तर छलकता रहे।

मैंने आपने जीवन में शुक्र प्रभाव जितने भी व्यक्ति देखा है, वे व्यक्ति अपने जीवन में कभी तुर्की नहीं रहते हैं, उनमें स्वप्न, सीन्दर्घ-रस को परखने की, उसे प्राप्त करने की, जीवन के प्रत्येक क्षण का आनन्द लेने की शक्ति विद्यमान रहती है, यह स्थिति आपके जीवन में भी सम्भव है, लेकिन इसके लिए अपने जीवन को शुक्र दृष्टि से अनुकूल बनाना आवश्यक है, कई व्यक्तियों में शुक्र प्रभावशाली होता है लेकिन अन्य शहों के विशेष विपरीत प्रभाव के फलस्वरूप यह विशेष गह बन जाता है, इसी कारण उनकी हृच्छाएँ उत्पन्न अवश्य होती हैं, लेकिन पूरी ओर से पहले मुरझा जाती है, कार्य प्रारम्भ तो श्रेष्ठ रूप से होते हैं, लेकिन उधरे होकर रह जाते हैं, ऐसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व का तेज धौर-धौरे मुरझा जाता है, शारीरिक सौन्दर्य के साथ-साथ मन के भीतर की सौन्दर्य आवना, रस आवना, आनन्द आवना, उत्साह आवना मुरझा जाती है।

हृच्छा श्रौ दृष्टि शुक्रित कैलौ द्वाहे

किसी भी कार्य के प्रारम्भ होने और उसका परा होने और गोग-विलास का कारक यह है, शुक्र की श्रेष्ठता व्यक्ति के उसका पूर्ण फल प्राप्त होने की पहली सीढ़ी ही इच्छा है, यह जीवन को आनन्द से सरबोर बर देती है, सांसारिक वृष्टि से इच्छा शक्ति आपको प्रेरित करती है, कि आपको आगे बढ़ा वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी प्रकार की कमी अनुभव नहीं है और जीवन का आनन्द लेना है, वह आनन्द कोई व्यक्ति करता है, उसकी बात यों है, उसके व्यक्तिना में एक ऐसा श्रेष्ठ वर्तने में प्राप्त करता है, तो कोई श्रेष्ठ भवन से, कोई आकर्षण आ जाता है, कि दृसरे उसकी ओर रिंचे चले भाले श्रेष्ठ भोजन से, तो कोई सुन्दरता के साहचर्य से, तो कोई है, उसकी बात का प्रभाव दूसरों पर अवश्य ही पड़ता है, काम क्रान्ति से, प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा का आकार फैलाता है, उसकी ओर आकर्षित करने की एक विशेष क्षमता तो रहता है, लेकिन यदि उसका शुक्र प्रबल है तभी उसकी होती है, एक प्रकार से उसके अन्वर वर्णीकरण के समान हृच्छाएँ पूर्ण हो सकती हैं।

कई व्यक्ति शुक्र को प्रबल करने के लिए कुछ रनों का

महाराजे ने लिखा है, जिसमें हीरा (डायमंड) प्रमुख है, लेकिन इसमें करणी का पूर्ण निश्चय हो, मन प्रसन्न हो, और इच्छा प्रबल हो वो विशेष स्थितियाँ हैं, जिनप्रथम तो शुद्ध हीरा हमारा अधिक रही हो, तब अपने पूजा स्थान में अपने शायन कक्ष में अद्यता महंगा होता है, कि प्रत्येक व्यक्ति के ब्रह्म के बाहर की बात उकालन में कई भी उस साधना को सम्प्रदाय किया जा सकता महंगा होता है, और दूसरा यह है, कि हीरा यी व्यक्तियों में से केवल है, उस दिन रात्रि को सुन्दर स्वच्छ वरव धारण कर पूजा स्थान में सुगन्धित चन्द्र इत्यादि छिड़कें, बातावरण में भी नानी पांच व्यक्तियों को ही अनुकूल रहता है, अन्य व्यक्तियों को होनी चाहिए, श्रेष्ठ सुगन्धित माला पहले से ला कर रखें, यह प्रतिकूल प्रशास्त्र नहीं है बेता है, अतः इस रत्न को होनी चाहिए, श्रेष्ठ सुगन्धित माला पहले से ला कर रखें, पहिले में विशेष साधारणी बरतानी चाहिए, इसके साथ यह 'शुभ्रात्मक यज्ञ' को अपने सामने पीले वस्त्र पर थांचों वाले गवायात्रक यज्ञ है, कि रत्नों का प्रभाव अन्यान्य सीमित ही रहता है, रसन के चारों ओर धार लेकड़ी की खटिया शी स्पष्ट है, कि रसनों का प्रभाव अन्यान्य सीमित ही रहता है, रसन के चारों ओर धार लेकड़ी की खटिया शी स्पष्ट है, कि रसन के चारों ओर धार लेकड़ी की खटिया शी स्पष्ट है, जब कि साधना में ऐसी शक्ति विद्यमान रहती है कि गवायात्र शुक्र साधना में यह आवश्यक है जिसकी शुक्र पक्ष चन्द्र देव है, और उसे कोलम डारा बांधना आवश्यक है।

३५४ सारिग्या

शुक्र साधना के संबंध में हजारों वर्षों से विभिन्न ग्रन्थों में आह्वान कर कि शुक्र देव आपके नाम से जायें। चाहे रात्रि कृत “उहरीश तत्र” ही अथवा “विश्वगित्र भविता” हुए स्थित हो जाये। अथवा “शास्त्र प्रमोद” ही, इन सभी ग्रन्थों में शुक्र को प्रधानता देने वाले वर्णकरण एवं आकृषण से विशेष रूप से जोड़ा गया है, तेविन शुक्र केवल वर्णोकरण एवं आकृषण का ही कारक नहीं है, वह तो पूरे व्यक्तित्व में अद्वितीय कृति देने वाला, व्वच्छता, सुन्दरता, विदेश-गमन, पूर्ण तुमि एवं आनन्द का कारक गया है।

मैंने अपने अनुभव के आधार पर यहाँ से संबंधित सभी गंधों का अध्ययन करने के पश्चात् जो सरल नाशना का निचोड़ किया है, वह प्रतिका के प्रत्येक पाठक के लिए निःचल ही उपयोगी सिद्ध होगा।

इस भाषण में किसी विशेष मुहर्त की आवश्यकता नहीं है, किसी भी शुद्धिकार को यह सधान प्राप्तमण की जा सकती है, सबसे ही प्राणि शुद्धिकार को सामान्य पूजन कर इसके विशेष भवत का सिवधिन रूप से जप किया जाय तो शुद्ध निरन्तर प्रबल बनता रहता है, और आपकी इच्छा पूर्ति पूर्ण रूप से प्राप्तमण हो जाती है।

सार्वजनिक प्रतीक्षा

कुछ यह दिन में कपना पूरी प्रभाव विचारे हैं और कुछ गह रवि में, शुक्र और इसी प्रकार रवि तत्व प्रधान यह है, उत्तर: इसकी साधना रवि में ही प्रथम प्रहर के पश्चात अर्थात् १० बजे के पश्चात ही सम्पूर्ण करनी चाहिए।

इस स्थान पर देते हो उपकरणों की विशेष आवश्यकता जहाँ है, प्रथम तो है, "शुक्रांक बन्द" और दूसरा 'काम रूप मणि माला' इनके अतिरिक्त और कोई उपकरण उस स्थान पर आवश्यक नहीं है।

इसका बोर्डिंग के जब आपके मन में शुक्र साधना रूप से अद्वितीय है। साधना सामग्री पैकेट - 330/-

শক্তি প্রয়োগ

संतमकांचनतिभं द्विभुजं दयालु
पीताम्बरं धृतसरोरुहृदन्तं शतम् ।
क्रौंचालतं चासु रसेऽवधाव शुक्रं
रमरेत क्विनवलं हृदयामस्तुजेऽहम् ॥

इसके पश्चात् कामरूप मणिमाला से शुक्र लोन मंत्र का

शक बीज मंत्र

॥ ३५ ॥ जो जहेश्वरतय शक्राय नमः ॥

जब पांच माला में पूर्ण हो जाय तो उसके मन में जो भी अच्छा, चाहे वह कार्य सम्बन्धी इच्छा हो, वर्जीकरण सम्बन्धी इच्छा हो, विवाह सम्बन्धी इच्छा हो अथवा कोई अन्य इच्छा अतः करने हए पूर्णता प्राप्त करने की प्रार्थना करते हुए शुल्कटक पंख को आर्द्धते पृष्ठ सार खंड भासण कर लें तो उसी स्थान पर कुछ देर बैठे रहें, उसके पश्चात कामरूप मध्य माला भासण कर ले और यंत्र को तात्पर में बंध लें।

बहु साधना आने वाले शक्तिवार को केवल एक माला में जप से नहीं बल्कि उस प्रकार भी उत्तम शक्तिवार का सापना करने रहे।

जब भी किसी विशेष कार्य के लिए जाना हो, अथवा किसी महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करना हो, उस दिन गुरुकाटक धन्र का पूजन अवश्य करें, सामान्य कार्यों के छेत्र इस विशेष ग्रन्थ और माला को प्रयोग में न लावें।

यह साधन निश्चय हो आपके जीवन में विशेष आनंद प्रवाहित करने वाली एवं कामना भी, इलाजों की पूर्ति में पूर्ण समर्पण सम्पादी ऐस्टेट - ३५/-

तत्त्वात् भुक्त होके के

पांच उपाय

एवम्

तत्त्वात् भुक्ति साधना

वर्तमान जीवन चिन्ताओं से छिरा हुआ रहता है, जहाँ व्यक्तिकि भी व्यक्तिसाथ, गौकरी या कार्य में संलग्न होता है, परन्तु उसे निरन्तर कोई गत कोई चिन्ता बढ़ी ही रहती है, और इस चिन्ता से कई बीमारियां पैदा हो जाती हैं।

स्वामी शिव और शशि शशि ने इस लेख में उन सुनियोगों का विवेचन किया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति तत्त्वात् भुक्त होकर आगन्तुपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है।

यह लेख प्रत्येक पाठक-पाठिका के लिए उपयोगी है, गृहस्थ साधक इसमें भाग उठाएं, उसी उद्देश्य से यह लेख प्रस्तुत है-

आज का सुग भरुरक्षा और व्यस्ना का होने की वजह से चिन्ता का भीधा सम्बन्ध पाचन संस्थान पर पड़ता है, इसमें गतुष्य ज्यादा से ज्यादा तनावयुक्त रहने लगा है, वह बीमारी-पेट की आतों में वृण पड़ जाते हैं, निसकी वजह से पेट बद्ध, केवल प्रारतवर्ष में ही नहीं अपितु पूरे संसार में व्याप है, और भूख न लगना, नीद न भाने की शिकायत बनी रहती है, प्रत्येक तीन में से एक व्यक्ति की मृत्यु चिन्ता की वजह से इसका सम्बन्ध रक्त बहाव से भी है, चिन्ता की वजह से होती है, अनिद्रा, रक्तचाप, इन्फरेंस, मस्तिष्क रोग, पेट से नाड़ियों शिथिल पड़ जाती है, और वे रक्त संचार उनी तत्परता सम्बन्धित बीमारियां आदि रोग केवल चिन्ता की वजह से ही से नहीं कर पाती जितनी तत्परता से होनी चाहिए, फलस्वरूप होते हैं और यह यह चिन्ता न हो तो व्यक्ति मैकड़ों रोगों से इब्य को पूरा रक्त नहीं मिल पाता और 'डार्ट अटैक' की मुक्ति पा सकता है, उच्च वर्ग का प्रत्येक व्यक्ति ब्लड प्रेशर, सम्भावना बन जाती है, डाक्टर ऐसी स्थिति में बवाड़ियों के अजीर्ण, अपच आदि बीमारियों से ग्रस्त है, डाक्टरों के अनुसार गार्डन से उपचार प्रारम्भ करते हैं, परन्तु इसके मूल स्रोत

पर नहीं पढ़ूँयने, जबकि इस प्रकार वी बीमारियों का मूल पश्चिम के प्रयोग

कारण चिन्ना है, और यदि चिन्ता भिटाने का उपाय किया जाय तो इस बीमारियों का रुक्षयो हल हो सकता है।

चिन्ता होने के कई कारण हैं, जिनमें अलात भव्य प्रधान हैं - आधिक सूखा, पूरी की विवाह, पारिवारिक कलह, ज्यापार का व्यक्ति वह समय एक अस्तरका यो अनुभव होने लगी है, यहाँ की अस्तकलता, जीवन की ग्रस्तरका आदि कई कारण हैं, और इसकी वजह से वहाँ जान्महत्त्व का प्रनिश्चित बहुत बहुत जिसकी वजह से चिन्ताएँ व्याप हो जाती हैं, और इन चिन्ताओं गया है, और यह पश्चिम के लिए एक चिन्ना का विषय बन से व्यक्ति कंकाल भाव बन कर रह जाता है, आवश्यकता इस गया है।

बात की है, कि उन चुकियों को अपनाये विषय से दम चिन्ना

पश्चिम में मानसिक तनाव जल्दी से ज्यादा बह नहीं है, न सो उनका जीवन सुखमय रहा है, और न उनका पारिवारिक

नीति। हर समय एक अस्तरका यो अनुभव होने लगी है, यहाँ

तनाव क्यों -

उत्तर वा ज्याकि तनावों से धिरा हुआ है, और यदि यही रुप में रुक्षा जाय, तो उसके दिन भर के किनार कलापों में हंसी और प्रसाहता के लाग बहुत कम है, तनाव चिन्ता और परेशानी ने समय ज्यादा व्यतीन होता है, और उसके पास जो मानसिक

शक्ति होती है, उसका उपयोग उन तनावों से मुक्ति पाने में व्यतीत करना पड़ता है, फलम्बनपूर्व वह अपने जीवन में जो सम्बन्धनम् कार्य करना चाहता है, अपनी उत्तरित के लिए जो कठु प्रघटन करना चाहता है, वह प्रयत्न नहीं कर पाता, और उसे विभिन्न कारों में अपनी शक्ति व्यवहार करनी पड़ती है।

और यह भी भली भांति रुक्ष हो गया है, कि इससे जीवन का नवाचे प्रबलनम् शनु मानसिक तनाव है, विज्ञान भी दस बातों को ज्योकार करता है, कि तनाव की वजह से ही व्यक्ति बल्ल प्रेसर, डार्ट अटक, और अन्य सेकड़ों प्रकार की बीमारियों से विर जाता है, तनावों की वजह से ही उसका शरीर रुक्ष समय से घटने ही जाता है, और इन तनावों की वजह से ही वह

ठीक यही चिन्नि प्रारंभ की गयी है, यहाँ के लोग भी आज मुझ हो सके और जीवन का पूर्ण जीवन प्राप्त कर सके।

के बातावरण में कई प्रकार के तनावों ने गम्भीर है, प्रश्नक

व्यक्ति का तनाव अन्य है, परन्तु इन तनावों का प्रभाव तो

गम्भीर पर पड़ता है, वह एक सा ही है, इस तनाव की वजह से

वह समझ में ही बड़े होने लगा है, उसके लिए की रीतक

समाप्त हो गई है, और आत्मगङ्गा का प्रतिशुद्ध जीवन में भी

बहुत गया है।

जो विपरित परिणाम युक्ति की भोग्यते पड़ रहे हैं, वैष्ण वी परिणाम रिक्तियों की भी भोग्यते के लिए न नवर जीवा गढ़ रहा है, वे भी कई प्रकार के तनावों पर परेशान रहने लगते हैं, उनके सिर के बाल छड़ने लग गये हैं, आंखों के चारों ओर काले घब्बे बनने लग गये हैं, और बेहरे पर जो कामलता, सुन्दरता और स्नेहधनता होती थाहिए, वह नमाम होने लगती है, इसलिए मैं जो उपाय बता रहा हूँ, वह वेतन पुष्टि के लिए ही नहीं है, रिक्तियों के लिए भी भग्नान स्वयं से लाभ होता है।

और यह जीवन ने सही है, कि याकि मानसिक तनाव से मुक्त होता है, नभी वह गाढ़ना कर सकता है, तभी उसका ज्ञान केन्द्रित हो सकता है,

नभी वह अपनी ऊर्जा का सदृप्दयन कर सकता है, और नभी वह अपनी ऊर्जा के द्वारा निरन्तर उड़ानी की भाव उत्तराप्ति होता हूँ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

पश्चिम में मानसिक शक्ति पर जारी हो रहा है, और उन्हें अनुभव किया है, कि यदि व्यक्ति के जीवन में ननाव न हो, तो वह जीवन से पांच हजार गुना ज्यादा कार्य कर सकता है, परन्तु उसके शरीर में जो ऊर्जा पैदा होती है, उसमें से अधिकांश ऊर्जा ने परिस्थितियों से नूरने में ही व्यनीम हो जाती है।

पिछले दिनों यूरोप में दससे भव्यनिधियों की हुई पुस्तकें प्रकाशित हुई, और उस विज्ञान को "फेन हीलर" के नाम से जाना जाता है, इसका तात्पर्य यह है, कि दौदि हम अपने आप से पहला है।

इन मानसिक चिन्ताओं को दूर करना से सम्बन्धित कोई औषधि जीवन में उपलब्ध नहीं है, यदि मानसिक तनाव ने चिरा हआ व्यक्ति डाक्टर के पास जाता है, तो डाक्टर उसे नीद को गोली दे देता है, वह कुछ समय के लिए बेन्दू या जन्म फटा रहता है, परन्तु जब उसकी शारीर ज्युनता है, तो वह किर उन्हीं ननावों से विर जाता है।

उणका बारपा लह हुआ, कि इन औषधियों से तनाव समाप्त नहीं होता, कुछ समय के लिए हम गायिन जम्बू हो जाते हैं, कुछ समय के लिए हम बेन्दू अव्यवह हो जाते हैं, और फिर इन नींद की गालियों का विपरीत प्रभाव हो हमारे शरीर पर पड़ता है।

बहुत और विभवास पैदा कर सके, यदि हम किसी भी घटना आये, मैंने उन्हें कागज पर उतार लिया। को सकारात्मक रूप से देख सकें, और यदि उस घटना को विशेष विधि से जान सकें, तो हमारी सारी ऊंचाई स्वयं ही बच जाएगी, और उस ऊंची के हारा हम अपने जीवन के बहुत अधिक कार्य भली प्रकार से सम्पन्न कर सकेंगे।

कैसे मुक्त हो तनाव से पांच सकारात्मक उपाय

१- होशी को होने दीजिये

जो घटना घटित होने वाली है, वह घट कर के रहेगी फिर उसके लिए अधी से चिन्ता करने की क्या जरूरत है, यदि कोई दुर्घटना घट गई है, तो उस पर चिन्ता करने की आवश्या उस परिस्थिति को स्वीकार कर जीविते ऐसा करने से आप आधी विजय प्राप्त कर लेंगे, चर्चित ३० वर्ष की अवस्था में जापानी हमलों से जारी इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने तो उनके चारों ओर चिन्ताएँ ही चिन्ताएँ थीं, जब उन्हें पुड़ा गया कि आप इतनी अधिक चिन्ताओं से परेशान नहीं होते तो उन्होंने कहा, जो घटना घटित होने वाली है, वह घटित होगी ही, मैं उसे ठान नहीं सकता, यदि घटना घट गई और मैं चिन्ता से बहत रहा तो उस विपरिति का नामना भी नहीं कर सकूँगा इसकी अपेक्षा तो जो भी समस्या आयेगी, उस भयसे उभका कोई न कोई शरस्ता निकल ही जायगा और तब मैं उससे संघर्ष कर उस पर विनय प्राप्त कर लूँगा।

चिन्ताओं पर विजय प्राप्त करने का पहला नूल गंत्र यही है, कि हम मानसिक रूप से पूर्णतः स्वतंत्र रहें और होनी को स्वीकार कर लें, ऐसा ही व्यक्ति जीवन में सफलता पा सकता है।

२- अधिकतर आशंकाएँ दूरी ही रहीं

इम कई प्रकार की भावी चिन्ताओं से चिन्तित रहते हैं, यदि ऐसीडेन्ट हो गया तो क्या होगा, यदि किसी ने नुकसान पहुँचा दिया तो मैं क्या करूँगा, नीकरी कूट जायगी तब भैं बरा क्या हाल होगा, व्यापार में बहुत उतार चढ़ाव है, यदि दिवालिया हो जाया तो क्या होगा, मादि ऐसी आशंकाएँ बराबर मापसे में व्याप रहती हैं, जिसकी वजह से हम चिन्तित रहते हैं, एक बार जब मैं कई कारणों से चिन्तित था तो मैंने शास्त्र चित्र से बैठकर विचार किया कि वे कौन कौन सी चिन्ताएँ हैं, जिसकी वजह से मैं परेशान हूँ, तो मुझे चार कारण नज़र

1. मेरा पुत्र बीमार है, वह इकलौता पुत्र है, यदि वह मर जाया तो क्या होगा?

2. अब भेर पासे बहुत कम पैसा बचा है, जीवन नियां कैसे होंगी?

3. मेरा मकान जारी है, और दीवारें कमज़ोर हैं, पर मग्या तो हम सब तब कर मर जायेंगे।

4. पुत्री बड़ी ही गर्भ है, और यदि इसकी सगाई जल्दी नहीं हुई तो क्या होगा?

मैं इन चारों आशंकाओं से अत्यधिक चिन्तित था, और दिनों दिन बुलना जा रहा था, यह कागज मैंने अपनी फाइल में रख दिया था, और फिर अपने कार्यों में लग गया था, मात्र भर बाद संयोगवश फाइल को उत्तरने पलतने पर यह कागज मेरे हाथ लगा तो इसमें एक भी घटना घटित नहीं हुई, मेरा पुत्र बीमार था वह सही इलाज से ठीक हो गया और उसके किसी प्रकार कोई तकलीफ नहीं रही, महीने भर बाद ही मुझे एक अतिरिक्त काम मिल गया जिसकी वजह से मेरी आर्थिक चिन्ति अनुकूल हो गई, उस वरस्तात मैं मेरा मकान गिरा नहीं और सर्विकों में मैंने उसकी वापिस मरम्मत करवा कर ठीक करवा दिया, पुत्री की सगाई भी तक हुई नहीं है, परन्तु जब पुत्री सम्मानना है, और बातचीत अन्तिम स्तर पर चल रही है।

इस प्रकार जिन चार समस्याओं से मैं चिन्तात्मक आरंभ गया था, उनमें से तीन चिन्ताएँ तो अकारण ही थीं, अन्त स्पष्ट है, कि हम जिन आशंकाओं से परेशान रहते हैं, वे आशंकाएँ घटित नहीं होती अतः भावी आशंकाओं से चिन्तित नहीं होना चाहिए, यदि ऐसा निश्चय भन में आ जाता है, तो कई समस्याएँ और चिन्ताओं से हम मुक्त हो सकते हैं।

३- चिन्ता को आप मिटा दें

चिन्ता और आपके बीच बराबर संघर्ष है, या तो चिन्ता आपको और आपके स्वास्थ्य को मिटा के या यदि आप ने पोर्पता है, तो आप चिन्ता को मिटा देंगे।

चिन्ता को दो तरीकों से मिटाया जा सकता है, पहला तो यह कि उन कारणों की खोज कीजिये जिनको वजह से आपको चिन्ता है, यह पता लगाएं कि वे कौन से कारण हैं, और उनसे क्या अनिष्ट हो सकता है, इतना होने के बाद उन दृष्टियों को दृढ़ निकालिये जिसके माध्यम से आप चिन्ता पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरा नरीका यह है, कि आप अधिक से अधिक व्यस्त होती हैं, परन्तु उसे कुछसे से और चिन्ता करने से कोई रखती है। मस्तिष्क निरन्तर क्रियापूर रखता है, परन्तु उसमें एक विशेषता है, कि वह एक बार में एक ही बाल सोव सकता है, जो बात एक साथ मस्तिष्क नहीं सोता। यदि आप कुछ नहीं करते तो वह चिन्ता के बारे में ही वा भावी पल्ली परन्तु उसे आशंकाओं के बारे में ही सोचता रहेगा और आपको धुन की तरह खोखला बना देगा। इसके लिए आप दूसरे कार्यों और प्रबृत्तियों में संलग्न हो जाइये। ज्यादा से ज्यादा अपने आपको व्यस्त रखिये, उन पूस्तकों का अध्ययन कीजिये जो आप में संबंधित घटनाओं के बारे में सोचने का समय नहीं छोड़ती।

जाइये, पितों के साथ बातचीत में ज्यादा समय लगाये और अन्य प्रबृत्तियों में अपने आपको लौंग कर दीजिये। ऐसी स्थिति पैदा कर दें कि मस्तिष्क को उन भावी आशंकाओं के बारे में सोचने का समय ही न मिले और जब मस्तिष्क को चिन्ता से संबंधित घटनाओं के बारे में सोचने का समय भी नहीं बिल्कुल तो फिर चिन्ता भी नहीं होगी।

चिन्ता उस समय आप पर हावी होने की कोशिश करती है, जब आप खाली होते हैं, आपने स्वयं ने अनुभव किया होगा कि जब आप व्यस्त होते हैं, तब आपको किसी प्रकार का तनाव या चिन्ता नहीं होती परन्तु ज्योंही आप रात को खाली होते हैं, त्योंही चिन्ता आपके मस्तिष्क पर नियन्त्रण कर लेती है, और आपको परेशान कर डालती है।

चिन्ता मुक्त होने के लिए अपने आपको अन्यथिक व्यस्त रखिये, इनमा अधिक व्यस्त, कि चिन्ता आप पर हावी नहीं हो सके।

४- दूसरों से उम्मीद मत रखिये

इमारी चिन्ताओं का एक कारण यह भी है, कि हम दूसरों से कई बातों की उम्मीद रखते हैं, यदि हमने किसी के लिए भलाई का कार्य किया है, तो सहायता की उम्मीद रखते हैं, हम उम्मीद रखते हैं, कि पन्नी इमारी सेवा करे, हम उम्मीद रखते हैं, कि बीपार होने पर विव हाल चाल पूछने के लिए आवें और हम उम्मीद रखते हैं, कि हमारे पुत्र इमारी सेवा करे और मदद करे, इस प्रकार के विचार या दूसरों से उम्मीद रखना ही चिन्ता का कारण है, आज के युग में व्यक्ति पूर्णतः स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित हो जाये हैं, किसी को किसी का परवाह नहीं है, इसलिए हमें पूछनों की कहावत याद रखनी चाहिए कि ‘नेकी कर कुए में ढाल’।

कृतञ्जीव और अशिक्षित सन्तान साथ से ज्यादा दुखदायी

होती है, परन्तु उसे कुछसे से और चिन्ता करने से कोई प्रयोगन सार्वत्र नहीं होता, यदि पन्नी पूरी सेवा नहीं कर पाती तो आप व्यार्थ में इस तनाव को लेकर बेठने से अपना ही नुकसान करेंगे, जीवन में जो कुछ हो सके आप दूसरों के लिए कार्य करते रहेंगे तो आपके जीवन में चिन्ता और तनाव के द्वारा कम ही होंगे, इस सुनहरे नृत्र को ब्राह्मण याद रखिये कि मैं मात्र तटस्थ हूँ और जो कुछ हो रहा है, नियन्ता की कृपा से ही रहा है, ऐसा सोचने पर आप पूर्णतः शांति अनुभव कर पूरा कर लाजिये जिनका पूरा करना जरूरी है, धूमने निकल सकेंगे।

५- दिविस रह कर प्रभु के चरणों में अपने आपको सौंप दीजिये

निन्दा सबसे मधुर रस होता है, व्यक्तियों को निन्दा करने में आनन्द की अनुभूति होती है, यदि आप कुछ हैं, आपका कुछ व्यक्तिगत है, यदि आप कुछ कर रहे हैं, और यदि आपने अपने प्रयत्नों से जीवन को ऊचा उठाया है, तो निश्चय ही सेकड़ों शत्रु रक्षते ही पैदा हो जाये होंगे, और वे आलोचना करेंगे ही क्योंकि आलोचना करने से तथा निन्दा करने से उन्हें मधुर रस की अनुभूति होती है, तथा इससे सुख मिलता है।

परन्तु आप चिन्तित न हो, याद रखिये कि सहक पर पढ़ द्दृष्टि को कोई लात नहीं मारता, परन्तु धावल धूर को लात मारकर प्रत्येक को सुख मिलता है, यदि आपकी आलोचना हो रही है, गालियां मिल रही हैं, स्पात में निन्दा हो रही है, तो आप अपने आपको निन्दा रखिये, क्योंकि इन अनुभूतियों से तो प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को गुजरना पड़ा है, जिसमें भी कुछ बनने का प्रयास किया है, ऐसी स्थिति में आप अपने आपको प्रभु के चरणों में लौंग कर दें, आप भूल जायें कि आपका कुछ अस्तित्व है भी, ऐसा करने पर आप पूर्णतः चिन्ता मुक्त होंगे।

यूरोप में और पश्चिम में जिसे ‘पेश ईलिंग’ कहा गया है, भारतवर्ष में उसे ‘तनाव मुक्ति साधना’ के नाम से पुकारा गया है “संख्योपनिषद” में इस तनाव मुक्ति के बारे में महत्वपूर्ण चिन्तन और उपाय बताया गया है, उसमें तो यहां तक स्पष्ट किया गया है, यदि व्यक्ति के लिए सांस लेना आवश्यक कार्य है, तो नित्य पांच मिनट तक इस स्पाधना के लिए व्यय करना भी आवश्यक है।

और यह नित्य केवल पांच मिनट की साधना है, जहाँ अर्थों

में देखा जाय केवल पांच मिनट का प्रयोग है और यदि साधक निन्य इस प्रयोग को सम्पन्न करे तो जहाँ उसमें मानसिक शक्ति का विकास होता है, वहीं उसमें ऊर्जा का संचरण भी होता है, और वह निश्चित रूप से तनावों से मुक्ति पाता हुआ, उसने की ओर अभ्यन्तर हो जाता है।

मैंने स्वयं इस प्रयोग को आजमाया है और मैं पिछले पन्द्रह वर्षों से इस प्रयोग पर निम्न पांच मिनट व्यवहरता हूँ और मैंने यह अनुभव किया है कि यह संसार का स्वयंसम प्रयोग है क्योंकि इसमें ज्यादा साधना या पूजा की आवश्यकता नहीं है, कोई जटिलता या क्रिया पद्धति नहीं है, केवल पांच मिनट इस प्रयोग को सम्पन्न करना है, और व्यक्ति स्वयं इसका परिणाम बुझ ही दिनों में अनुभव करने लगेगा।

पश्चिम में जो पद्धति विकसित हुई है मेरी राय में उसका आधार भी यहीं ‘‘तनाव मुक्ति साधना’’ है क्योंकि इस साधना में जिस प्रकार से क्रिया पद्धति समझाई है, ठीक उसी क्रिया पद्धति की यूरोप के लोगों ने आजमाया है, यह अलग बात है कि उन्होंने इसे केवल हीलिंग के नाम से पुकारा है, पर उन्होंने इसके द्वारा जो अनुकूल परिणाम अनुभव किये हैं वे आश्वर्य चकित कर देने वाले हैं, इसकी बजह से उनके मानसिक तनावों में कमी आई है, स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है और अपनी पूरी ऊर्जा के साथ आगे की ओर बढ़ दे।

तनाव मुक्ति साधना प्रयोग

इसके लिए किसी विशेष समय या मुहूर्त आदि की आवश्यकता नहीं है, साधक किसी भी विन से इस प्रयोग का प्रारम्भ कर सकता है, इस प्रयोग को पुनर्ष या स्त्री, बालक या बालिका, वृद्ध या वृद्धा कोई भी सम्पन्न कर सकता है, क्योंकि इसके अनुकूल परिणाम ही अनुभव हुए हैं।

इस प्रयोग के बारह बिन्दु हैं, जिसका प्रयोग ग्रन्तेक व्यक्ति को करना चाहिए यूरोप में इसे ‘‘ट्रैवल प्वाइंट्स’’ के नाम से पुकारा जाया है, वे बारह बिन्दु निम्न प्रकार से हैं।

१- साधक जब भी उठे, स्नान कर एकान्त नद्यान में बैठ जाय, उस समय साधक को हीले ढाले बस्त्र पहिनने चाहिए, कल्पे द्वाएँ बस्त्र ध्यान में ब्राधा डालते हैं।

२- इस कार्य के लिए विशेष स्वप्न से निर्भित ‘‘तनाव-मुक्ति यंत्र’’ को अपने सामने रख दें, और उसके पास ही गुरु का प्रमाणिक चित्र स्थापित कर दें, या निसकी आप पूजा करते हैं, जिस देवता को आप मानते हैं, उसका चित्र सामने स्थापित कर दें।

३- इसके बाद तीन बार ॐ की ध्वनि का उच्चारण करें।

४- फिर सामने जो ‘‘तनाव मुक्ति यंत्र’’ रखा हुआ है, उसके मध्य में एक टक देखने का प्रयत्न करें, और मन में यह चिन्तन करें, कि अलीकिक शक्ति को प्राप्त कर रहा है।

५- यदि मन गटक रहा हो, तो फिर इस यंत्र पर केन्द्रित कर मन को एकाश करने का प्रयत्न करें, यों यह महायंत्र विशेष स्वप्न से इसी कार्य के लिए निर्भित है, और इसकी जो परलौकिक किरणें विकल्पी हैं, वे साधक के हृदय पर सोधा प्रभाव डालती है, और उसको मानसिक एकाशयता को मजबूत करती है।

६- इस महायन्त्र के मध्य में बिना पलक अपकाएँ बराबर देखने का प्रयत्न करें, जिनमा ज्यादा हो सके आप स्थिर दृष्टि से इस महायन्त्र के मध्य में देखने रहें, जिससे कि शक्ति संपत्ति उस यंत्र की किरणें साधक के लिए अनुकूलता प्रदान कर सके।

७- जब आख्ये शब्द जाय या यत्क इपक जाय, तो आप में रखे हुए जल से आंखों औ हलके से भिगो दें, और फिर पोछ कर फिर इसी प्रकार से इस यंत्र के मध्य में देखने का प्रयत्न करें।

८- जब यह प्रयोग आप सम्पन्न कर रहे हों, उस समय आप प्राप्त का बातावरण गान्त रहे तो ज्यादा उचित रहेगा, साथ ही साथ आप एक अग्रजता और शुद्ध धूत का दीपक लगा सकते हैं

९- इस महायंत्र के मध्य में एक टक देखने में पूर्व ॐ की ध्वनि के बाद पांच मिनट मन्त्र जप करें, और जब यह प्रयोग समाप्त हो जाय तब भी पांच मिनट के लिए इसी मंत्र जप को सम्पन्न करें।

१०- यह मंत्र है -

॥ ॐ सौर्यमङ्गलं ॐ ॥

११- जिस यंत्र पर आप अभ्यास कर रहे हों, उस पर केवल आप ही नित्य अभ्यास करते रहें, एक यंत्र दो या तीन लोगों के लिए उपयोगी नहीं हो सकता, क्योंकि इसकी परलौकिक किरणों का स्वीकार संबंध आपके मानसिक किरणों से स्थापित हो जाता है, और दूसरे जो ऊर्जा मंडल निर्भित होता है, वह आपको शक्ति देने में समर्थ हो पाती है।

१२- वशसंभव ज्यादा से ज्यादा समय तक एक टक बिना पलक अपकाएँ इस दुर्लभ मंत्र सिद्ध महायन्त्र के मध्य में

तत्त्वावधि मुख्य उठाने के दल अवौटम

उपाय

१. जन की चिल्हा करिए ... कल ने दोगा देखा जायेगा।
२. अपनी स्थिति और विपरीत को स्वीकार कर दी, स्थिति को रचीकार करना, विन्दतामें पर विजय पाना है।
३. समस्या के कागज पर लिखिये, उसका विश्लेषण कीजिये फिर उसका हल ढूँढ लीजिये।
४. अत्यधिक घटना रहिए, निससे ऊपरको चिल्हा करने का समय ही ज़िले।
५. तत्त्वावधि आपको बरबाद कर दे, उससे पहले आप उसे समझ कर दे।
६. जिन भावी घटनाओं से आप चिन्तित हैं, हो सकता है वे घटनाएं घटें नहीं, फिर आप इन्हीं से चिन्तित क्यों हैं?
७. दुर्घटना, चिन्ता या तत्त्वावधि को एक वीर दुरुष को टरह रचीकार कीजिये।
८. दिपालि या तत्त्वावधि का समाधान एक आदर्श में तो होगा नहीं, फिर ऊपर दुरुष तरों हो रहे हैं।
९. जो घटना घटित हो चुकी, उसे भूल जाइये और व्यरुत हो जाइये।
१०. विनापता, राजनीशक्ति एवं निर्णय से आप तत्त्वावधि पर संतुलित पा सकते हैं।

देखने के अभ्यास करें, यह अभ्यास धीरे धीरे बढ़ते रहे, यदि बाहर मिनट तक अभ्यास हो जाता है, तो अपनी साधनों को पूर्ण समझो।

उपरोक्त बारह विन्दु आपको जिन्दगी और जापकी भफलता के मूल सूत्र हैं, क्योंकि इस प्रकार करने से जहाँ रक्षा घंटों में आपको ज्यादा से ज्यादा पाव या दस मिनट व्यग करने पड़ते हैं, पर इन प्रकार के प्रयोग से जो परालीकिक विरण प्रवर्हित होती है, वे आपके पूरे व्यक्तित्व को बदलने में सहायक होती है, और आप मानसिक तत्त्वावधि मुक्त हो जाते हैं।

है।

इस प्रयोग का यत्वमें बहुत लाभ यह है, कि किसी भी प्रकार की विपरीत या परेशानी आ भी जाय, तो भी आप विचलित नहीं होते, और उस बाधा या समस्या से जूँझने की क्षमता आप में आ जाती है, और आप पूरी शक्ति से उस समस्या के निराकरण में लग जाते हैं।

इसके अलावा इस प्रयोग से आपके चेहरे पर एक विशेष आभा मण्डल बन जाता है, जिसका प्रभाव सीधे सामने वाले व्यक्तित्व पर पड़ता है, वहाँ सामने वाला व्यक्ति आपका आधिकारी हो या विरोधी। आप जब उसके सामने जाते हैं तो इस आभा मण्डल की वजह से वह निस्तेज हो जाता है और आपका व्यक्तित्व उस पर हाथी हो जाता है, फलस्वरूप जीवन में कार्य सम्पन्न करने में, अपना काम निकालने में और सफलता पाने में ज्यादा सुविधा हो जाती है।

इससे आपको ऊर्जा व्यर्थ में व्यय नहीं होती और उस ऊर्जा से आप रचनात्मक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं, तथा उत्तरि के लिए विशेष प्रयोग विशेष कार्य और विशेष चिन्तन सम्पन्न कर सकते हैं।

इस प्रयोग से कई प्रकार के रोगों पर मनव स्वयं विनाय प्राप्त कर लेता है, पेट में संबंधित रोगों और ब्लड प्रेसर आदि में तो यह महान्वर्पण तथा लाभदायक है, जो काम लगावी स्वयं लगने के बावजूद भी औषधि नहीं कर पाती, वह कार्य केवल वह छोटा सा प्रयोग सम्पन्न कर लेता है।

यदि आप यात्रा पर हैं, तो इस यंत्र को आपने साथ में रख रखने हैं, वहाँ पर भी समय मिले तो पांच दस मिनट के लिए इस अस्थायल को पूरा कर रखते हैं।

इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि यदि आपको किसी विशेष जागीकारी से किसी विशेष कार्य के लिए मिलने जाना है, तो जाने के ठीक पूर्व यह अभ्यास करके जाय, और आप रखने इसका चमत्कार देख ले, कि जो कार्य सम्पन्न होने की संभावना हो नहीं थी, वह कार्य देखने देखते पूरा हो जाता है।

वस्तुतः आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस प्रकार का महान्वय और स्वाधना आवश्यक है, और जीवन की पूर्णत के लिए सहायक है।

साधना सामग्री प्रेक्ट - 240/-

शिष्याभ्यु धार्मि

- तर्क कितने के अन्ती जो स्टेज है वह शिष्यत्व की स्टेज है और शिष्यत्व की वह स्टेज तब आती है, जब व्यक्ति को नुस्खा पर पूर्ण विश्वास और उसके प्रति पूर्ण मानसिंह उत्पन्न हो। देखा करना ही शिष्य का अन्ती कर्तव्य है।
- शिष्यत्व बुद्धि पर आधारित नहीं, वह तो हृदय से प्रेम का प्रस्फुटन है। प्रेम उसे नुस्खा के लिए, जबलुका के लिए है जो कि शिष्य को एक कला से विश्वास बना सकता है।
- अपने पर, प्रतिष्ठा धन का विज्ञाना करना शिष्यत्व नहीं। नुस्खा को कृज राबड़ी कुछ लेना चाहा नहीं। उसे तो केवल लिङ्गहर प्रेम के आंखुओं के भोती अप्रित करके प्रसाद किया जा सकता है।
- नुस्खा एक विज्ञान ज्ञान के समान है जिसमें उत्तर कर शिष्य अनभीत आधारितक माती प्राप्त कर सकता है। यह शिष्य का धर्म है कि वह नुस्खा के अंदर पूरी रूप से समर्पित हो जाए जिसके मल, बुद्धि द्वं आत्मा का रूपांतरण हो सके।
- नुस्खा की वाक्तव्यिक पूजा प्राकृतिक फूलों से नहीं, विश्वास, मानसिंह द्वं प्रेम के पुष्पों से होती है। जब शिष्य का धर्म केवल मुख से "जय नुस्खादेव" करना नहीं है, अपितु मन से नुस्खा के प्रति जगन छोना है।
- वाक्तव्यिक शिष्य इस बात की चिंता नहीं करता कि उसे कितना पोथियों का जान प्राप्त है। वह तो पोथियों को रटने की अपेक्षा स्वयं को नुस्खा चिंतन द्वं सेवा में मानसिंह करता है जिसके द्वारा भवय आने पर ज्ञान उसे स्वयं प्राप्त हो जाता है।
- नुस्खा शिष्य के लिए माता, पिता, मार्ज, जिस सन्ताना कभी कुछ है, इन उनकों कपों के द्वारा वह शिष्यों के साथ लौला करते हैं। पंक्तु नुस्खा चाहे किसी भी रूप में शिष्य के समझ प्रवृत्त हो, शिष्य को मद्देव मर्यादा का पालन करते हुए उनके साथ व्यवहार करना चाहिए।
- शिष्य अवधिय नुटियां की साम हैं पंक्तु नुस्खा कोई तालिशा नहीं। वह तो एक प्रेमपूर्ण माता के समान है। इसलिए नुटि हो जाने पर शिष्य को निःसंकोच होकर नुस्खा से समा याचना करनी चाहिए। नुस्खा से क्षमा मांगने पर वह तो बड़े अपराध द्वं पाप आफ हो जाते हैं।

गुरुवारी

* गुरु को आप किसी तरह बांध नहीं सकते। केवल प्रेम के द्वारा गुरु को बांधा जा सकता है।

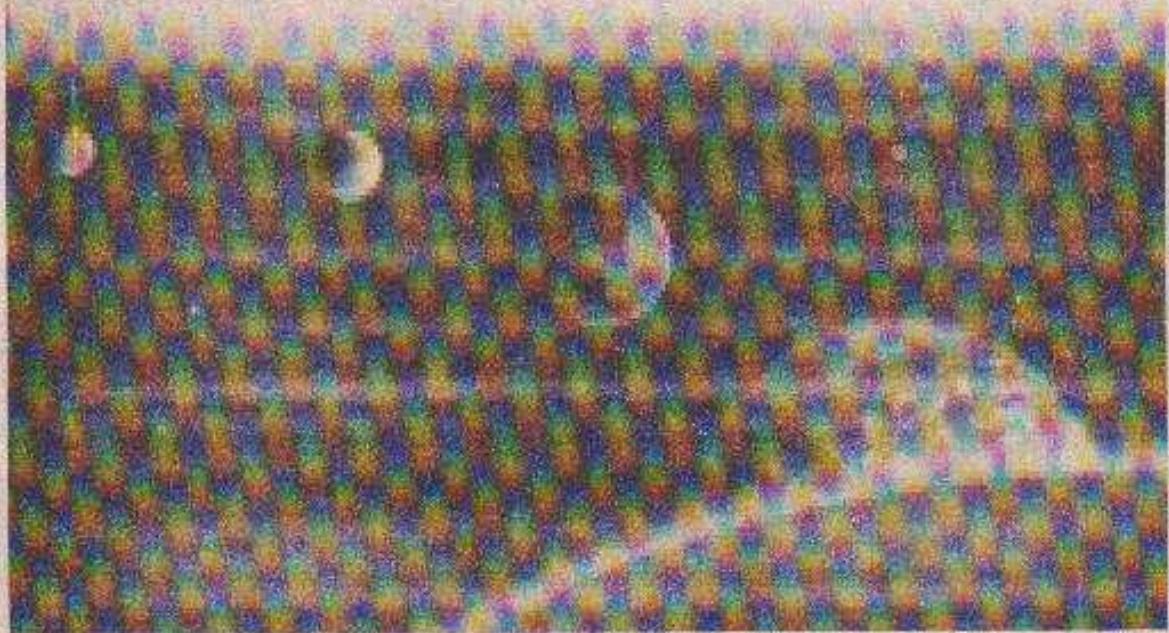
* प्रेम क्लोर्क वासना नहीं है वह तो एक उच्छुरज गुराकार है, एक मुंबध है जो मन दर्शनामा को जानक और त्रुटि को अवश्यक ठहरा देता है।

* केवल आंखे मूँद कर ध्यान करना या जप करना जीवन की पूर्णता नहीं है। जीवन का आनंद जीवन की श्रेष्ठता और पूर्णता, जीवन का औदर्दर्थ प्रेम में है।

* जीवन की पूर्णता प्रभु के नीलामय ब्रह्मसंप के एकाकाव हीने में है और वह तब ही अकता है जब तुम्हारे अंदर एक प्रेम का अंकुर पूट, तुम्हारे अंदर एक चिनगारी पेंदा हो।

* तुम इन्ह के साक्षात् दर्शन कर ही नहीं सकते, तुम खिल बन ही नहीं सकते क्योंकि तिसके हृदय में प्रेम का अंकुर नहीं पूटा वह साधना क्या करेगा? साधना में सफलता के लिए पहले हृदय को जाग्रत करना पड़ेगा।

* जिस इन शिष्य के जीवन में प्रेम की तरंग आती है, आनंद का हिन्दू पैदा होती है वह जीवन



में निरंतर तीव्रता के साथ अग्रसर होने लगता है
क्योंकि फिर वह लट्टर, वह तरंग रुकती नहीं।

* जीवन में सब कुछ प्राप्त हो सकता है -
गुरुज, गौमाल्य और गोत्रिक शुल्काद्वारा, मनव
यह सब होने के बाद भी आवश्यक नहीं कि
प्रेम प्राप्त हो ही। और प्रेम नहीं होना तो जीवन के
आनंदचेतना, आनंद, मरती भी नहीं होनी
समिट प्रेम ही जीवन की परिपूर्णता है।

* प्रेम और वासना में अंतर है। वासना है प्राप्त
करने की क्रिया और प्रेम है सब कुछ दे देने की
न्यौछातर कर देने की क्रिया। वासना एक पृणित
आव है, जबकि प्रेम एक उच्चतम रूप दिव्य आव है।

* अपने को न्यौछातर की देने की क्रिया
करना कर देने की क्रिया प्रेम है। और प्रेम
मरिताप्क जो नहीं हृदय से क्रिया जाता है। क्षणों
तक खिलक का कोई स्थान नहीं।

* समाज ने प्रेम को एक घृणित शब्द बना
दिया है। जिसे आप प्रेम समझते हैं वह वासना
है। प्रेम तो हृदय की चेतना है, हृदय की
प्रकृतिलता है और जीवन में पूर्ण हो जाने की
कला है।

सम्मोहन

प्रभावशाल

जो अपने आप में असीम शक्तियां समेटे हुए है

सम्मोहन अपने भीतर आकर्षण शक्ति उत्पन्न कर देने की विधा है, सम्मोहन दूसरों को प्रभावित कर देने की क्रिया है, सम्मोहन प्रेम उत्पन्न करने की

क्रिया है जिससे मन आनन्दित होता है -

सम्मोहन विज्ञान संसार की श्रेष्ठतम विद्या और विज्ञान है, लगता है, और वह बाहरी वातावरण से पृथक़ कट जाता है, जिसके माध्यम से अलम्भव कार्यों को भी संभव किया जा एसी स्थिति को ही योग में ध्यान या समाधि कहा है। इसका अध्ययन विज्ञान का प्रयोग केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपिनु पूरे संसार में किया जाता है, और इसके फलस्वरूप व्यक्ति की यही सबसे बड़ी चिन्ता है, कि वह में ही नहीं अपिनु पूरे संसार में किया जाता है, और इसके प्रयोग करने पर भी ध्यान नहीं लगा पाना। कोईशी करने पर माध्यम से वे भी कार्य सम्भव कर दिये जाते हैं, जो आधुनिक योगदान के माध्यम से सम्भव ही नहीं है।

मन को निर्विकार करें

आज वार्षि तरफ इनी अधिक रामराय और कठिनाइयों के बीच व्यक्ति वे रह नहीं सकता, उसका दिमाग हर समय तनाव से भरा रहता है, और इसी वजह से संकटों पकाया कर सकता है, उसे निर्विकार बनाकर संसार की लगातार बोगारियां, अनेक नदा मत्स्यिक चिन्ताएं व्याप से जाती हैं, जिन्होंने से अपने आपको मुक्त कर सकता है, और वह अपने इनका रक्षात् उपाय जटक के द्वारा अपने अन्तर्गत को नाशन कर मन को निर्विकार बनाना है, किसी भी साधना या योगिल के लिए मन को निर्विकार स्थिति अवश्यक है, एक ही विन्दु पर लगातार अपनक एकटक देखने से एक ऐसी स्थिति जात हो जाती है, कि व्यक्ति अपने अन्तर्गत में प्रवेश करने

सम्मोहन विज्ञान में बाटक एक ऐसा लक्षण माध्यम है, जिसके द्वारा वह अपने अन्तर प्रवेश कर मन को एक बिन्दु पर समय तनाव से भरा रहता है, और इसी वजह से संकटों पकाया कर सकता है, उसे निर्विकार बनाकर संसार की लगातार बोगारियां, अनेक नदा मत्स्यिक चिन्ताएं व्याप से जाती हैं, जिन्होंने से अपने आपको मुक्त कर सकता है, और वह अपने इनका रक्षात् उपाय जटक के द्वारा अपने अन्तर्गत को नाशन कर मन को निर्विकार बनाना है, किसी भी साधना या योगिल के लिए मन को निर्विकार स्थिति अवश्यक है, एक ही विन्दु पर लगातार अपनक एकटक देखने से एक ऐसी स्थिति जात हो जाती है, कि व्यक्ति अपने अन्तर्गत में प्रवेश करने

अन्तर्गत कर पूरे विश्व की पठनाओं को देखें

मन को ही प्राण या ब्रह्म कहा गया है, दूसरे शब्दों में इसे ब्रह्माण्ड के नाम से सम्बोधित किया गया है, मगर सबसे बड़ी

कठिनाई यही है, कि अन्तर्मन को जागत कैसे करें? अन्तर्मन कहा है, किन युक्तियों से वह जागत हो सकता है, और किस प्रकार से उस अन्तर्मन को पूरे ब्रह्माण्ड से सम्पर्कित किया जा सकता है, इसका एकमात्र हल सम्मोहन विज्ञान के पास ही है, इस विज्ञान के द्वारा मन को जागत किया जा सकता है, और जब ये चक्र जागत हो जाते हैं, तो उनके साथ ही साथ अन्तर्मन भी पूर्णतः जागत हो जाता है।

मन बादा स्वरूप है, जो कुछ देखने, सुनने है, उसका प्रभाव मन पर पड़ता है, परन्तु अन्तर्मन तो पूरे ब्रह्माण्ड में कला होता है इसीलिये अन्तर्मन को जागत करने के बावजूद उसे एकाश कर संसार का किसी भी घटना या दृश्य को देखा जा सकता है, यहाँ बैठे बैठे भी अन्तर्मन का एकाश कर अमेरिका में होने वाली किसी घटना को देख सकते हैं, यह देख सकते हैं, कि बहुत दूर रहने वाला हमारा मित्र या पत्नी, प्रेमिका या सम्बन्धी इस समय क्या कर रहा है, किस आवश्यक में है, ये सारे दृश्य आंखों के सामने तीक उसी प्रकार से घ्यष्ट हो जाने हैं, जिस प्रकार हम कोई टेलीविजन देख रहे हों, आधुनिक विज्ञान के हलनयन व्यापक डिस्ट्रायर व उद्धनि के बावजूद भी इस सम्मोहन विज्ञान की अपनी विशेषता है।

सामग्रे आदे व्याप्ति के तिवारी को पढ़िये

आज का व्यक्ति अहन ही चालाक और बनावटी बन गया है, ऊपर से वह सरल और सहजानी छिपाइ देता है, पर उसके मन में कठिनता, धोखा या छल की भावना हो सकती है, इस विज्ञान के द्वारा हम कुछ ही सेकण्डों में उसके उभया

के विचार और मन की पादनाएं यीक उसी प्रकार पढ़ नेते हैं, जैसे कि हम कोई सामग्रे रखा कर्ज फूट रहे हों, वह आपने आपको रहे कितना ही छिपाने का प्रयत्न करे, चाहे कितना ही भोला और सरल बनने वा स्वीकृत भए, चाहे कितनी ही बाधनसी की बाते करे परन्तु वह छिप नहीं पाना, क्योंकि हम अपने अन्तर्मन को जागत कर उसके मन और मस्तिष्क से सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं, तथा तुरन्त यह जानकारी आप लेते ह, कि उस व्यक्ति के मन में मेरे प्रसि क्यों विचार है, वह क्या सोचता है, और उसकी क्या करने की डिल्ली है?

व्यापाचियों के लिए तो यह आश्चर्यजनक सफलताओं वक,

किसी भी प्रकार का समझौता और अधिकारिक लेन-देन करते समय यदि

हम सामने वाले के विचारों को पढ़ लेते हैं, तो हमें जात हो जाता है, कि कहीं यह धोखा तो नहीं देने जा रहा है, और बल्कि हम उस व्यक्ति से कोई गमन्या तो नहीं आयेगी और हमें प्रकार हम उस उत्तमों को पहले से ही जान लेते हैं, जिसे बात में जात कर केवल पछाना ही पड़ता है।

इसके द्वारा प्रेमी का स्वार्थ या धोखा पहले से ही समझ में आ जाता है, उसकी प्रेमिका बेफ़ा है या बफ़ाबाद, यह जानकारी प्राप्त भी जाती है, परंतु या पत्नी कितने चरित्रवान् है, उसका पना लगाया जा सकता है, और सामने वाले अधिकारी, मिशन, अधिकारी या व्यक्ति के मन में क्या विचार उठ रहे हैं, उनको सहजता से ही जात किया जा सकता है। इस दृष्टि से यह विज्ञान एक ऐसा वरदान है, जिसके द्वारा हम किसी भी प्रकार के धोखे से बच सकते हैं।

सम्मोहित कीजिये

इस विज्ञान का सबसे बड़ा लाभ यह है, कि यह कुछ विशेष युक्तियों के माध्यम से अपनी आंखों में वह चमक या आकर्षण ना सकते हैं, जिसे 'चुम्बकीय-शक्ति' कहा जाता है, इस शक्ति के माध्यम से सामने वाले व्यक्ति को कुछ ही क्षणों में अपने प्रति सम्मोहित किया जा सकता है, और उससे मनोविज्ञित कार्य बन्पढ़ कराया जा सकता है।

इसके द्वारा अधिकारी को पूरी तरह से अपने अनुकूल किया जा सकता है, पत्नी को सम्मोहित कर उसकी द्वारी प्रवृत्तियों पर काढ़ पाया जा सकता है, पत्नी को गलत रास्ते पर जाने से बचाया जा सकता है, यदि प्रेमिका पर कोई प्रभाव पड़ रहा है, तो उसे सम्मोहित कर अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, और जीवन भर के लिए बांधा जा सकता है।

यहीं नहीं, अपितु इसके द्वारा बिगड़ हुए पुत्र को परिवार के अनुकूल कर सकते हैं, बटकी हुई बेटी को सही रास्ते पर ला

सकते हैं, वे सीधे या टेप्टर प्राप्त कर सकते हैं, जो अधिकारीयों की हठधर्मिता की बजाए में प्राप्त नहीं हो रहे हैं, साथ ही साथ इसके माध्यम से अपने व्यक्तिगत को इतना महान् और आकर्षण बना सकते हैं, कि हम अधिक से अधिक लोकप्रिय हो सकें और हमारे चारों ओर माहौल बनी रह सके, जीवन की यह एक महान् सफलता कहीं जा सकती है।

मानसिक रोगों पर विजय

आज का अधिकांश व्यक्ति गान्धिव रोगों से उस्त है इस मामले

में यह विज्ञान बहुत अधिक सहायक है, इसके द्वारा पाण्डापन पर काढ़ पाया जा सकता है, यदि कोई लड़का प्रेमिका के चक्कर से पड़ कर बरबाद हो रहा है, तो उसके मन से यह भावना निकाली जा सकती है, यदि लड़का किसी के प्यार में दौबाना हो गई हो तो उसके दिल से वह दौबानापन मिटाया जा सकता है, हिन्दीरिया, चिर्नी, मानसिक सन्ताप और पाण्डापन जैसे रोगों पर यह अद्वितीय उपचार एवं प्रयोग है, इसके द्वारा उन रोगों पर तुरन्त काढ़ पाया जा सकता है।

इसके द्वारा कल्पित दुःखों से मुक्ति दिलाइ जा सकती है, अज्ञात भय से छुटकारा दिया जा सकता है, अकर्षण और आलसी व्यक्ति को साहसी और कर्मठ किया जा सकता है, साथ ही साथ इसके द्वारा अमर्द्वाद दुःख जो जाने पर उसे दुःख पड़ने की शक्ति दी जा सकती है, और हम प्रकार इसके माध्यम से आत्महत्याओं के प्रतिशत को बहुत कम किया जा सकता है।

रोगमर्ता के जीवन में इसे अपनाइये

हमें जिन भर में कई कार्य करने पड़ते हैं, कई लाग्तों से मिलना होता है, और कई पैचोत्तरियों जाने आ जाती है, जिन पर नियन्त्रण पाना होता है, यह विज्ञान इस प्रकार की दैनिक रोगमर्ता की घटनाओं में सजीवनी की तरह सफलता प्रदान करने में सक्षम है, आप किसी के घर जाते हैं, और

जातका कोई काम जटका हआ है, तो आप उसे सामान्य बहुमोहित कर रखीकृति प्राप्त कर सकते हैं, जौकरी धन्धे में उच्च उपभोग से संरक्षण हो जाने पर उन्हें हिनोटाइज कर आपने अनुकूल बना सकते हैं, विशेष और वितण्डावाद होने पर स्थिति को अनुकूल कर सकते हैं, क्रौंधित ग्राहक की शांत कर अपने बद्धों में बना सकते हैं, जबू को सम्माहित कर कोट कच्छरी के चक्कर से बच सकते हैं, जीवार साथी के मन में होसला या किसान प्रश्न कर सकते हैं, और इस प्रकार वैनिक जीवन में इन्हें घटनाओं से आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

विचार संक्षण

इस विज्ञान की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि इस के द्वारा हम अपने विचारों को दूसरे के मन पर रंगमित कर सकते हैं, हम चाहते हैं, कि सामने वाला व्यक्ति आपके अनुकूल ही बात कहे और आपके तर्कों को मान जाय, आपके विचारों को स्वीकार कर ले, यह सब इसके द्वारा सम्भव है, ताटक दृष्टि। विशेष युक्तियों द्वारा प्राप्त कर आप जो भी मावना सामने बाले को देना चाहेंगे वह उस भावना को स्वीकार कर लेगा और जिस प्रकार से आप चाहेंगे उसी प्रकार से वह करेगा, आप चाहते हैं, कि नाराज प्रेमिका खुद माफी मांग कर आपको मना ले तो यह विचार संक्षण के द्वारा सम्भव है, आप चाहते हैं, कि अमुक व्यक्ति और उसका परिवार स्वयं आपके धर विवाह का प्रस्ताव लेकर आवेदन तो आप उसके मन पर विचार संक्षण कर ऐसी सफलता पा सकती है, आप चाहते हैं, कि अधिकारी आपको छुट्टी दे दे या मनोवाहित स्थान पर ट्रांसफर कर दे अथवा प्रमोशन दे दे तो यह सब सम्भव है, जबकि आप उसके मन पर विचार संक्षण कर सकें और यह सब इस विज्ञान के द्वारा निश्चित रूप से सम्भव है।

अविष्य कथन सिद्धि

पाठ्यनालयों दर्शन कहता है, कि यह सामान्य सिद्धि है, यदि हम अपने अन्तर्मन को जायत कर किसी भी व्यक्ति के भूतकाल की ओर जायें तो उसके जीवन में जो भी घटनाएं प्रती हैं, उनको हम जान सकते हैं, इसके द्वारा यह भी जान सकते हैं, कि आगे के जीवन में क्या क्या घटनाएं घटेंगी, क्योंकि अन्तर्मन काल या समय से भी पार पहुंच सकता है और इसीलिए किसी व्यक्ति के भूतकाल या भविष्यकाल को बखूबी जाना जा सकता है, इसके द्वारा हमारे व्यवहार में आने वाले पुरुष और स्त्रियों के भूतकाल को जानकर उसके बारे में राय बना सकते हैं; तथा किसी के भी भविष्य को अच्छी तरह से

परिवान कर आने वाले घटनाओं से उसे सावधान कर सकते हैं।

वस्तुतः इसके द्वारा कछु ऐसी स्थितियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं, जिसके माध्यम से भूतकाल और भविष्यकाल को जानकर नन्ता में लोकप्रियता प्राप्त कर सकते हैं।

कृष्णलिङ्गी जागरण

जैसा कि मैंने ब्रताया कि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने अन्तर्मन में ग्रेश कर सकता है, और आनन्दिक चक्रों को जाग्रत कर सकता है, यह अपने आप में बहुत बड़ी सिद्धि या सफलता है, धीर-धीरे व्यक्ति में ऐसी क्षमता आ जाती है कि वह मूलाधार से लगाकर आज्ञा तक तक को नाशत कर लेता है, और इस प्रकार अपने जीवनकाल में ही उस ब्रह्मवृत्ति से साक्षात्कार प्राप्त कर लेता है, जो अपने आप में अगम्य है, यह अपने आप में एक बहुत बड़ी सफलता है, जो कि इस विज्ञान के माध्यम से सम्भव है।

फोटो सम्मोहन

सम्मोहन के लिए आवश्यक नहीं है, कि कोई पुस्तक या ऐसी समाने ही हो, किसी के भी फोटो को सामने रखकर उस पर नाटक कर वह मावना उसे दी जा सकती है, जो कि हम चाहते हैं, और ऐसा करने से ठीक वही प्रभाव होता है, जो कि सामने खड़े व्यक्ति पर करने से होता है, इस प्रकार हम प्रेमी, प्रेमिका, पत्नी, पति, अपासर, मित्र या किसी को भी फोटो के द्वारा ऐसी भावनाएं दे सकते हैं, जो कि हमारे अनुकूल हो और इस प्रकार उनसे मनोवाहित कार्य संपन्न कराया जा सकता है।

स्व-सम्मोहन

कछु सम्मोहन विधियों के द्वारा व्यक्ति अपने आपको सम्मोहित कर सकता है, और इस प्रकार भिर वर्द, भय, न्यूनता का भाव, इन्फोरियर्टी कोम्प्लेक्स तथा मानसिक व्याधियों पर भली प्रकार से नियन्त्रण पा सकता है।

यही नहीं अपितु एव सम्मोहन के द्वारा व्यक्ति सिगरेट, बीड़ी, जर्दा, पान या शराब जैसी हानिकारक आदतों तथा व्यसनों से भी भली प्रकार से छुटकारा पा सकता है।

वस्तुतः हिनोटिज्म या मोहिनी विद्या अथवा सम्मोहन विज्ञान आज के युग का एक अविलीय वरदान है, जो कि पूरे जीवन को शानदार तथा लोकप्रिय बनाने में सहायता है, इस विद्या के जानने वाले और बताने वाले बहुत ही कम हैं, परन्तु यदि ऐसा अवसर प्राप्त होता है, कि निसासे हम विद्या के बारे में जान या दर्शना प्राप्त की जा सके तो वास्तव में ही यह जीवन का सौभाग्य ही कहा जा सकता है।

* * *

मैं पुकार छूँ और मैं या पूर्ण जहाय

उर्वशी रम्भा अप्सरा

साधना

लो प्रत्यक्ष करना ही है

उर्वशी रम्भा आपको इस संकल्प-द्वारा के पर

आकर्षण-विकर्षण नो प्रकृति का निश्चित नियम है, जिस द्वितीय भाग नाय, यही तो सौन्दर्य का आकर्षण है, जीवन की प्रकार चुम्बक के पास लोहा ले जान पर उसे यु-वक्त पकड़ नो अवधि के प्राने स्वामिक प्रकृति है, वह रोकने पर भी लेता है, उसी प्रकार इस नीचन का भी यहा खेल है, जिसकी नहीं सकती, तो उसे यहु बन्धनों से बयो जकड़ा जाय? और मन आकर्षित होता है, उसे वह सम्पूर्ण रूप से प्राप्त करना ही चाहता है, और शावगा अहुती बहुती इच्छा का रूप ले लेती है।

आकर्षण भाव में रस, सीन्दर्य-भाव सबसे अधिक प्रभावजाली है, यह सौन्दर्य व रस तत्त्व ऐसे तत्त्व हैं, जिन्हें बार बार देखने की, उन्हें अपने भोगर पूर्ण रूप से समझन कर लेने की इच्छा रहती है, यह सीन्दर्य, स्थान-सीन्दर्य, प्रकृति सौन्दर्य, वाणी-सौन्दर्य कोई भी हो सकता है।

कोई स्थान ऐसा होता है, जहां आपको एकदम शरीत एवं आनन्द की विचित्र सी अनुभूति होती है, और यही इच्छा होती है, कि ऐसे स्थान पर ही निवास किया जाय, इसी प्रकार किसी वाणी में ऐसा सौन्दर्य रहता है, कि बार-बार उनमें पर भी नहीं मिलती है, और न ही मन शकता है।

सौन्दर्य अश्वीत सुन्दरता एक ऐसा तत्त्व है, जिस आप उपेति नहीं कर सकते हैं, उसमें तो एक ऐसा आकर्षण होता ही है, कि मन रोकते हुए भी नहीं शकता, यह केवल शरीर के माध्यम से पूर्ण स्पष्ट हो बल्कि हाव-भाव, व्यवहार, वाणी, वस्त्र आदि से स्पष्ट हो, पूर्ण रूप से लटकता हो, जाणी में संगीत का अनुभव हो, नेत्रों में ऐसी दृष्टि हो, जो इदय के

शीतर भाग नाय, यही तो सौन्दर्य का आकर्षण है, जीवन की

गुण अवधि समाहित किये हैं, जो कि पुस्तों में नहीं हो सकते हैं, और जब इन गुणों का अनिकम्पण होता है, तो वह व्यक्तिन्य द्वी प्रपना सहज खो देता है।

कान्ति धन शरीर, मन्द-मन्द मुस्कान युक्त मुख, एक अवश्य भाव से जो घरे नेत्र, डल्की-डल्की दर्जी हंसी, तिकुक गुक गाल, सुन्दर केश, धोप-ग्रामीर चाल, भारी वक्षस्थल, कमभीव काट, कमल के समान लम्बी ऊँगलियां, केले के वृक्ष के नसे के स्वयन जाँचे, ऐसे गुण ही स्त्री सौन्दर्य का रूपरूप है, जिसके गम्य सीन्दर्य को देखने के लिए मन में हलचल बन जाती है, सौन्दर्य की पाप करने में बुराई ही क्या है? जिस प्रकार सुन्दर पुरुषों को देख कर हम आनन्द का अनुभव करते हैं, और कच्चे को देख जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, अथवा मह फेर लेते हैं, उसी प्रकार रूप-सौन्दर्य भी नो सुन्दर, कुछ रिहले, कुछ अध-गिरले, मधुर-मधुर सुगन्ध युक्त पुष्पों की बाटिका ही तो है।

लूप-सौन्दर्य उपासना

यह तो निश्चित सत्य है कि सुन्दरता सब को जपनी ओर

नमन जागरूकता कर लेती है, इसके अनिरिक्त जो व्यापि रूप सम्बन्ध को अपने वश में कर लेने की शक्ति प्राप्त कर लेता है, वह साधना का एक विशेष स्तर पूरा कर लेता है, उसके साथ-सिवाय साधना का एक विशेष स्तर पूरा कर लेता है, उसके कार्य सम्भव का सम्भव बढ़ जाती है, और बड़ी चुनौतियों को पार करने के लिए तत्पर हो जाता है।

इसी कारण रूप-सौन्दर्य की पूजा अचंना और उसे दैहिक व्यवहार मानसिक रूप में प्राप्त करने की इच्छा अवध्य रूप से नहीं है, और वह इच्छा एक ऐसी इच्छा है, जिसे जब तक समृद्धि रूप से प्राप्त न कर लिया जाय, तब तक इच्छनी नहीं बनती।

आपन् युग अर्थात् श्री कृष्ण के समय का काल तो नारी-सौन्दर्य की पूजा अचंना, साधना का स्वैच्छिक व्यवहार जा जाता है, स्वयं श्री कृष्ण ने अपने पूरे जीवन में उसको पूर्ण व्यवहार किया है, रूप-सौन्दर्य उनके वश में था, और उसीनिमा वे विभिन्न योग मायाएँ करते हुए, 'योगेश्वर श्रीकृष्ण' कहलाये।

रूप-सौन्दर्य और अप्सराओं

उपर्युक्तों के सम्बन्ध में आज भी सामान्य जन में साधकों में विभिन्न प्रकार की भावनियों फैली हुई है, कई साधक इस प्रकार की साधनाओं को गलत दृष्टि से देखते हैं, जबकि उन्हें विभिन्न इनके एकदम विपरित है, अप्सराओं की उत्पत्ति के सम्बन्ध में वह निषिद्धत तथ्य है कि समुद्र-मंथन से पहले रमना अप्सरा की उत्पत्ति हुई, और उसके पश्चात् अमृत घट, और उसकाल पश्चात् मणिनी लक्ष्मी प्रकट हुई, इसलिए इनका महत्व अन्य रसों की अपेक्षा अल्पधिक है, रूप और रूप का तत्त्व विशेष होने के कारण तथा जल तत्त्व प्रधान होने के कारण ही इनका नाम अप्सरा पड़ा और इनके गुण देवताओं के गुणों के समान ही पूर्ण रूप से प्रभावशाली है।

अप्सरा-ग्रन्थ

देवता तत्त्व पूर्ण रूप से होने के कारण अप्सराओं में ग्रामपालानी देवताओं के सम्पूर्ण गुण व शक्ति पूर्ण रूप से है, इनका प्रथम भाव उत्तम रूप एवं सर्वर्गीय सौन्दर्य अवश्य है, इसके साथ ही विश्वा, पूरे विश्व के आवागमन के जवाह गति-शक्ति, इच्छान्त्वार रूप परिवर्तन, वर-शक्ति, लक्ष्मी-शक्ति, पारपूर्ण रूप से है, अप्सराएँ पूजा एवं नगरपाल की विशेष इच्छुक रहती हैं, इसी कारण जो भी साधक सम्पूर्ण रूप से उसकी साधना करता है, उसे वे नज़र कुछ वे देती हैं - जिसकी इच्छा साधक करता है, यह तथ्य है, कि नारी जिसके कुछ देवा चाहती है, उसे यम्पूर्ण रूप से प्रदान करती है, सबस्त्र गमनिन कर देता है, नारी के पास अधूरा देने के लिए कुछ भी नहीं होता है, और अप्सरा तो नारी-रूप, सौन्दर्य एवं गुणों को

उच्चतम अवश्य ही है, इनीलिए प्रत्येक नव-साधना में इसकी साधना एवं सिद्धि आवश्यक ही मानी गई है।

अप्सराओं के पास सबसे बड़ी शक्ति, रुद्रचरी ननिवासिक होती है, जिसके कारण इन्हें अकाश-समन पूरे अन्य अविद्या पूर्ण रूप से प्राप्त रहती है, और क्षण भर में कही भी पहुँच जाना सम्भव रहता है।

प्रमुख अप्सराओं

अप्सरा तथा योगिनी में बहुत महिला अन्वर है, योगिनीया शिव-शक्ति से प्रभाव युक्त आठ विद्युष्ट देवियों होती है, जो कि नांविक साधना के द्वारा ही वश में की जा सकती है, और इन योगिनियों की प्रमुख शक्ति मायगा, उच्चाटन, वशीकरण इत्यादि से गम्भीरित ही रहता है।

इसके विपरीत अप्सराएँ जान, नहन, सुन्दर भाव-युग, इव्य से व पूर्ण मनोभाव से की गयी साधनाओं से प्रभूत हो कर, साधक के वश में प्रिया रूप में हो जाती है, और साधक की जावन भर के लिए सहचरी वर्ण का उसे धन-धान्य एवं आसारिक सुख पूर्ण रूप में प्रदान करती है।

जहाँ तक अप्सराओं की संख्या का अवाल है, उस सम्बन्ध में शास्त्रों में अनेक प्रकार के यन-मनान्तर हैं, लेकिन 'काशी खण्ड, स्कन्द पुराण' के अनुसार ३०६० अप्सराएँ प्रधान हैं, इन अप्सराओं के पास विशेष शक्तियाँ हैं, और इनमें भी प्रगृह अप्सराएँ रम्भा, पिशकेशी, चित्तसेना, विशुलपाणी, घृताची, मेनका, लीलावती, पुत्रिकमथना, श्रविष्मिता, विश्वाशी, चारनंदा, महजनन्दा, प्रलोचा, उर्वशी, सीरभीती, बुद्धुवा, समीरी, लता, इशा, विश्वामित्र, कलात्यला, निश्लोचा, तिनोत्सामा, मुकेशी, घमकेशी, सुगन्धा, कर्णिका, पूर्वीचत्ति, इत्यादि हैं।

विश्वामित्र और मेनका

इस सम्बन्ध में कई सानितिया नामान्व नन में व्याप्त है, कि मेनका के कारण ही विश्वामित्र का तपस्या खण्डित हुई, जबकि सत्य यह है कि मेनका के कारण ही उनकी सप्तमा-साधना पूर्ण हुई, और विश्वामित्र ने तो मेनका को जीवन मंगिनी हो बना लिया, और उसके सहयोग से ही जगे नपम्या ने पूर्णना प्राप्त कर नदान शन्थों की रचना की, विश्वामित्र द्वारा मेनका के गर्भ में शकुन्तला कन्या का जन्म हुआ जो कि दुश्मन की पत्नी बनी, और शकुन्तला के गर्भ से भरत का, जो कि भरतवशीय क्षितियों का कल-पुरुष था, और उसी के बंद में आगे भोष्म अर्जुन, सुधिष्ठिर इत्यादि आ जन्म हुआ जिन्होंने पूरे भागतवर्ष में राज्य किया।

उस अप्सराओं की अन्ति, गुणों के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का सन्देह ही नहीं है, जो साधक अप्सरा को प्रेमिका

रूप में सिद्ध कर लेता है, उस साधक को शारीरिक दृष्टि से ऐसा तेजस्वी व्यक्तित्व प्राप्त ही जाता है कि कमदेव उसमें स्वयं समाहित हो जाते हैं।

साधक के व्यक्तित्व में ऐसा आकर्षण आ जाता है कि वह नियम व्यक्ति को भी अपने अनुकूल बनाना चाहता है, उसे अपने प्रभाव में कर सकने में समर्थ हो जाता है, और उसके कार्ड भी कार्य सुनने नहीं हैं। उसकी वाणी में ऐसा प्रभाव आ जाता है, कि वह जिसे भी आशा देता है, अथवा जो कुछ भी बोलता है, वह पूर्ण होता ही है।

उसके दीवन में एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति आ जाती है, और शरीर के रोग स्वतः ही साधन होने लगते हैं, तथा आगे भी किसी प्रकार की रोग-आधा नहीं रहती। लक्षणी की उस पर विशेष कृपा हो जाती है, तथा प्रत्येक योग्य कार्य द्वारा उसे धन की प्राप्ति होती है।

उर्वशी-रम्भा सिद्धि दिवस

उर्वशी रम्भा साधना के लिए यह आवश्यक है कि यह साधना शुक्रवार को ही प्रारम्भ की जाए इसके साथ ही पूज्यनक्षत्र, अमृत दोग, पूर्णिमा के दिन भी यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है। २ जून को रम्भा दिवस है और २५ जून को योगिनों एकादशी है यह दोनों दिन भी श्रेष्ठ है।

जीवन में इच्छाएं कामनाएं रखने वाले प्रत्येक साधक को इन दिवसों में साधनाएं अवश्य करनी चाहिए, जिससे कि अनुस इच्छाएं पूर्ण हो सकें, तथा तृस इच्छाओं को विकास हो सके, उसके जीवन में आनन्द और मधुरता की लहरों का निरन्तर आवागमन हो सके, और यह साधना कोई भी साधक, बाल वह गृहस्थ अथवा अविवाहित हो, निवाल हो अथवा सबल, स्त्री हो अथवा पुरुष, सम्पन्न कर सकता है, इस साधना में किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती, बल्कि कुछ न कुछ प्राप्त होता ही है।

साधना-प्रयोग "विश्वामित्र सहिता" के अनुसार जो प्रयोग पूर्ण विधि-विधान सहित दिया गया है, उसी विधि को योग्य पाठों के ज्ञान हेतु स्पष्ट किया जा रहा है।

साधना प्रारम्भ याले दिन साधक के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है, कि अपने मन, चित्त को पूर्ण रूप से प्रसन्न रखें, अनन्द भाव से यह साधना पूर्ण करने की ओर प्रवृत्त हो, साथ ही कुछ प्राप्त करने की इच्छा, भावना भी डोनी आवश्यक है, दुर्लभ मन से, जिसे हुए साधना करने से किसी भी साधना में सफलता नहीं मिल सकती है, इस साधना हेतु यह आवश्यक है, कि यूग स्थान में गुगन्धिन वातावरण हो, पुष्पों तथा इन की खुशबू हो, सुगन्धित अगरबत्ती हो, शुद्ध धी का दीपक हो।

साधक स्थान कर सुन्दर, स्वच्छ वस्त्र पहनें और अपने

सामने एक "आप्सरा चित्र" रखें, किसी प्रकार की हीन भावना से अपने आपको मुक्त रखने हुए पूरे आत्म विश्वाम के माय साधना प्रारम्भ करें, अपने सामने "उर्वशी-रम्भा चित्र" लगापित करें, यंत्र में यह भावना दें कि "हे अप्सरा! तु अपनी समस्त शक्तियों सहित, प्रेमिका रूप में मुझे सिद्ध हो कर पूर्णता प्रदान करो", साधना-काल में किसी प्रकार का विच्छ नहीं होना चाहिए।

"उर्वशी-रम्भा वशीकरण माला" से मन जप प्रारम्भ करें, एक पात्र में पहले से जल ला कर रखें और पुष्प से उस जल को पूरे स्थान में छिड़के, लाल वस्त्र के आसन पर स्थान शृण कर, मंत्र की घारह मालाओं का जप उसी स्थान पर बैठकर करें।

अप्सराएं साधकों को तत्काल सिद्ध हो जाती है, लेकिन वायुमंडल में व्यास कुछ अन्य शक्तियाँ उन्हें रोकती हैं, और यही शक्तियाँ साधना-काल में साधक को विचलित करने का प्रयत्न भी करती हैं, अतः यदि किसी विशेष प्रकार की आवाजें, अथवा एक अन्यीन सी "सनसनाहट, खनक" सुनाई दे तो साधक को विचलित नहीं होना चाहिए।

मंत्र जप जब चल रहा होता है तो बीच में वस्त्रों की सरसराहट, एक दिव्य मस्ती भरी खुशबू पूना स्थान में बनती है, और साधना में रिक्षि प्राप्त होने पर स्वेह अप्सरा अपक सामने उपस्थित होती है, और यही यह रमय है जब साधक की जो कुछ प्रमुख इच्छा हो, उसे मानना चाहिए, लेकिन सबसे उचित यही रहता है, कि साधक यही वर मांगे कि अप्सरा वह स्थिति में उसके साथ रहे, और जब भी इच्छा करें, मंत्र जप से आहान करें, प्रकट हो।

मंत्र

// उर्वशी रम्भा उर्वश्यो उत्तरो कट //

इस मंत्र की घारह माला का जप करने के पश्चान अश्ले शुक्रवार को "रम्भा-अप्सरा सिद्धि विवर" के दिन भी इसी प्रकार से प्रयोग करें, और इस शुक्रवार को परिणाम अवश्य ही प्राप्त होते हैं। साधना के पश्चात् साधक रात्रि को उसी स्थान पर शयन करे तो उचित रहता है, यह साधना अन्यन्त प्रभावकारी है, क्योंकि श्रेष्ठ मुहूर्त में व लिङ्गि दिवस में की गई साधना तत्काल सिद्ध होती है।

आप अपने ही मिज्जों को परिका लहराय बालां तथा कार्ड के दूर अपने होलों मिज्ज का पता लियाकर भेजे कार्ड मिज्जे पट रु. ४२०/- की ली. पी. पी. द्वारा आपको इस रात्रिका की मंज लिंग प्राप्त प्रतिशाशुक्र लाभशी भेज दें दो दोलों मिज्जों को एक वर्ष तक लियमित रूप से परिका भेजी जाएगी।

सौन्दर्यात्मक

श्राविकाकुल अप्सरा

साधना प्रयोग

सौन्दर्यात्मका अप्सरा साधना मानव जीवन की एक शैष्ठ और अद्वितीय साधना है। जीवन में धर्म, अर्थ, काम और घोष - - ये चार पुरुषार्थ उपरे शास्त्रों में बताये

हैं। इनमें से अर्थ और काम की पूर्णता अप्सरा साधना के माध्यम से ही संभव है, भीर अप्सरा साधना के सारा जब अर्थ प्राप्ति धर्म और आनन्द के साथ सम्पूर्ण होती है तब उसके द्वारा व्यक्ति मोक्ष प्राप्ति कर जीवन को पूर्णता प्रदान कर देता है।

यह अप्सरा है क्या?

धार्मीय सार्वज्ञों में भौजदूर के जीवन का उल्लङ्घन और उत्साह माजा है, यदि जीवन में भौजदूर नहीं है, तो वह स्वान दिया है, देवताओं की सभा में नित्य अप्सराएं नृत्य जीवन भान्ने और उदास हो जाते हैं, हाँ मैं रो अविकाश करती चीं। विशिष्ट के बाश्रम में स्थायी रूप से अप्सराओं का व्यक्ति द्वारा ही जीवन जी रहे हैं, हाँ रोडों पर से मुख्याहृत निवास था। विश्वामित्र ने अप्सरा साधना के माध्यम से जीवन

खला हो गई है, कहर की मात्रा परिवारों समृद्धि भी भिजोंव

सा बन गया है और एक जगह से हुए पानी से सडान्ध घटा हो जाती है, हर्सी प्रकार रुका हुआ जीवन निराश और बेवान हो जाता है।

इसका कारण हम सौन्दर्य की परिभाषा भूल गये हैं सौन्दर्य साधना हमारे जीवन में रही ही नहीं है, हम धन के पौछे भाजने हुए एक प्रकार से ब्रह्म लोधी बन गये हैं, जिसकी वजह से जीवन की अच्छी वृत्तियां लुप नहीं हो गई हैं।

इसके विपरीत यदि हम अपने आन्दों को टटोल कर देंगे तो देवताओं ने और हमारे पूर्वज ऋषियों ने प्रमुखता के साथ

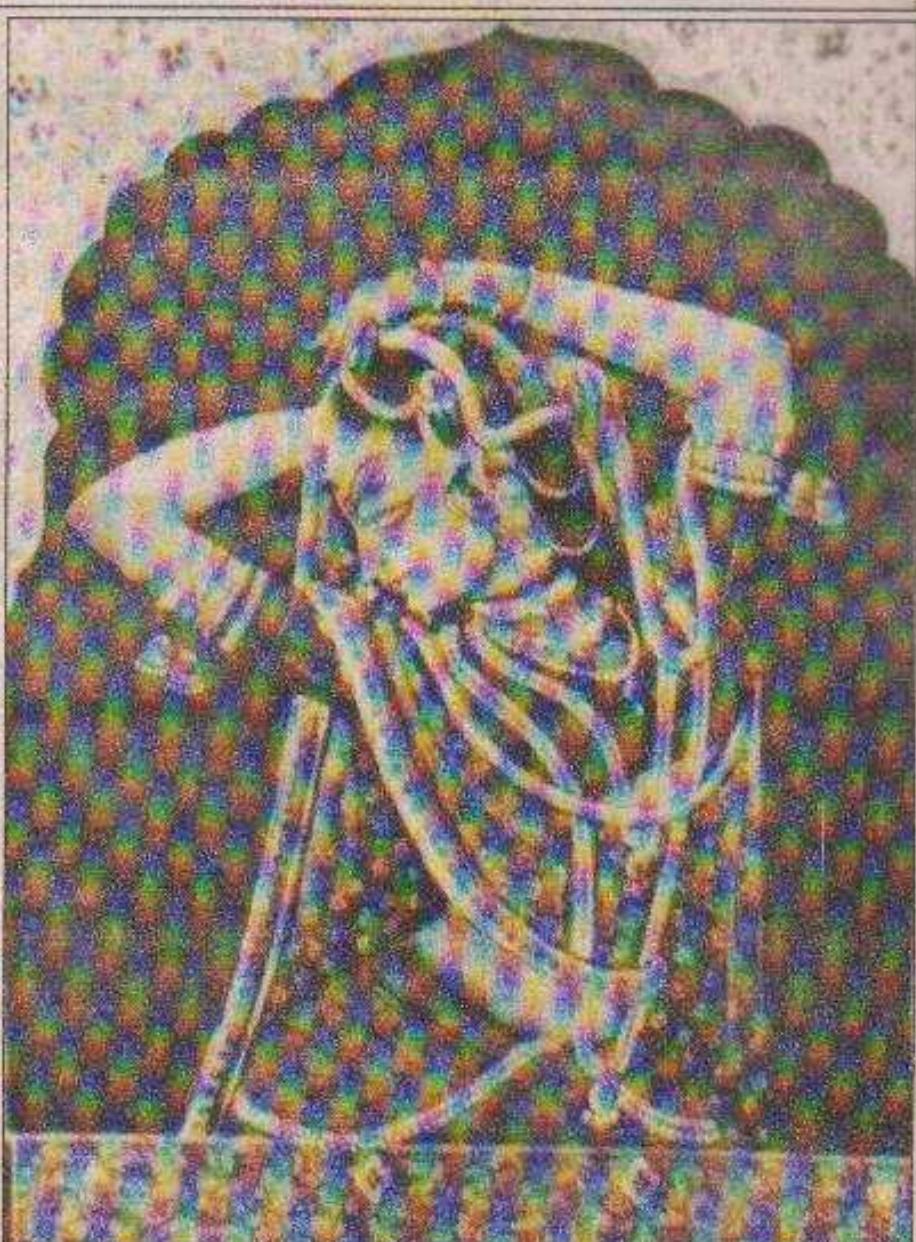
सौन्दर्य साधनाएं संकल्प की है, सौन्दर्य का जीवन में प्रमुख और उत्साह माजा है, यदि जीवन में भौजदूर नहीं है, तो वह स्वान दिया है, देवताओं की सभा में नित्य अप्सराएं नृत्य करती चीं। विशिष्ट के बाश्रम में स्थायी रूप से अप्सराओं का व्यक्ति द्वारा ही जीवन जी रहे हैं, हाँ रोडों पर से मुख्याहृत निवास था। विश्वामित्र ने अप्सरा साधना के माध्यम से जीवन खला हो गई है, कहर की मात्रा परिवारों समृद्धि भी भिजोंव को पूर्णता प्रदान की थी, यही नहीं अपित् सन्यासी शवराजाय री हो गई है जिसके फलस्तरलम ह्य प्रदृश्यन उक्तके थी ने वी सौन्दर्यानिका इशिंदिव्य अप्सरा साधना सम्पन्न करने विलोक्यना जाए सकते, उन्मुख रूप से हास जाएं सकते, के बाद कप्ते शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा था -

पुरुक्षा नहीं सकते, एक प्रकार से हमारा जीवन बंधा हुआ

कि इस साधना के माध्यम से साधक को यह विश्वास हो

जाता है कि उसका अपने मन, और अपनी धनिदयों पर पूर्णतः नियंत्रण है, उसके माध्यम से जीवन की वे प्रमुख वृत्तियाँ जो जीवन में आनन्द और हास्य का भिंगण करती हैं, वृत्तियाँ उनमें डॉली हैं, और मनुष्य दीदार्यु प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है। इस लाभना के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में अर्थ सुख, आनन्द और नुभि की किञ्ची भी प्रकार से न्यूनता नहीं रहती।

जीवन में नारी शरीर के माध्यम से दी स्त्रीन्द्रिय का परिभ्राषा अंजित की है। यो तो शास्त्रों में सहस्र प्रकार की अप्सराओं का विवरण बर्णन मिलता है, और इन सभी साधनाओं के बारे में विश्वास से बर्णन है। अप्सरा, स्त्रीन्द्रिय का साकार जीता जागता प्रमाण है। यदि यह प्रश्न पूछा जाय तो स्त्रीन्द्रिय क्या है, तो उसे हम किसी अप्सरा के माध्यम से दी



स्पष्ट अंकन कर सकते हैं। अप्सरा का तात्पर्य एक ऐसी देवता पूर्ण स्त्रीन्द्रियसंसोलिङ् वर्षीय नारी प्रतिमा है, जो मनो के माध्यम से पूर्णतः आधीन डाकर साधक के पूरुष में भी सुख की विजली चमकाने ने समर्थ देंती है तथा तनाव के भजों में आनन्द प्रदान करने की सामर्थ्य रखती है। वह सिन्दूर साधक के साथ दृश्य और अदृश्य रूप ने बर्ती रहती है और प्रियतमा के रूप में उसकी प्रत्येक प्रकार की इच्छा पूर्ण करता रहती है।

प्रिय का तात्पर्य प्रदान करना होता है, जो लेने की इच्छा नहीं रखता, जिसमें केवल सामने वाले को सुख और आनन्द देने की भावना होती है, और अप्सरा अपने विचारों से अपने कार्यों से अपनी व्यवहार ले और अपने साहचर्य में साधक को वह सब कुछ प्रदान करती है, जो उसकी इच्छा होता है। और यह इच्छा साधक के विवेक पर निर्भर है, यह आवश्यक नहीं है कि अप्सरा केवल भोग्या के रूप में ही होती है, मधुर वातानामाप, सही नारीदर्शन भविष्य का पथ प्रदर्शित, निरन्तर

जन प्रदान करने की क्रिया भी अप्सरा के माध्यम से ही संभव है, इसीलिए यह अप्सरा नाथा साधकों के लिए, युवती के लिए और वृद्धों के लिए भी समान रूप से उपयोगी है, वही नहीं अपितु रिक्षों के लिए भी अप्सरा साधना का विशेष गहन बताया है, जिससे कि उन्हें एक अभिन्न सखी मिल सके उपर्युक्त प्राण में आनन्द और उत्साह प्रदान कर सके।

कूल मिळा कर अप्सरा सौन्दर्य की साकार प्रदान होती है। इस सेफ़ ईन्डिया गुहा शरीर एक ऐसा महान हुआ, जल्दी व्युत्पन्नी की तरह लोकोंता हुआ कम्मीय गरी शरीर, जो संधिये लो भाषी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करते हैं। सुख और आनन्द को चेराएँ राख है, यदि देवताओं ने, उपर पूर्वजों ने ऋषियों ने और संवासियों ने अप्सरा साधन को उचित रौप जीवन में आवश्यक बताया है, तो मेरी राय में यह भाष्मा जीवन का आवश्यक तत्व होगा चाहिए।

क्या दर्तमान में भी अप्सरा का प्रत्यक्ष दिखाई देना सुन्भव है?

और मैं कहता हूँ कि निरिचना सौर पि:संदेह उसके प्रत्यक्ष दर्शन और उसका साहचर्य संभव है। जिस प्रकार से हम किसी अन्य पुस्तक की, ऐड की या मकान की देख सकते हैं, उसी प्रकार ये अप्सरा की प्रत्यक्ष देख सकते हैं, अपर्याप्त कर सकते हैं, और उसके साथ साहचर्य संभव है। क्या हवा को हम ऐसा सकते हैं कि वहाँ परिभाषा कहे तो हवा को देखना संभव नहीं है, अपितु उसका अनुभव होता है, और उस यह दोष के बाय कह सकते हैं कि हवा होती है, जिससे हमारा जीवन नियंत्रण बना रहता है। ठीक इसी प्रकार अप्सरा मदृश रूप में भी अनुभव होती रहती है, और जीवन को गति एवं आनन्द प्रदान करती रहती है, और प्रत्यक्ष रूप से भी प्राप्त होती है, और उसके द्वारा विनाश धन, त्रैय, वस्त्र, आभूषण ग्राम होते रहते हैं।

मैं अपने जीवन में कई साधनाएँ संप्रेष की हैं, जब नक साधना देते से उत्तरते नहीं, तब नक उनका आह्वास भी नहीं होता, और जब हम साधना देते में प्रवेश करते हैं, अपने मन को एकाग्र करते हैं, अपने मन को एकाग्र कर साधना देते में आगे बढ़ते हैं तो विविध प्रकार के अनुभव होते रहते हैं, विविध प्रकार के दृश्य और विविध दिखाई देते रहते हैं और जब हम साधना में सफरता मिल जाती है तो हमारा जीवन ही बवत जाता है, उस में आत्म विश्वास आ जाता है, एक नियंत्रण ग्राम ही जाता है कि हम वर्तमान युग में भी साधनों का साकार है, और उसमें यूर्ज सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

यदि हम उपने श्रस्ता को टटोल छर देखे तो देवताओं ने जैर हारे पूर्वज कवियों ने ग्रन्थत के साथ सीविय साधनाएँ संपदा की हैं, शीघ्रत्य की जीवन में प्रदूख स्थान दिया है, देवताओं की सजा ने जिन्द अन्सरए लूप करती थी। अप्सर के आथम पैर रथाई लूप से अप्सराओं का निवास था। विश्वामित्र ने अप्सरा साधना के माध्यम से जीवन जो दर्जन ब्रह्म की थी

यौं अप्सरा से सर्वाधित जितनी भी साधनाएँ हैं, उनमें शशिदेव्य अप्सरा नाधना अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मानी गई है, क्योंकि शशिदेव्य अप्सरा अत्यन्त दयालु स्वभाव की है और शीघ्र ही भिन्न होकर प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाती है उस साधना को दिखाएँ करने के बाद शशिदेव्य अप्सरा जीवन पर साधक के नियंत्रण में रहती है और साधक जो भी आज्ञा देता है, उसका मनोयोग एवंक पालन करती है।

शशिदेव्य अप्सरा साधक को प्रेर्भी के रूप में ही अनुभव और सुख प्रदान करती रहती है। उसकी निर्धनता को हमेशा हमशा के लिए समाप्त कर देती है, और उसे अपने जीवन में संपन्न और ऐश्वर्यवान कर देती है। शशिदेव्य अप्सरा अत्यधिक मुन्दर, तेजस्वी और शीघ्रदृष्टि की साकार प्रतिमा है, अत्यन्त नागुक, कम्मीय और बोड्डा वर्षीय युवती के रूप में साधक के सामने सज-धन कर बराबर बनी रहती है और नाधक चाहे तो दृश्य रूप में और वह चाहे तो अदृश्य रूप में उसके सामने रहती है, और उसका कार्य करके प्रसन्नता अनुभव करती है।

अज्ञ के युग में मेरी इन पंक्तियों को पढ़ कर सामान्य व्यक्ति विश्वास नहीं करेगा, जिनको बुद्धि का जीवन है जो संसार में अपने आपको ही बुद्धिमान समझ देते हैं उनको तो भगवान् भी नहीं समझा सकता, जो पण-पण पर आलोचना करने में ही अपनी शान समझते हैं, उनको साधना के बारे में कुछ बताना बेकार है।

पूर्वहरी ने एक स्वान पर कहा है कि उल्ल दिन को अपनी आखे बंद किये रहता है, और उसको यदि पूरा जाप नो वह वृद्धना के साथ यही कहता है, कि आकाश में सूर्य उगता ही नहीं, या सूर्य जैसा कोई देवता है ही नहीं और सूर्य से किसी प्रकार का प्रकाश या रोशनी नहीं, होती तो हमें सूर्य का क्या दोष? ठीक इसी प्रकार आज के वालावरण में सांस लेने वाले साधक भी इसी प्रकार से यदि अविद्यास की दीवार पर लड़े हो कर कहे कि साधना होती ही नहीं या अप्सरा के प्रत्यक्ष कर सकते हैं,

दर्शन संभव नहीं, तो तपस्त्रियों, शास्त्रों और शुरु का क्या बोध?

अप्सुरा साधना प्रयोग

अप्सुरा साधना संभव है, और इसे कोई भी साधक मनोयोग पूर्वक सम्भव कर सकता है। जब मुझे इस साधना से लाभ हुआ है, तब मैंने हम साधना के साम्राज्य से सफलता पाई है तो आप भी सफलता पा सकते हैं। और यह साधना कठिन नहीं है, आवश्यकता इस बात की है, कि आप में विश्वास ही, श्रद्धा ही, अपने मार्गदर्शक या गुरु के प्रति आस्था ही और द्वारा शास्त्रों के प्रति विश्वास ही, क्योंकि विश्वास के द्वारा ही जीवन में सब कुछ संभव है। जो प्रयत्न करता है, वह सफल हो जाता है।

किसी भी युद्ध को विना अप्त शस्त्र के नहीं जीता जा सकता ठीक इसी प्रकार साधना में यंत्रों की आवश्यकता होती है और उसके द्वारा ही साधना के युद्ध को जीता जा सकता है, और सफलता की जा सकती है।

शाश्वदेव्य साधना प्रयोग

यह साधना नात्र जाह दिनों की साधना है, किसी भी किसी को यह साधना नाम्नम की जाती है और अगले शुक्रवार की यह साधना सम्पूर्ण हो जाती है। इसमें यह आवश्यक नहीं है कि एक ही स्थान पर बैठ कर साधना सम्पूर्ण की जाय, यदि आपको इस अवधि में किसी अन्य स्थान पर जाना पड़े तो वहाँ पर बैठ कर के भी यही यात्रा में यह साधना को सम्पूर्ण किया जा सकता है, यह यात्रा कालीन साधना है, और इसको रात में ही

बबसे पहले अपनी आँखों के सामने अन्यन्त सून्दर आकर्षक मनमोहक अप्सरा का दिनन करे और फिर निम्न प्रकार से उसका ध्यान और आह्वान करे।

त्रेतोवय मौहिनी जोरी विचित्राम्बर-धारिणी
विचित्रात्संकृता रथ्या नर्तकी-वेष धर्तिरणीम्।
पूर्ण चतुर्दशजां जोरी विचित्राम्बर-धारिणीम्
यीजोऽश्रुत-कृया-रामा सर्वज्ञामभव-प्रदाम्।
कुरव नेत्रां शरदिन्दु-वक्त्रां विम्बवधरां
चल्वन-जलय-माल्याम्।
चीमांशुकां पात्र-कुचां मनोद्वारा विवरा सदा काम
करां विचित्राम्।

ध्यान के बाद निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करे।

मंत्र

उके हैं अरगच्छजल्य शशिदेव्य अप्सरावें नमः
११ माला मन्त्र जप देने के बाद साइक विश्राम करे, हम प्रकार निष्य करे, पर अपने साधना के रहस्य किसी को न बतावे, यदि इन आठ दिनों में कुछ दृश्य दिखावे भी वे तब भी

अगले आठदे विन शुक्रवार की रात्रि को अन्यन्त सून्दर आकर्षक मनमोहक शशिदेव्य अप्सरा साधक के सामने हैं यह शुक्रवार उपस्थित होती है, और वह साधक के पास ही घूटने से घूटना सदा कर बैठ जाती है, और नन्ना के साथ कहती है कि मैं तुम्हारी साधना के द्वारा तुम्हारे वश में हूँ और जीवन पर्वत तुम्हारे वश में रहूँगी, जब वह हाथ पर छाय दे कर वचन दे, तब साधक अपने आसन से उठ रखा हो और वह

इस साधना में किसी विशेष प्रवार के बरत्र या आसन भासने पात्र में रखा रुक्षा शशिदेव्य अप्सरा धन्त्र उपने गले आवि की आवश्यकता नहीं है, साधक चाहे तो धोती या अन्य और गायीर पर स्पर्श कराएं, इस किया के माध्यम से अप्सरा किसी भी प्रकार के बस्त्र धारण कर इस साधना को सम्पूर्ण उपस्थिति का विशेष आभास होता है तथा साधक के मन में कर सकता है। साधना काल में अपने वर्तों पर सुग्रिवित इत्र एक आनन्द के द्वितीय उत्तर लगती है।

आदि नगा कर साधना में बैठे हो ज्यादा उचित रहता है।

साधने किसी पात्र में गुलाब की पंखुडियां विलाकर (गुलाब न हो तो अन्य किसी भी प्रकार के पुष्प का उपयोग ही नकला है) उस पर शशिदेव्य अप्सरा धन्त्र को स्थापित कर दे। यह यंत्र अन्यन्त ही महापूर्ण गाना गया है। इस यंत्र को शुलाब की पंखुडियों पर स्थापित कर उस पर केशर का तिलक करे और पिर अशत, कुतुम, योली हल्दीय से धन्त्र का पूर्ण करे जल का एक कलश भरकर रथापित करें। फिर हकीक माला से

निम्न मंत्र जप के पश्चात साधक शशिदेव्य अप्सरा की अनिवार्य है इसके उपरान्त कोई विशेष कानना पूर्ण हो तो उस दिन इस मंत्र की ४ मालाएं धन्त्र के सामने करें।

अपने धन्त्र को तथा माला की विलो अन्य व्यक्ति को ग्रदान नहीं करना चाहिए, साथ ही अप्सरा साधना में किसी द्वजाकर की गन्धी भावना साधक के मन में नहीं होनी चाहिए क्योंकि अप्सरा द्वेष तुल्य योग शक्ति से युक्त होती है उनका कार्य साधक को अभीष्ट वर प्रदान करना है।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पवित्र। आपके परिवार का अभिज्ञ थग है। इसके साथनामक रूप्य की समाज के सभी दररों में समाज सम से स्वोचार किया गया है, ज्योति इससे प्रन्तु वर्ग की समस्याओं का बहु बरतन और सहज सुध में रामायित है।

वार्षिक विज्ञापन

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

छोड़ लाभिणा द्विष्ठिक द्यंश्

व्याकुल जब साधना पथ पर शुरू-शुरू में कदम रखता है, तो उसे सफलता प्रथम प्रथाल में मिल पाना कोई आशय नहीं बाली बात नहीं है। अम्भत है, कि अनुभवी न होने के कारण, साधना विद्य में नुष्टि तथा मंत्र उचारण में अशुद्धि हो सकती है... और छुटा तरह अपेक्षित कल प्राप्त नहीं हो पाता। लेकिन अनुभवी हो जाने पर भी यदि साधक को मंत्र साधनाओं में आंशिक रूप से सफलता हुतात नहीं होती, तो छुटका ताटपर्य चाह द्वुआ। कि साधक का अपने मन पर नियंत्रण नहीं है। लिना मन की एकाग्र किए मंत्र साधना में सफलता संदिग्ध ही रहती है।

छुट दान्त की पूजा स्थान में दृश्यप्रिय करने से साधना द्युल के बाहारण एवं साधक तेज मन में छिपेष परिवर्तन होता है, साधक का छिप शुरू होकर ह्यान एकाग्रता को प्राप्त करता है। तीर यहीं से तो प्रारम्भ होता है दान्त साधनाओं में सफलता का। एक प्रकार से यह यन्त्र, 'मंत्र साधना साफल्य दान्त' भी है। दुसरें प्रभाव से किसी भी साधना में सफलता की संभावना बढ़ने लगती है।

यह वर्ष पूर्ण विज्ञापन
दूर्क्ष है। क्षमते विद
कि नी भं जय की
आवश्यकता नहीं है।
किसी पूर्णिमा की रात्रि ५
बजे के बाद दंग ता पुण्य,
अज्ञात, दोप जे अक्षिम
पूजन कर पूजा रथान में
स्थापित कर दें। तीज माह
बाब जल में विकर्त्तिवत करें।

यह दूर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का तार्गेट सदस्य अपने रिसर्वी मिथ, रिस्तेदार या रसना को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप रसयां भी सदस्य बनाकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. ४ स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम रसयां करें।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क-195/- दाक खार्ट अमेरिका 45/- Annual Subscription 195/-+45/-postage

लम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, लॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान) Mantra-Tantra-Yantra

Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) -0291-2432209, 2433623 टेलीफॉक्स (Telefax) - 0291-2432010

वाक्यरोगी की वापी

मोषा -

यह महीना आपके लिए सुख समृद्धि लेकर आता है और आप घरेलू एवं व्यवसायिक जीवन में विशेष लाभ अनुमति देंगे। पर इस महीने शेषी धन की आपि भी हो जाती है। अत एवं धन का सेवन बहुमहीन कर ही उपयोग करें तथा किसी भी कानून पर सोच समझा कर ही बलाकर करें। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह अनुकूल है और रोगियों को इस माह राहत प्राप्त होगी। इस माह परिवार में कोई शुभ आयोजन होने की संभावना है। सेवन की ओर से अनुकूलता प्राप्त होगी। विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा के योग बन रहे हैं। पूर्ण उत्तिवास देनु प्रसाद लक्षणी साधना (दिसंबर २००२) संपन्न करें। विशेष शुभ तिथियाँ - ५, ८, १२, १३, १५, २३, २४, २८ हैं।

वृष -

इस माह नवा व्यापार आरम्भ होने की संभावना है। धानु से संबंधित व्यापार लाभदायक सिद्ध होगा। नीकरी पेशा के लिए भी प्रयोगशन के अवसर प्राप्त होंगे। राज्य पक्ष की ओर से अनुकूलता एवं सम्मान प्राप्त होगा। अद्वाली मानसे लंबे रिवैच सकते हैं। आकर्षिक धन लाभ का योग क्षण है भल: लाटरी, सहु आदि में धन व्यवहार करें। अपने विचार दूसरों पर न योग्य अन्यथा विवाद खड़ा होने की संभावना है। नीवन भाषी की उपेक्षा न करें तथा विवादों को धैर्य से सुलझाने का प्रयत्न करें। भाष के अंत में तीर्थ यात्रा तथा मांगलिक कार्यों का योग बन रहा है। इस माह आप भाग्योदय साधना (अक्टूबर २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ३, ९, ११, १३, १७, २१, २५, २७, ३० हैं।

मिथुन -

कल्पना की दुनिया को छोड़कर वास्तविकता के धरातल पर उत्तर कर विचार करें और आपने कार्यों का गति दें। घर के किसी सदस्य को लेकर वित्त बढ़ेगी। इच्छित आप के अवसर प्राप्त होंगे भल: आप प्रयत्न करें। अप्रत्याशित भन प्राप्ति के योग भी बड़ा बन रहे हैं। इस महीने आपको किसी गति वर भी जाना पड़ सकता है जो कि आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगी और किसी व्यक्ति विशेष से भी मुलाकात होगी जो आपके कार्यों में सहायक रहेगा। साधनात्मक दृष्टि से यह माह अत्यन्त अनुकूल है। योग्य परिश्रम से आप आपांत सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अनुकूलता देनु आप चैतन्य धैर्यी साधना (मार्च २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, ६, ९, ८, १३, १५, २०, २५, हैं।

कक्ष -

आपको समय से जो आपके मन में इच्छाएँ थीं वे पूर्ण होंगी और आपको कई ऐसे अवसर प्राप्त होंगे जिनके कारण आप उत्तरि प्राप्त कर

सकेंगे। गिरों भट्टयोगियों पर्यंत परिवार जीवों से पूर्ण सहायता प्राप्त हो सकेगा परन्तु वित्त को लेकर आप आपकी परेशान रहेंगे। किसी नीव नीव का भी योग बन सकता है जिसके कारण आप अपने सापको शारीरिक मानसिक स्वप्न से अधिक गवरण अनुमति कर सकेंगे। यह नुस्खा खरीद पर निधन रखें। आप्यात्मिक अनुकूलता इस माह विशेष स्वप्न से प्राप्त हो पाएगी नदा किसी वरिष्ठ व्यक्ति का भी भव्यता प्राप्त होगा। इस माह घनवा देवी साधना (मार्च २००२) अपने करें। शुभ तिथियाँ - २, ८, १०, १२, १५, २१, २६, २८ हैं।

सिंह -

पुराने अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे, नए सापके विशेष में अनुकूलता देने वाले होंगे। विश्वसाधन की वित्ति ने यात्रान रहे, रात्रु हावी होने का प्रयाप्त करें। नीमीन, नायगत के गमानों की उपेक्षा न करें तथा विवादों को शोधाती शीघ्र निपटाने का प्रयत्न करें। बार विवर की वित्ति में बंधम से काम लो। स्वास्थ्य के गबंध में सनके रहे स्वास्थ्य यिसके को संभावना है। कारोबार के बंधमें भी जह यात्रा एवं फलप्रद सिद्ध होगी। इस मामले में यह माह अत्यन्त उत्तराह वर्षाक एवं शेष बड़ा जा सकता है। पूर्ण व्यक्ति देने अनुकूलता देनु प्राह्णीरी साधना (दिसंबर २००२) करें। शुभ तिथियाँ - १, ३, १३, १४, १६, २२, २३, २६ हैं।

कन्या -

किसी की जाती में आकर अपना नवकलान न करें आपसी भलभेद से बचें। पड़ोसियों तथा गिरों से सहयोग मिलेगा, विस्वसे रुक्षा द्वारा पूर्ण होगा। अधिकारियों के साथ सीलाईयों व्यावहार बनाकर चलें, लाग में रहेंगे। प्रग प्रसंग अनुकूल निधन नहीं होगे। नीवन भाषी के साथ डैचारिक मतभेद न उत्पन्न होने दें। परिवार के विस्तीर्ण सदस्य के बीमार होने से चिंता बढ़ेगी। आपका स्वयं के स्वास्थ्य की सामान्य ही रहेगा। धार्यक एवं मांगलिक कार्यों में माह के अंत में व्यक्ति देनी चाहिए। आप इस माह देनुपान साधना (दिसंबर २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - २, ८, १७, १९, २०, २१, २५, २६, ३० हैं।

तुला -

समय अनुकूल रहेगा, परन्तु जलवायी से कोई कार्य नहीं करें लंबे समझा कर एवं मीलिक लूहबूझ से ही कीर्द कार्य करें या निर्णय लें। दूसरों से सलाह लेना आपके लिए प्रतिकूल ही निधन होगा। ओह नवा कारोबार आरम बरना चाहें तो उसके लिए यह समय दीक नहीं। नीवरी देशा व्यक्तियों का रथानांतरण ही सकता है। विद्यार्थी अपने समय को पूर्ण उपयोग करें तभी अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। बेरोजगार

सर्वार्थ, अमन, नीति पत्र, दिपलक्षण, शिफ्ट, मंग

सर्वार्थ निधि योग ५, २२, ३१ यह ८, १८, १९ जन

शिफ्ट योग १०, २६ मई ५, ६, १३, १०, १५ जन

अमन योग ३१ मई ५, २४, २८ जून दिपलक्षण योग २५ जून

व्यक्तियों को लाक्षात्कार एवं परीक्षाओं में साफलता प्राप्त होती है। वाहन प्रयोग काम समय विशेष साधारणी भरते नशा नीति को साफल प्रयोग नहीं करे तो खेड़कर है। उग्र माह अनुकूलता हेतु साफलकाल साधना (फलवरी २००२, संपत्ति करे। शुभ तिथियाँ - ५, ८, १८, ३१, ४८, २३, २५, २९, ३१) हैं।

वृद्धि व्यक्त-

आपके सहवाग से नियों और सर्वार्थों के स्वेच्छा कर्त्ता संग्रह होते तथा उनको लाभ प्राप्त होता। नियम से वे आपकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। इस माह आपको सभात में भी यश एवं सम्मान प्राप्त होता। अमर व्यापार को लेकर आप पिछले कुछ समय से विनियत है तो शोर रखने की कठोरि इस माह से लिपित अनुकूल होने की सम्भावना है तथा आपको आशानीत लाभ भी प्राप्त हो सकता है। पारिवारिक उत्तराधिकारी का पूर्णता से नियोग करे। शोषित वर्ग के लिए यह माह अनि उत्तम सिफ़र होता। गहिनाओं एवं विद्यार्थियों को संधार के उत्तरान सफलता प्राप्त होती है व्यवस्था साधना (जप्रैल २००२) करना आपके लिए अत्यधिक है। शुभ तिथियाँ - ४, ९, ११, १३, १५, १९, २२, २५ हैं।

धन्तु -

राजनीति से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह माह विशेष कर उत्साह वर्धक सिद्ध होता। अनुकूल समाचार प्राप्त होने तथा मन में प्रकृत्यात्मा का संधार होता। आपातिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। इस माह धन्यवाच के कई योग खुलते हैं। नया वाहन या संपत्ति भी खुलते होते का योग है। ऐप्रैल वर्षों में वावधान रहने का आवश्यकता है। नीकरी पेश। एवं व्यापारी वर्ग के लिए समय लाभदायक होता। राज्य की ओर से अनुकूलता प्राप्त होती। वापत्य नीति नमुन रहता होता तथा संतान पक्ष अपेक्ष अनुकूल रहेगा। बेरोजगार व्यक्ति आर्थिक दृढ़ता प्राप्त कर पायेंगे एवं साकृता प्राप्त करेंगे। आप अच्छात्मा काली साधना (दिपलक्षण २००२) करें। शुभ तिथियाँ - २, ४, ७, १०, १३, १५, २२, २३, २८ हैं।

मकर-

इस माह कुछ समस्याएँ एवं जटिल परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। परंतु विषय से विषय लिया है आप योग नहीं खोलते तथा दूढ़ना एवं आत्मविश्वास से इरु समस्या का सामना करने हुए विषय प्राप्त करेंगे। शुभ एवं प्रतिदूषी भी आपको रुक्षबृक्ष, ईम एवं साहस से आपवर्क्षकित रह जाएंगे तथा स्वयं आप से समझाता करने हेतु तत्पर हो जाएंगे। माह के समय में यात्रा पर निकलना पहल स्वतन्त्र हो जाएगा। उससे प्राप्त होंगी वह आपको आनंदित कर देंगी। शुभ विजय एवं सफलता हेतु सर्वसाधा शांति घटाकर्ण साधना (जप्रैल २००२),

यह मास उत्तोतिष्ठ के दृष्टि से

उत्तर दृष्टि का प्रभाव सारत की तर्दा उत्पत्तिसा पर उत्तर तथा भारत को लाभिक लाभ प्राप्त होना दूसरे अन्य देशों के लाभ अप्पमानकर्त्ता भी याकेन्द्रिय के भाव तथा समय में शोर अवश्य तुष्टि दृष्टि का प्रभाव में होना का लाभ उत्तर देश में वर्षी के करणा एवं इत्यादि से जल ताली दृष्टि तथा मानवता विनाश से अद्यता महामारी में लिंगव दृष्टि होगी।

संपूर्ण करें। शुभ तिथियाँ - ३, ८, १६, १३, १८, २०, २३ हैं।

कुंभ-

इस महां आप कुछ नए विन बनाये अद्यता नए अनुकूल स्वामित करें जो कि भवित्व में लाभ दायक सिद्ध होंगे। सांस्कृतिक एवं राष्ट्रान्वित आदर्शों में आप बढ़ चढ़ कर उत्तिष्ठ होंगे। नवालन्य सामान्य रहेगा। संतान की ओर से प्रसन्नतादायक रागचार प्राप्त होंगे। घर में अनियोगी के अन्नमन से भी वरिष्ठर में प्रसन्नता का बान बरपा होगा। बेरोजगार व्यक्ति अग्र धूर्म स्वर से प्रसन्नता ले तो संतोषजनक सकूलता प्राप्त हो सकती है। बात्रा व्यक्ति समय स्वाक्षर्य का विशेष ध्यान रखने की अवश्यकता है। नौकरी पेशा लोगों को चाहिए कि कार्य गति से बेरे नया अधिकारियों से मतभेद न करें। इस माह आप शुभस्थ सुख विवरणी साधना (फलवरी २००२, संपत्ति करे। शुभ तिथियाँ - १, ६, ११, १३, १६, २१, २३, ३० हैं।

कीरी-

आपके लिए यह माह बहुत ही शुभ तथा उत्साह वर्धक दृष्टि होता। आप जपने लक्ष्य की ओर नीचना से बढ़ पाएंगे तथा उन सभी इच्छाओं को पूर्ण कर पाएंगे जो आपको अपील हैं। अधिकारियों से संबंध मध्ये रहेंगे तथा आप प्रशंसा के पत्र होंगे। आध्यात्मिक दृष्टि से भी यह माह आपके लिए महत्वपूर्ण है तथा आप बढ़-चढ़ कर साधनाएँ संपन्न करेंगे। वाहन एवं संपत्ति के क्रय विक्रय के लिए अमर्य अच्छा है तथा आपको इसमें लाभ होंगा। ही सकृत हो बढ़ बास्तर का व्यक्ति घर में कलन्ह करने वा प्रयत्न करें। आप साधारण रहेंगे तो ये प्रयत्न विजय रहेंगे। इस माह आप निषिद्धलेखकर गुरु सम्बन्ध साधना (नववर २००२) संपत्ति करे। शुभ तिथियाँ - ३, ९, १४, १५, १८, २१, २३, ३० हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

१६ ई	वापत्र शुक्र वा-५	गुरुवार तुल पूर्णि
२६ ई	ज्येष्ठ द्वय वा-४१	सोमवार आप एकादशी श्रावण
३१ ई	ज्येष्ठ कुप्र वा-३०	वारिशार शनिवारी अमावस्या
३१ ई	ज्येष्ठ कुप्र वा-३०	शनिवार वट सातिशी एवा
२ जून	ज्येष्ठ शुक्र वा-२	लोकवार तथा इत
९ जून	ज्येष्ठ शुक्र वा-४	लोकवार एड्डा नवमी
१० जून	ज्येष्ठ शुक्र वा-१०	मालवार गता वात्रा पर्व
१० जून	ज्येष्ठ शुक्र वा-१०	मालवार दुर्गा शेष उत्तमी
१० जून	ज्येष्ठ शुक्र वा-१०	वात्सव निवाल एकादशी

रामाया हु

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए साध्य का वह रूप यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उज्ज्ञिति का कारण होता है तथा ऐनहे जान कर आप रख्य उपने लिए उज्ज्ञिति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में साध्य के अंषु रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आदर्शक किरी भी कार्य के लिए, चाहे वह व्यापार या सम्बन्धित हो, जीकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुग उत्पत्ति से साधनीय हो इथां ग्रन्थ किरी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस व्यष्टिम समय वा उपयोग कर सकते हैं और राकलाता का प्रतिशत ८०-०; अपके अध्ययन में अधित हो जायेगा।

बहु मुहूर्त वा अवय प्रातः ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।

वार / दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (नई १८-२५) (जूल १८-१५)	दिन ६. ८.२४ से ११.३६ २.४८ ३.३६ से ४.२४ तक रात्रि ५.४८ से १०.०० तक ४.२४ से ०६.०० तक
सोमवार (नई १९-२६) (जूल २-९-१६)	दिन ०६.०० से ०७.३६ तक ९.१२ से ११.३६ तक रात्रि ०८.२४ से १३.३६ तक ०२.४८ से ०३.३६ तक
मंगलवार (नई २०-२७) (जूल ३-१०)	दिन १०.०० से ११.३६ तक ४.३० से ६.०० तक रात्रि ०६.४८ से १०.०० तक १२.२४ से ०२.४८ ०५.१२ से ०६.०० तक
बुधवार (नई २१-२८) (जूल ४-११)	दिन ०६.४८ से ०८.२४ तक ८.२४ से १०.०० तक ०२.४८ से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से ९.१२ तक १२.२४ से ८.४८ तक
गुरुवार (नई २२-२९) (जूल ५-१२)	दिन ०६.०० से ०७.३६ तक १०.०० से ११.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०९.१२ से ११.३६ तक ०२.०० से ०४.२४ तक
ब्रह्मवार (नई २३-३०) (जूल ६-१३)	दिन ०६.०० से ६.४८ तक ०७.३६ से १०.०० तक १२.२४ से ३.३६ तक रात्रि ७.३६ से ९.१२ तक १०.४८ से ११.३६ तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
शनिवार (नई २४-३१) (जूल ७-१४)	दिन ६.०० से ६.४८ तक १०.३० से १२.२४ तक रात्रि ०८.२४ से ९.१२ तक ०२.४८ से ०३.३६ तक ०५.१२ से ०६.०० तक



गुरु गुरु वैदुषी विष्णुविदि ने कहा है

किसी भी माय का प्रत्यक्ष उरने से पूर्ण प्रत्येक जाति के जल में स्थाय अस्तित्व को बाहर नहीं रखती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, लकड़ा लाने होंगे या नहीं, चाला या उपरियत नहीं हो जायेगी, जल की दैवति पर वह सब की तपाकियता कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय आपने जीवन में उपलब्ध जाता है, जिनसे उसका ग्रहण किए उसके अनुकूल है। आमने गुण ज्ञन जाए। युज ऐसे ही उपाय आपके समझ ग्रहण हैं, जो विश्वामित्र के विशेष व्यक्तिगत विश्वामित्र-विश्वामित्र गंधी से संलिप्त हैं, जिन्हें यह प्रत्येक देवता के अनुभाव अनुभुत किया जाया है तथा जिनके सम्मान करने पर आपका पूजा दिव ऐसे सफलतादायक बन सकेगा।

जून

१. “अ हौं हीं सूर्यां नमः” मंत्र का १५ बार जप करते हुए उग्ने सूर्य को जल अर्पित करें।
२. सहस्रादाह मृत्युनृप माला मंत्र (जनवरी २००३ अंक) का एक बार प्रातः जप करें।
३. “हनुमान गृटिका” (६०/-) का तेल, कुम्भ, अक्षत में पूजन कर हनुमान जी के मंदिर में रहा जाए। ब्राह्मण समाप्त होंगे।
४. भगवान गणपति का पूजन लड्डु और दूध से करें। मंगल होगा।
५. आज प्रातः काल विशेष गुरु एजन अवश्य लंपन करें।
६. घर से निकलने से पहले भगवति जगदेवा का स्मरण करें। सफलता प्राप्त होगी।
७. “आपद्युयारिका” (५०/-) को पूरे घर में धमा कर ऐसवा का रमरण करते हुए दक्षिण दिशा में फेंक दें। गेन रामाय होंगे।
८. प्रातः काल ब्रह्म महूर्ति में देविक पूजन स्पृष्ट करते के पश्चात उग्ने सूर्य के दर्शन करें। शुभल्य प्राप्त होगा।
९. भगवान शिव को आक या गुलाब के पुष्प अर्पित करते हुए १३ बार “ॐ गृं सः मा पालय पालय” का जप करें।
१०. घर से बाहर जाते समय पहले दक्षिणा ओर बाहर रहें। संकट दूल्हा।
११. विष्णोकुश वशनूत्र च पात्रं दधानं करीर्मीदकं पुष्करेण। स्वपत्यापतं देमभूषा मराडवं गणेशं समुद्दिनेशाममीढ़॥ उपरोक्त प्रलोक का पात्र आर जप करते हुए भगवान गणेश का पूजन करें।
१२. आज गुरु मंत्र का ४ माला अस्तिरित जप करें।
१३. आज पांच लिंगन कल्पाजों की भोजन पर दक्षिणा भेट करें।
१४. “ॐ ऐं कल्मी श्रीभास्ये नमः” का प्रातः काल ११ बार जप करें।
१५. आज पीले रंग की प्रधानता आपने बननी में रहें। शुभ रहेगा।
१६. आज प्रातः माय को रोटी रित्वाने के पश्चात ही भोजन करें।

१७. १८ बार “ॐ हुं हुं हसी छसीहुं हुं हनुमते नमः” का जप करते हुए हनुमानजी की चूर्मे का भोज लगाएं।

१८. “सुलक्षणा” (३०/-) का प्रातः अक्षत, कुमुद से पूजन कर दिन भर साथ रखें, आम को जल में प्रवाहित करें। कार्य सिद्ध होंगे।

१९. आज राद्युसुदेव का पूजन पीले पुष्पों पर धीले आकृत ये करें।

२०. निम्न मंत्र का पांच बार जप करते हुए पांच लाल पुष्प भगवति दुग्ध को अर्पित करें।

उक्त सर्व मंजस्त्र मांजस्त्रे शिवे सर्वार्थसदिके।
सरस्यादे उक्तस्त्रके जौरि ज्ञायादिणि नमास्तुते॥

२१. युरु जन्म दिवस के दिन “निखिल स्तवन” का पाठ करें। दिन घर गुरु स्वारण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प ले।

२२. आज पांच बार “सरस्वती ऋत्वात्” (दिसंबर २००३) का पाठ करें। कल्याण होगा।

२३. “प्रातः कालीन गुणरित वेद मंत्र” के सेष (३०/-) से शिव ताङ्ग स्तोत्र का अवधारण करें।

२४. १ बार हनुमान चालीस के जप से विज्ञ एवं शत्रु पराप्त होंगे।

२५. “ॐ श्री श्री श्री श्री नमः” मंत्र का ६ बार जप करते हुए छ कमल भगवति लक्ष्मी को अर्पित करें। धन लाभ होगा।

२६. आज अवश्य ही शुक्र गीता का पाठ करें।

२७. आज प्रातः काल तुलसी पूजन करें।

२८. “ॐ शशीश्वराय नमः” का ८ बार जप करते हुए भूर्भूतों का तेल “शशीश्वरी मृटिका” (४०/-) पर चढ़ाएं। किर जाकर उसे पीपल के पेड़ के नीचे रख आए। संकट दूर होंगे।

२९. प्रातः सूर्य नमस्कार संपूर्ण करें। दिन इतिपूर्ण व्यनीत होगा।

३०. किसी शिव मंदिर में जाकर शिवलिङ्ग पर तुल्ध मिश्वित जल अर्पित करें।

जीवन सारिता

यो तो किसी भी शोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पाल अचूक इलाज है, परन्तु मात्रों के माध्यम जो चिकित्सा के दीर्घ धारणा यह है कि मात्री शोगों का छद् शब्द मनुष्य के मन में ही छोटा है। मज यह पहुँच दुष्प्रभावों को यदि जन द्वारा विवरित कर लिया जाए, तो शोग स्वायत्री रूप से बोन्ह छो जाते हैं।

१. आपका बुदापा आनन्दप्रद हो सकता है, यदि इस विधि की अपना लौटे हैं आप ...

बुद्धावस्था आता व्यक्ति का अपने भविष्य के प्रति अनेक चिंताओं से भर जाना है। यह आवश्यक नहीं, कि बुद्धावस्था में पुल अथवा पुरी सहयोग प्रदान करें ही, अचानक कोई ऐसी समस्या नहीं आ जाए, जिसके कारण बुद्धावस्था दुखमय बने।

व्यक्ति अपने बुद्धावस्था में सुखमय स्थिति प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार की बीमा तथा योजनाएं करवाता है, इसके साथ ही आप इस प्रयोग को भी सम्पन्न करे और जीवन को आनन्दयुक्त बनायें।

शुक्रवार के दिन 'हमजाद' को गुलाबी रंग के वर्षन पर स्थापित कर उस पर इत्र लगा दें तथा उसके समक्ष चार तेल के दीपक लगा दें। प्रत्येक दीपक को देखते हुए २१ बार संबंध का उच्चारण करें। यह प्रयोग सात दिन का है।

जग्न

॥ उै है श्री है उै कद॥
प्रयोग समाप्ति पर 'हमजाद' पर इत्र लगाकर नदी में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री पैकेट - १००/-

२. जब आप सब कुछ करके हार जायें, तब यह करें

कई बार किसी कार्य विशेष को पूर्ण करने के लिए आप सारे प्रयत्न कर लेते हैं, परन्तु आपकी लाख कोशिशों के बावजूद भी जब वह कार्य नहीं सम्पन्न हो पाता, तो आपके हृदय में निराशा व्याप्त हो जाती है। उस कार्य के न होने पर यदि आपको सामर्जिक, यारिक या राजनीतिक स्थिति स्थिति पर प्रभाव पड़े, तो आप अत्यधिक विद्वित भी हो जाते हैं। आप हर समय चिन्तित रहते हैं, कि किस प्रकार से यह कार्य सम्पन्न हो, जिससे कि किसी प्रकार से भी हानि का सामना न करना पड़े।

'अमृजा' के सामने ११ दिनों तक नित्य २१ बार इस मंत्र का जप करें -

मंत्र

॥ उै हौ क्री हु उै ॥

यह प्रभेषण एकान्त में करें। प्रयोग समाप्त होने पर ब्रह्मद विनाशित कर 'अश्वुष्णा' को नदी में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग के विषय में किसी को भी न बतायें। ऐसा करने पर आपके कार्य में यही जिननी भी रुकावट करो न हो, कोई न कोई मार्ग अवश्य प्राप्त होगा उसे पूर्ण करने का।

साधना सामग्री पैकेट - ८०/-

३. अपने अनिद्रा के दौल की हुड़ा प्रबन्ध से समाप्त करिये।

क्या कहा आपने, आप को नींद आनी और इसके लिए आपको रोज रात को नींद को नींद लेनी आवश्यक हो जाती है और तिर भी आप याने हुए भी चैन की नींद नहीं ले पाते। आपको रवानाविक नींद लिए हुए कई माह बीत चुके हैं। कहीं इस रोग के कारण आपका स्वास्थ्य तो प्रभावित नहीं हो रहा है। आपका सीन्डर्ड कहीं ढूँढ़ने तो नहीं लगा। यह रोग आपके लिए हानिकारक, तो नहीं साक्षित हो रहा है। यदि ऐसा है तो आप यीश्वर ही इससे छुटकारा प्राप्त कर लीजिये।

आप किसी भी गति को स्नान कर सफेद वस्त्र में कुकुम ने दिलव बगल बमायें, अपना नाम कुकुम से निखुकर उप पर 'रोम मुक्ति गुटिका' को स्थापित करें। तो विन तक गुटिका के समक्ष निम्न मंत्र का भवलह बार जप एकाह विज हो कर करें -

मंत्र

॥ उ॒ अं अ॑ अनिद्रा॒ नाशद्य अं उ॑ फट ॥

जप समाप्ति के बाद शान्त मन से लेट जायें और नींदिन के पश्चात गुटिका को नदी में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री पैकेट - ७०/-

४. ऐहौरे को र्त्यैव तरीताजा बनाए रखें।

कई बार जिनका समझाती है, कि सुन्दर होना ही पर्याप्त है लेकिन वास्तव में यह सत्य नहीं है। सुन्दरता के लाभ ही यदि सीन्डर्ड में नाजीनी न हो, तो सीन्डर्ड उस अप्सी कूल के समान दिखाई पड़ता है, ना भुज्दर तो है पर बाच्चीपन लिए हुए। ऐसा भीन्दर्ड भला किस प्रकार से प्रसन्नता प्रदान कर सकेगा और यदि आपका चेहरा भी हर दिन मुरझाया जिखेगा, तो आपका साथ चौन चाहेगा।

मुझता क्या है? दर्ये बहुत कम ही अपने जीवन में समझ पाते हैं, क्योंकि नीचरों को अमझना उसे अपने व्यक्तित्व में उतार देना कठिन नहीं है, पर आवश्यकता इस बात की है कि उसे समझ कर अपने जीवन में उतार देना। बाच्चीपन या

मुरझाया देहरा अधिष्ठित नहीं करता अपितु आप-पास के बानावरण में भी शिथिलता उत्पन्न कर देता है।

आप अपने जहर का ताजगी से परिपूर्ण कर दीजिए इस प्रकार जे। सोमवार के दिन प्रातःकाल ही उठकर किसी पान में केवर ये अवास्तिक बनाकर उसमें "सीन्डर्ड गुटिका" स्थापित करें। गुटिका पर कुंकुम, पुष्प व लक्ष्मी चढ़ा कर पूजन करें। यी तो दीपक लगाए। गुटिका के समक्ष रहे और निम्न मंत्र का जप पाच विन तक करें -

मंत्र

॥ उ॒ श्री शीन्डर्ड शिद्धये फट ॥

पांच दिन पश्चात् गुटिका को किसी निर्जन स्थान में ढाल दें। इस बात का ध्यान रखें, कि मंत्र जप प्रतिदिन विशेषत मग्न पर आरम्भ हो।

साधना सामग्री पैकेट - १०/-

५. अपने मस्तिष्क की कमता को पूर्ण विकसित करिये।

आज का शीनिक युग प्रतियोगिताओं का युग है, जीवन के प्रत्येक क्षण में आपको अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए विशेष प्रकार का प्रतियोगी परिस्थितियों का नामना करना पड़ता है। जिस व्यक्ति का मस्तिष्क जितना अधिक कियाशील, दृष्टिक्षम होता है, वह उत्तमी ही श्रेष्ठता अर्जित कर जेता है। आप भी अपने मस्तिष्क की क्षमता को पूर्ण विकसित कर सकते हैं इस प्रयोग के माध्यम से -

सर्वप्रथम अपने पुना अथवा में युक्त विन के सामने चैतन्य यत्र को रखा प्रसिद्ध कर उसको पूजन अक्षत, कुकुम, पुष्प से कर उसके समक्ष भी का दीपक बलाकर उप धंत पर निम्न नीचे लिखे मंत्र का १५ मिनट तक बोलते हुए चबल चढ़ाने जाएं और फिर वह मंत्र जप समाप्त हो जाए तो दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव से मन ही मन प्रार्थना करें कि हे गुरुदेव मुझे भैरों प्रत्येक कार्य में सफलता प्रदान करें फिर इस धंत को धारण कर लें और नित्य १५ मिनट रोज गुरुदेव के सामने ध्यान करें।

मंत्र

॥ उ॒ श्री चैतन्यं चैतन्यं सद्बौद्धः उ॑ फट ॥

धंत को ४० दिनी तक धारण किये जाए। ४० दिन के पश्चात् इसे नदी में प्रवाहित कर दें। कि किसी प्रिय विद्युत में बढ़ा कर जा जाए।

साधना सामग्री पैकेट - १३०/-

बटुक भैक्षण रात्यानि

आपके कामने क्षत्रिय गिडगिडारें, बिक्षुर जाहुं और आप चुमाव में, भुकदओं में और जीवन में पूर्णतः विजयी रहे। पूर्ण पौकष युक्त श्रेष्ठतम् क्षाद्धना - केवल आपके लिये पहली बाब . . . जो काबल है, जिसे प्रत्येक गृहकथ व्यक्ति निङ्कर होकर कद करता है . . . ज्योर्ध्व शुक्ल दबामी अर्थात् १० जून २००३ की 'बटुक भैक्षण जयन्ती' है इस जन्मय आप इक अनुरुद्ध क्षाद्धना प्रयोग की कब अवधिय ही सफलता प्राप्त करें -

जीवन अनेक प्रकार के संयोगों से भरा हुआ है, अनेक गान्धों में भी बटुक भैक्षण की महिमा वर्णित है। शरवानुसार प्रकार की विषमताओं से युक्त है वर्तमान युग में परंपरा पर भैक्षण की रुद्र, विष्णु व इक्ष्मा का स्वरूप माना गया है। इस इसी बाधाएँ हैं, उसी परेशानियों हैं, उसी शत्रु है, कि ऐसी प्रकार से भैक्षण के अनेक रूप वर्णित हैं - 'ब्रह्म रूप', 'पर स्थिति में व्यक्ति के निए एक ही मार्ग रह जाता है, जिसके 'ब्रह्म रूप', 'पूर्ण रूप', 'निष्कल रूप'में - वांगमनसागोचर, द्वारा वह पूर्ण रूप से विजयी हो सकता है और अपने जीवन विश्वातीत, भवप्रकाश, पृणाहमाव, एव सकल रूप में शोभण, की प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर सकता है, वह मार्ग है मन्यु, तस्युरूप आदि।

- 'साधन'

प्राचीन काल से अब तक साधनाओं का आश्रय लेकर स्व की भैक्षणतार की विवेचना शिवपुराण में इस प्रकार अनेकों . . . या यो कहें, कि सभी कार्य सफलता पूर्वक वर्णित हैं - सम्पन्न होने रहे हैं - होते भी हैं।

साधनाओं के अनुसंधान कर्त्तव्यों ने कुछ ऐसी साधनाओं की जीवासा उपज हुई, वे परदर्श को जानकर उसको का अनुसंधान किया, जो कि व्यक्ति के दैनिकचर्या के संकट दृपद्या लक्ष्य दाहते हैं। यह जीवासा लकर वे और छोटी स्रोती परेशानियों का सहज निवान बन सकें। इस रूपस्त शृंखिगण देवताओं के बहुचे, वहों उन्होंने ब्रह्मा प्रकार की साधनाओं में बटुक भैक्षण की साधना श्रेत्रम् साधना से विनाश रत्नर से निवाल किया, कि इस रूप शृंखिगण मानी जाए है, जिसका कल तत्क्षण मिलता है।

इक बार समस्त शृंखिगणों में ररमत्त्व को जालने दृपद्या लक्ष्य लकर वे उपज हुई, वे परदर्श को जानकर उसको रूपस्त शृंखिगण देवताओं के बहुचे, वहों उन्होंने ब्रह्मा उस ररमत्त्व को जालने की जीवासा से जापके पास

जाए है, कृपा करके हमें बताइये, कि वह कौन है, जिसकी तपस्या कर सके?

इस पर ब्रह्मा ने रघुवंश की ही इच्छा करने वाले कहा—

मैं ही यह परमतत्त्व हूँ।

ब्रह्मिण उनके इस उत्तर से सन्तुष्ट न हो सक, तब वही प्रह्ल लेकर वे श्रीरामायर में विष्णु के पास गये, परन्तु उन्होंने भी कहा, कि वे ही परमतत्त्व हैं, अतः उनकी आराधना करना श्रेष्ठ है, किन्तु उनके भी उत्तर से कृष्ण लम्ह नन्दुष्ट न हो सका, अंत में उन्होंने वेदों के पास जाने का निश्चय किया। वेदों के समक्ष जा कर उन्होंने यही जिजासा प्रकट की, कि हमें परमतत्त्व के बारे में जान दीजिये।

इस पर वेदों ने उत्तर दिया

शिव ही परम तत्त्व है, वे ही सर्वश्रेष्ठ और पुजन के योग्य हैं।

परन्तु यह उत्तर सुनकर ब्रह्मा और विष्णु ने वेदों की बात को अस्वीकार कर दिया। उसी समय वहाँ एक



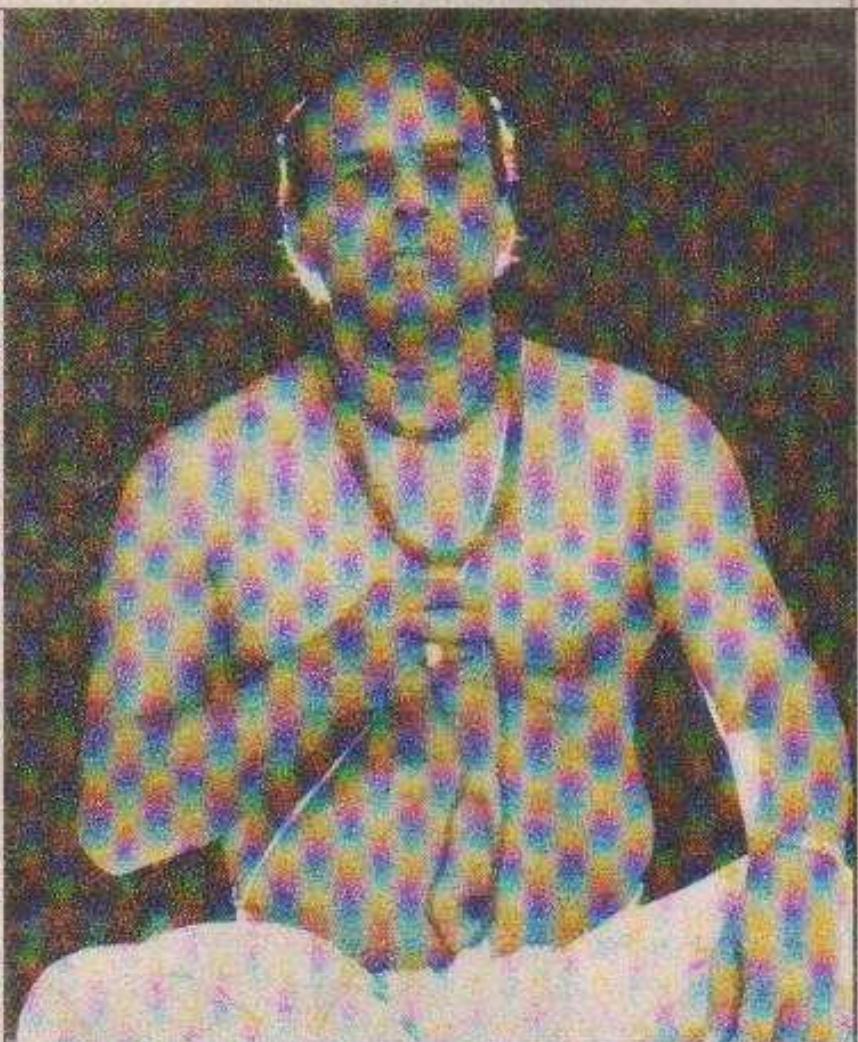
बद्रुक भैरव की लाघवा लकान्य लाघवा होती है, अतः लाघव किस कामना की पूर्ति होतु, वह चाहे चुनाव को लम्बित्यत हो, मुकदमे में विजय प्राप्त करने को लम्बित्यत हो अथवा विलोधियों को द्वांत करना हो, जीवन के किसी भी पक्ष में कोई भी लम्बाया आ रही हो, उसके लिंगाकरण का लहज उपाय यही लाघवा है।

तेजपुज प्रकट हुआ और धीरे धीरे एक पुरुषाकृति को अलग कर लिया। यह देख ब्रह्मा का पंचम सिर झोखोन्मत हो उठा और उस आकृति से बोला - 'पूर्वकाल में मेरे भाल से ही तुम उत्पत्त हुए हो, मैंने ही तुम्हारा नाम कह रखा था, तुम मेरे पुत्र हो, मेरो इरण में आओ।'

ब्रह्मा की इस गवोंकि से वह तेजपुज कुपित हो गया और उन्होंने एक अत्यन्त भीषण पुरुष को उत्पन्न कर उसे आशीर्वाद देने हुए कहा - भाष कालराज हैं, वयोंकि काल की भाँति शोधित हैं। आप भैरव हैं, वयोंकि आप अत्यन्त भीषण हैं, आप काल भैरव हैं, वयोंकि काल भी आप से प्रवर्भीत होगा। आप आमर्दक हैं, वयोंकि आप दुष्टात्मजों का नाश करें।

शिव से बर प्राप्त कर आ भैरव ने अपने नखार से ब्रह्मा के अपशाधकर्ता पंचम सिर का विच्छेदन कर दिया। लोक गयादा रथक शिव ने बहु इत्युपुनि के लिए भैरव को काषालिक वन धारण कराया और काशी में निवास करने वाला बोला दी।

'जीवन जीने के लिए है' जो यह निश्चय कर लेता है, वह सुख हो या दुःख सहजता से जी लेता है, क्योंकि दुःख का निराकरण सामाज्य प्रयास से सुलभ हो, तो कौन इस प्रयास को नहीं करना चाहेगा?



बटुक भैरव

भैरव का एक नाम बटुक भी है। बटुक शब्द का अधिप्राय

बद्धते देष्टयते रावै उग्रत् प्रत्येऽनेनै बटुकः

फणिवर - फणिनाथो देवदेवाधिनाथः;
क्षिंतेपतिवरनाथो वीर - वीतालनाथः;
गिरिपति निधिनाथो योगिनी योगनाथो।
जयाति बटुकनाथः सिद्धिद संधकनामः।

अर्थात् प्रलयकाल में सम्पूर्ण जगत को आवेदित करने के कारण अथवा सर्वव्यापी होने से ऐरव बदुक कहलाये।

बदुक बहाचारिणः कवयमुपदेशतीति बदुको गुरुरूपः।

अर्थात् ब्रह्मचारिणों को उपदेश देने वाले गुरु रूप होने से ऐरव 'बदुक' कहे गये।

अनेकार्थजिलाय में कहा गया है —

बदुः वर्णी बटः विष्णुः।

बदुक का एक अर्थ विष्णु भी होता है, जो वामनावतार की ओर सकेत है।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि सर्वव्यापी, गुरु रूप एवं विष्णु रूप इन तीनों के सम्मिलित स्वरूप होने से ऐरव का बदुक स्वरूप पूर्ण फलप्रद एवं विजयप्रद है।

ऐरव साधना के विषय में लोगों में अनेक प्रकार के धम हैं, लेकिन ऐरव साधना सरल एवं प्रायेक गृहस्थ व्यक्ति के लिए आवश्यक है, यह साधना निःर होकर की जा सकती है, इसमें किसी प्रकार का कोई भय या मलतफल्पी नहीं है। यह अन्यन्त फलदायक साधना है।

यह साधना सकाम्य साधना है, अतः साधक जिस कामना की पूर्ति के लिए यह साधना करता है, वह कामना पूर्ण होती ही है —

इस साधना को सम्पन्न करने से साधक के अन्दर तेजस्विता उत्पन्न होती है, जिसके कारण यदि उसके शत्रु हैं, तो वे उसके सामने आते ही कांतिहीन हो जाते हैं और शक्तिहीन होकर साधक के सम्मुख खड़े नहीं रह पाते हैं।

यदि वह युनाव लड़ रहा है या मुक्कमा कई बर्षों से चल रहा है, तो वह उसमें पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करता है।

उसके विरोधी उसके सम्मुख शांत हो जाते हैं, विषभी प्रभावहीन होकर उसके सम्मुख हार स्वीकार कर लेते हैं। यदि उसके जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ आ रही हों और उनका सामाधान नहीं मिल रहा हो, तो इस साधना को सम्पन्न करने से समाधान प्राप्त होता है।

साधक साधना सम्पन्न कर पूर्ण पौरुषवान होकर समस्त समस्याओं को अपने साधनात्मक पुरुषार्थ से हत कर लेता है।

साधना विष्णुः।

इस साधना में आवश्यक सामग्री है बदुक ऐरव यंत्र तथा काली हकीक माला।

* यह एक विवरीय राजिकालीन साधना है।

** यह साधना किसी भी मगलवार की प्रारम्भ करें।

*** साधक स्वान करके उत्तर दिशा की ओर गुह करके बढ़े तथा पीले वर्ण धारण करें।

**** बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर बदुक ऐरव यंत्र को स्थापित करें।

***** बदुक ऐरव यंत्र के सामने तेल का दीपक लगाये तथा सुर्गीत धूप जलाये।

**** ऐरव पूजन प्रारम्भ करें।

**** बदुक ऐरव यंत्र पर मुष्प, कुकुल, अक्षत, डलदी से पूजन करें।

सर्वप्रथम बदुक ऐरव ध्यान करें —

तीनों द्वाय नोडकर

कर कर्तित कपालः कुण्डली दण्डपाणि

स्तरणतिगिरताणीं त्यालयशोपवीती।

कृतुसमयपायीतिध विद्धिति देतु,

जयति बदुकनाथः सिद्धिदः साधकनाम्॥

ऐरव ध्यान के पश्चात काली हकीक माला की अपने बाये हाथ में लेकर ताकिने हाथ से उस पर डक्षत चढाते हुए निम्न मंत्रोच्चारण करें —

महामाले महामाये। सर्वशक्तिश्वरकुपिणि।

चतुर्वर्णस्त्वपि न्यस्तस्तमाल्मे सिद्धिद्वा भरा॥

अविघ्नं कुरु भावो। त्वं गृहणामि दक्षिणो करे।

जपकाले च सिद्धूयर्थं प्रसीद भम सिद्धये॥

तत्प्रश्नात उसी हकीक माला से निम्न नंद्र का ११ माला मंत्र जप करें —

॥ ॐ ह्रीं बदुकाय आपदुद्वारणाय कुरु कुरु बदुकाय ह्रीं ॐ ॥

भोग अपित करें, पर जो भी भोग अपेग करें, उस वहीं पर बेतकर स्वयं घटण करें।

वस्तुतः बदुक ऐरव प्रयोग अन्यन्त सरल और सीम्य है तथा कलिदुग्म में शीघ्र सफलतावानक भी है। साधना समाप्ति के बाद इसे किसी लाल कपड़े में बाधकर सख दें।

साधना सामग्री पैकेट - 350/-

यदि जीवन में उत्साह, आनन्द नहीं है

तो अब कीजिये

सुवर्ण गौरी साधना

जो अति आनन्द, वैभव, अक्षय धनबानी, कौमान्य
प्रबानी बेकी है

जीवन में उत्साह, आनन्द, निरन्तर सफलता मिलने से, कार्य सिंहि
कोन से तथा पारिवारिक सुख शान्ति, अनुकूलता से ही प्राप्त होता है, “सुवर्ण
गौरी” आनन्द की देती है, जो एक बार सिद्ध हो जाने पर साधक के जीवन में
हर समय अपना प्रभाव देती रहती है, “सुवर्ण गौरी साधना” जीवन के
रेगिस्टान में अमृत कुण्ड के समान है।

साधक जब साधना के द्वेष में प्रवेश करता है, तो उसका बनती है, यदि ‘दुर्गा’ के सम्बन्ध में कुछ बोलने का उनका
प्रथम लक्ष्य साधना में तात्काल सफलता प्राप्त कर, अपने मूढ़ आता है, तो वे इस सम्बन्ध में इजारों मन्त्रों सहित ऐसी
जीवन की विचरणतियों को हटा कर जीवन में एक नवीनक्रम का साधनाएं, ऐसा जान प्रकट करते हैं, कि आश्चर्य शब्द भी
निमाण करना होता है, साधक की पहली इच्छा रहती है, कि छोटा पड़ जाता है, कृष्ण के सम्बन्ध में उनका व्याख्यान,
उसे अपने जीवन का आनन्द पूर्ण स्वर से प्राप्त हो, अपने कार्यों उनका जान शब्दों में नहीं बोधा जा सकता है, एक बार उनके
में तात्कालिक सफलता मिले, यदि वह पूर्ण हो तो सैरेव एक प्रिय शिष्य ने कहा, कि गुरुदेव मेरे जीवन में उत्पाद नहीं
बहो चाहता है, कि उसका गृहस्थ जीवन विशिष्ट हो, पत्ती है, मैं कोई भी काम करने का विचार करता हूँ, तो मुझे पहले
विचारों के अनुकूल, उसकी सहयोगी और उसे पूर्ण आनन्द असफलता का ही ध्यान आता है, जिन लोगों को मैंने बार-
प्रदान करने वाली हो, उसी प्रकार प्रत्येक स्त्री वही चाहती है, कि उसका पति, पति होने के सभ्य साथ उसका भिज भी हो,
जो उसकी मायनाओं को पूर्ण रूप से समझे, उनके जीवन में कभी न आने दे और श्रेष्ठ संतान हो, जीवन बढ़ने के साथ-
साथ सुख बढ़ता रहे।

सुवर्ण गौरी साधना

पूज्य गुरुदेव की लीला की भी डर कोई समझ नहीं पाता है, जब वे अपने मूढ़ में होते हैं, तो फिर बात ही कुछ और

शिष्य ने पूछा मैंने ऐसे कौन से दोष किये हैं कि मेरे जीवन

में ऐसी शान्ति बन गई है? क्या इसका कोई उपाय है अथवा

मुझे अपना जीवन इसी प्रकार काटना पड़ेगा?

इस पर गुरुठेव ने कहा कि तुम जो कह रहे हो, वह केवल तम्हारे ऊपर ही लागू नहीं होता है, जीवन जीना और काटना दोनों अलग-अलग बातें हैं, भी मैं अप्सरी नाम तो जीवन का भार उठाते हुए चल रहे हैं, कभी-कभी कोई प्रसन्नना की किरण जा जाती है, इसमें लोध तो उसका खुद का ही है, साधना में सबसे पहले आवश्यकता इस बात की है, कि जीवन में उत्साह का निर्माण हो, हर रुबह नवीन लगे, मन में आनन्द की लहर बने।

पूर्ण गुरुठेव ने सुवर्ण गौरी साधना का जो विधान बताया, और जिन शिष्यों ने इसे सामान्य रूप से सम्पन्न करके भी अपने जीवन को नया आधार दिया, उसके बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

सुवर्ण गौरी इहरु

‘सुवर्ण गौरी’ शक्ति का सीधार्थ स्वरूप है, जो कि अप्सरा कही जाती है, सुवर्ण गौरी का विशेष नाम ‘शिवाकूटी’ भी है, जो कि शशवान शिव की कृपा एवं वर प्राप्त कर आपने सर्वांग स्वरूप में प्रिया है, “आनन्द मंदाकिनी” शिव की शक्तियों के सम्बन्ध में एक प्रामाणिक ग्रन्थ है, जिसमें इस साधना के सम्बन्ध में पूर्ण विधि-विधान सहित लिखा गया है, इस ग्रन्थ में सुवर्ण गौरी के स्वरूपों के सम्बन्ध में लिखा है, कि इनके सोलह स्वरूपों का सिद्धि जो साधक प्राप्त कर लेता है, वह सम्मार का अधिपति होने का सीधार्थ प्राप्त कर सकता है, सुवर्ण गौरी के ये सोलह स्वरूप हैं -

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| १-अमृताकर्षणिका, | २-स्पाकर्षणिका, |
| ३-स्वार्थपाधिनी, | ४-अनेगकुसुमा, |
| ५-सर्वदुर्बलिमोचनी, | ६-सर्वसंखिप्रदा, |
| ७-सर्वकामप्रदा, | ८-सर्वविघ्ननिवारणी, |
| ९-सर्वस्तन्त्रभनकरिणी, | १०-सर्वसप्तसिंपूर्णी, |
| ११-चिनाकर्षणिका, | १२-कामेश्वरी, |
| १३-सर्वमन्त्रमयी, | १४-सर्वानन्दमयी, |
| १५-सर्वेशी, | १६-सर्वविजिनी। |

इन सोलह स्वरूपों में से यदि एक स्वरूप की सिद्धि भी प्राप्त हो जाय, तो जीवन का अन्तकार दूर हो जाना है, आग साधना ऋम में समर्पण रूप से पूजन का विधान दिया जा रहा



है, यदि कोई साधना किसी एक विशेष स्वरूप की ही साधना करना चाहता है, तो उसे भी कर सकता है।

सुवर्ण गौरी-प्रिया इहरु

प्रिया का तात्पर्य है, जो आपको प्रिय हो, जिसके कहे अनुसार आप कार्य करें, जिसके पास रहने ने आपको आनन्द का अनुभव हो, जो आपके जीवन में उत्साह भरे, आपकी कमियों को हटाए, और आपके प्रति समर्पण का भाव हो।

‘आनन्द मंदाकिनी’ ग्रन्थ में लिखा है, कि सुवर्ण गौरी साधना समर्पण रूप से जो सिद्ध प्रिया रूप में हो दी हो सकती है, तब यह विशिष्ट शक्ति जीवन में हर स्थिति में आपके कार्यों को उचित परिधान, अभीष्ट फल प्राप्त करा सकती है, सिद्ध होने पर आपको हर समय यह ध्यान रहता है, कि यह शक्ति आपकी सहगोदी रूप में विद्यमान है, आप अपने मन में भावों को प्रकट कर सकते हैं, अपनी इच्छाओं को द्विना संकोच बता सकते हैं, और अपनी इच्छाओं की पूर्ति का सरल, सहन

मार्ग प्राप्त कर सकते हैं।

ज्योतिर व्यक्ति प्रेम और काम को एक ही स्थान में देखते हैं, जो कि बिनकुल गलत है, प्रेम मन की अभिव्यक्ति है, और काम शरीर की अभिव्यक्ति, और साधना काम, वास्तव मात्र से कभी भी सिद्ध करने का प्रयत्न न करें, इसे प्रेम भाव से प्रिया रूप में भिन्न करने का प्रयत्न करें।

साधना विधान

यह साधना सांख्यकाल के प्रयत्नों की जाने वाली साधना है, और सोमवार को प्रारम्भ करनी चाहिए, साधना के लिए उच्चारशक्ति है, कि चित्र में प्रसन्नता, उन्माद आ भाव होना चाहिए।

इस साधना के लिए 'सुवर्ण गौरी पद्म', 'सोलह सिद्ध शक्ति काम्य फल' नाम 'सुवर्ण गौरी अनंग माला' आवश्यक है, साधना में पीले रंग का प्रयोग विशेष रूप से होता है, अतः साधक साधिकों पीले रंग की भोजी धारण करें, पीले रंग के आसन पर बैठ कर साधना करें।

इसके अतिरिक्त साधना हेतु शुद्ध धी का दीपक, अष्ट ग्रन्थ, सिन्दूर, चन्दन, केवड़ा मिथित सुगन्धित जल, चावल, पीले पृथ्वी, तापावल, नैवेद्य हेतु लड्डू इत्यादि की व्यवस्था पहले से कर ले, पूजा स्थान में अर्थात् जहाँ आप साधना कर रहे हैं, वहाँ धी का दीपक तथा सुगन्धित अग्ररबनियाँ जला दें, अपने आसन पर बैठ कर पूर्व दिशा की ओर मुह करें, तथा सामने एक पात्र में 'सुवर्ण गौरी पद्म' स्थापित करें, और सुवर्ण गौरी का ध्यान करते हुए आळान करें, यह मूल रूप से सुवर्ण गौरी का स्वरूप मंत्र है-

स्वागत मंत्र

जौरी दर्शनमित्तिति देवाः स्वामीष्टसिद्धये।
तस्य ते परमेशायै स्वागतं स्वागतं च ते॥
कृतार्थोऽनुग्रहोतोऽस्मि सकलं जीवितं मम।
उराजसां देविं देवेशं सुस्वागतमिवं पुनः॥

इस स्वागत मंत्र का पांच बार जोर बोर से उच्चारण कर 'सुवर्ण गौरी पद्म' पर अष्ट ग्रन्थ, सिन्दूर चन्दन, इति, पीले पृथ्वी चढ़ाये और सामने पक्का पात्र में नैवेद्य अर्पित करें, यह आपके पास सोने की अग्नी अधिका कोई स्वर्ण आपूरण हो तो 'सुवर्ण गौरी पद्म' के सामने उस पात्र में आपूरण को छो कर रखना चाहिए।

अब एक-एक ज्ञानद रित्यु शक्ति काम्य फल स्थापित जाय, तो पूरे जीवन प्राणों में आनन्द का संचार हो जाता है।

चावल के टेरी बना कर प्रत्येक शक्ति का नाम ले, और आळान करते हुए एक-एक 'सिद्ध शक्ति काम्य फल' स्थापित करें-

उ॒॑ सुवर्णं जौरी अमृताकर्षणिका पूजयामि नमः।
उ॒॑ सुवर्णं जौरी स्पाकर्षणिका पूजयामि नमः।
उ॒॑ सुवर्णं जौरी सर्वासाधिती पूजयामि नमः।
..... क्रमशः।

इस प्रकार प्रत्येक शक्ति का आळान करने हुए सुवर्ण गौरी रित्यु शक्ति काम्य फल स्थापित करें और प्रत्येक शक्ति को पूर्ण, इव, चावल चढ़ाए।

जब यह स्थापित ब्रह्म दूर हो जाय तो मात्र दीपक जलाये, तथा सुवर्ण गौरी मंत्र का जप अनंग माला से प्रारम्भ करें।

सुवर्ण गौरी मंत्र

दु॑ क्षु॒ ही सुवर्णं जौरी स्वर्णिकामान्वेदि
हो॑ क्षु॒ दु॑ नमः॥

अब इस मंत्र की सात माला जप करना है, और नप प्रारम्भ करने पहले दायें हाथ में जन्त ले कर संकल्प लें, "जैलोक्यमोहने चक्र इमाः प्रकट सुवर्णं गौरी" इस त्रिकार प्रत्येक माला मंत्र जप के पश्चात् यह संकल्प जन्त लेकर करना है, जब मात्र माला मंत्र जप पूरा हो जाय, तो एक थाली में मात्र दीपक ले कर आरती सम्पन्न करें, तथा प्रसाद व्यहार करें।

साधना क्रम के विधान में यह आवश्यक है, कि साधक श्रवि को वही भूमि पर शधन करें, कई साधकों को नो प्रथम बार साधना में ही गति में विशेष अनुभव होता है, स्वयं में साकार रूप में सिद्ध हो कर सुवर्ण गौरी उपस्थित होती है, कमरे में एक पीला प्रकाश फैल जाता है, ऐसे समय साधक तत्काल उठ खड़ा हो, और अपना मन चाहा बर मांग लें।

यह साधना तीन सोमवार तक नियमित रूप से अवश्य करनी चाहिए, प्रत्येक साधना क्रम में सुन्दर अनुभव प्राप्त होता है, एक बार सुवर्ण गौरी सिद्ध होने पर पूरे जीवन भर महायोग प्राप्त होता रहता है, साधक के मन में एक प्रिय भाव इमेजा बना रहना चाहिए, जो साधक मिथि प्राप्त होने पर गति, घोड़ा अग्निमान में भर जाते हैं, और गलत कार्यों को कामना जलने लगते हैं, उनकी मिथि उनी ही शोध नहीं हो जाती है।

सुवर्ण गौरी साधना तो साधना मन उपकरण का ऐसा सुगन्धित पूर्ण है, निश्चकी आनन्द ग्रन्थ एक बार पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाय, तो पूरे जीवन प्राणों में आनन्द का संचार हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

आठितीय यौवनवती सौन्दर्यशालिनी



प्रेमिका रूप में सिद्ध कीजिये

देव ने आदि रचयिता भगवान शिव है और भगवान शिव ने तेज भजनलीं जो शाज उपदेश प्रदान किए दी उसे ही योगिनी, दातिकों और विहारी ने टीका कार आगे लढ़ाया, भगवान शिव ने जो भी राजड़ाए दी है यदि उनको बूल दा से शुद्ध रूप से साधक द्याव करे तो उसे निश्चित कृत प्राप्ति होती है, कई लेखकों द्वायित्वे ने कहा कि इसी का इस सम्बन्ध विद्यि को इतना कृतिक लोड प्रदायद दिया है कि साधक को उस विशेष साधना का करने से जो कृत प्राप्ति होती व्यक्ति, वह फल प्राप्त नहीं हो पाता है, साधक के प्रबन्ध में साधना के अन्ते, तत्र के प्रति प्रहितूल मन बनता है।

भगवान शिव ने पार्वती को योगिनी साधना के संबंध में पूर्ण उपदेश दिया, और उन्होंने अपने उद्देश्यों में मनुष्यों के सिद्ध आठ प्रकार की योगिनी साधनाएं उन्नत तथा तुरन्त फल देने वाली कही हैं, ये आठ योगिनी—

- १-आद्या विष्णुषिणी,
- २-पराकृष्णदधिणी,
- ३-हारिणी,
- ४-लिहिणी,
- ५-हसिनी,
- ६-बहौदी,

७-कामेश्वरी,

८-प्रिया रतिदेवी।

इनमें से प्रत्येक योगिनी की साधना उसका स्वरूप द्यान, मन्त्र साधना विधि तथा फल प्राप्ति अनुग्र-अलग है, परिका के प्रत्येक अंक में एक योगिनी साधना मूल रूप से दी जा रही है।

‘इति पार्वती दंवाद—पार्वती ने भगवान शिव से उके दिन जिवदन किया कि देवताओं के लिए तो ममी प्रकार के रुख स्वर्ग में उपलब्ध है आपसमें उनकी रोता में रहती है, देवताओं का योग्य दूर समय अक्षय रहता है तथा क्षोव गङ्गा वाली साधना उच्छारं पूर्ण होती है, लेकिन दूर्धि पर रहने वाले सभी सद्गुरुओं की इच्छाते पूर्ण नहीं हो पाती हैं, वह प्रारम्भिक रूप से अपनी डाढ़ाओं के जान में कृपा रहता है।

इह उर्द भगवान शिव ने कहा, कि मनुष्य को योगिनी साधना सम्पूर्ण करना चाहिए, ये योगिनियां पूर्ण साधना करने पर मनुष्य को उत्कृष्ट फल देती वाली हैं, और उसकी अतृप्ति इत्यादी के दूर करने में पूर्ण सफल है।

आद्या विभूषिणी

आद्या विभूषिणी के लकड़ीय में भगवान् शिव ने जो साधना जान दिया है, उस भग्नान्त्र में कियोडिङ्ग शास्त्र में इस योगिनी का ध्यान करने समय लिखा है, कि

वक्षेकतरिका परेऽसिततिका हस्ताक्षरके विभूति
ह्रतुबल्लभशोभिवक्षसि चत्तेहस्तिदिभिः श्वेषिता।
इवत्प्रार्थतमास्तरोणितवसा सिवतस्तिव वस्त्रस्तरवृ
कालश्यामलवर्णिकाम्बजपौर्वेष्टिता रक्षतु॥

अथात् एक शाय में भाला और दूसरे शाय में खड़ा धारण करने वाली, ऊंचे कुम्ह तुल्य रस्तन वाली, हृदय पर विभिन्न आभूषण ध्यान करने वाली, दुच्छों और शत्रुओं का संहार करने वाली, रस्त और चर्बी का पान करने से जिसकी देह और वस्त्र मीण कर लाल हो जायी है, काल के तुल्य व्यायम वर्ण वाली पर्वतवासिनी, हाथी पर बैठने वाली देवी हमारी रक्षा करें।

आद्या विभूषिणी योगिनी तीन रूपों में सिद्ध की जा सकती है, वे तीन रूप हैं - बहन स्वरूप, माता स्वरूप तथा प्रेमिका स्वरूप, इसमें बहन स्वरूप सिद्ध होने पर रक्षा लाभ प्राप्त होता है, माता स्वरूप सिद्ध होने पर आशीर्वाद एवं कार्यों के सम्बन्ध में अनुकूलता प्राप्त होती है, तथा प्रेमिका के रूप में सिद्ध होने पर जीवन के सभी सुख प्राप्त होते हैं।

आद्या विभूषिणी साधना सम्पन्न करने पर प्रेमिका रूप में उसे प्राप्त करने से शारीरिक दुर्बलता तथा मानसिक दुर्बलता आपने आप समाप्त हो जाती है, जीवन में जीने की विशेष चाह और उमंग आ जाती है, सारे शरीर में एक विशिष्ट तेज सा अनुभव होता है, साधक के प्रत्येक कार्य में आद्या विभूषिणी योगिनी प्रेमिका रूप में उसके साथ विद्यमान रहती है, और उसके कार्य स्वतः सफल होते रहते हैं।

आद्या विभूषिणी साधना विधि

यह साधना सोमवार से प्रारम्भ की जा सकती है, और तीन सोमवार की साधना है, सोमवार के अतिरिक्त इस साधना की सम्पत्ति नहीं किया जा सकता है, किसी सोमवार को साधना प्रारम्भ कर तीसरे सोमवार साधना पूर्ण की जा सकती है।

इस साधना को प्रारम्भ करने से पहले साधक अपने पूजा स्थान में चार पीपल की ढालियाँ रख दें, तथा अपने सामने पूजा स्थान पर लाल बर्बत बिछाकर चावलों को लाल रंग से रंग कर उसकी दुर्शी बना कर उस पर 'आद्या विभूषिणी यंत्र' स्थापित करें, इस पूजा में दीपक आवश्यक नहीं है, केवल धूप

और लोबान का प्रयोग करें, धूप में निरन्तर चंदन का प्रयोग करें, पूजा स्थान में युग्माधित वातावरण होना अत्यन्त आवश्यक है, इसके पश्चात जिस रूप में आप आद्या विभूषिणी योगिनी प्राप्त करना चाहते हैं, उसके अनुरूप मुद्रा में मंत्र जप करें योगिनी (बहन) रूप में सिद्ध करने हेतु आशीर्वाद की मुद्रा, माता स्वरूप से सिद्ध करने हेतु याचक मुद्रा तथा प्रिया स्वरूप में सिद्ध करने हेतु मुद्रा कीथ मुद्रा आवश्यक है।

मंत्र

॥ हूं हूं हौं भूतिली हूं हूं हौं फट ॥

इस साधना हेतु 'योगिनी भाला' ये उपरोक्त मंत्र का १३ माला जप करें, और रात्रि विश्राम यंत्र तथा चित्र के सामने ही करें उसके पश्चात अगले सोमवार को भी इसी प्रकार मंत्र जप करें, और तीसरे सोमवार को भी मंत्र जप करें, तीसरे सोमवार को सफेद पुष्पों की तथा लाल गुलाब के पुष्पों की माला अपने पास रख दें। जब योगिनी अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित हो जाय और आपके शरीर को उसका स्वर्ण अनुभव होने लगे तो ध्यान दें, कि किस रूप में अप्सरा योगिनी सिद्ध हुई है, माता भवता बहिन स्वरूप में सिद्ध होने पर उसे सफेद पुष्पों की माला तथा प्रिया रूप में सिद्ध होने पर उसे लाल पुष्पों की माला अपरित कर दें।

इसके पश्चात साधक यह वचन लेवें कि उसे जीवन यर्नन्त उसका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

माता रूप में आद्या विभूषिणी योगिनी सिद्ध होने पर साधक को विव्य दृष्टि तथा आने वाले समय का ज्ञान प्राप्त होता है, जीवन में संकट के समय उसे अनुकूलता प्राप्त होती है। बहिन के रूप में योगिनी प्रसन्न होने पर साधक के लिए जीवन में निरन्तर उत्तम श्रोजन, एवं बस्त्र लाभ प्राप्त होता है, और विदेश यात्रा का योग बनता है।

प्रिया रूप में सिद्ध होने पर समरूप प्रकार के सुख एवं धन लाभ प्राप्त होते हैं, सबसे अधिक महत्व प्रिया रूप में ध्यान की गई आद्या विभूषिणी योगिनी अप्सरा का ही है, इससे साधक के सभी कार्य एवं आशाएँ सफल होती हैं तथा जीवन में हर समय एक नया उत्साह उत्संग रहता है।

यह साधना स्वामी भवातीतानंद के शब्दों में वर्णित युग में श्रेष्ठ और तुरन्त कल देने वाली है, उन्होंने कई साधकों को यह विशेष साधना सम्पत्ति कराई है, तथा उन साधकों को प्रथम बार में सफलता प्राप्त हुई है।

साधना सामग्री पैकेट - 290/-

उत्तरकी संप्रभु साधना का गार विशिष्ट प्रयोग।

ॐ गुरुम्

साधना ग्रंथों में लड़ी बड़ी साधनाओं का वर्णन मिलता है जो कई महिनों तक सम्पन्न की जाती है लेकिन वर्तमान युग में साधक एकाग्र चित्त होकर इतनी लम्बी साधनाएं नहीं कर सकता उसके लिए ये लघु प्रयोग ही उपयोगी हैं -

तत्र साहित्य में 'सौभाग्य कल्प लतिका' एक आत्मपंत आशारम्भ एवं प्रामाणिक ग्रंथ है, स्वामी क्षेमानन्द छासा रचित इस ग्रंथ में जीवन की दिन प्रतिदिन की समस्याओं से संबंधित कुछ विशेष साधनाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है।

स्वामी क्षेमानन्द स्वयं भी अहृत जानी, तांत्रिक, मात्रिक ये, उनको इस महा रचना में दिये गये साधना प्रयोग आत्मन्त सरल, अनुभव जन्म तथा गृहस्थ जनों के लिए ही हैं।

इस प्रामाणिक पाण्डुलिपि से 'मन-तत्र-यत्र विज्ञान' के पाठकों के लिए कुछ विशिष्ट प्रयोग प्रस्तुत हैं -

1-कायाकल्प प्रयोग

कायाकल्प का तात्पर्य है, कि काया में अर्थात् शरीर में मूलरक्त की ओर, स्वस्थता की ओर परिवर्तन, स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मन एवं मस्तिष्क का जनक है, अस्वस्थ व्यक्ति किसी भी काया की ओर अपने आपको केन्द्रित नहीं कर सकता, उसके जीवन निर्माण की प्रक्रिया ही रुक जाती है, इसीलिए देह विज्ञान को महाविज्ञान कहा जाता है। यह साधना प्रयोग किसी भी रविवार को सूर्योदय के समय सम्पन्न किया जाना चाहिए, यदि पांचिंत व्यक्ति अर्थात् गोमी स्वयं सम्पन्न करे तो विशेष उचित रहता है।

इस प्रयोग में तिब्बती लामा मंत्रों से अभिमन्त्रित 'कायाकल्प यत्र' आवश्यक है, इस यत्र को एक तांत्रि के लोटे में शुद्ध जल भर कर उसमें उबो दें, और यह जल पात्र अपने सामने रख दें।

साधक स्नान कर मंत्र जप प्रारम्भ करे, विशेष जात यह है कि अपने सामने 'त्रिपुर सुन्वरी का चिन्ह' स्पष्टित करे, मंत्र जप प्रारम्भ करने से पहले तेल का दौपक अवश्य जला दें, पीले आसान पर खड़े हो कर 'कायाकल्प माला' से पांच माला निम्न मंत्र का जप अवश्य सम्पन्न करे, इस साधना में मंत्र जार-जोर से ओल कर करना चाहिए, साधक का मुँह पूरे की ओर हो।

मंत्र

॥ उँ हुं कट ॥

पांच माला मंत्र जप के पश्चात् सामने पात्र में रखे हुए जल को अपने नेतृत्व, मस्तक, तथा सीने में लगाए और जल को उसी स्थान पर बैठ कर पाले।

पूरा जल शृण करने के पश्चात् कायाकल्प यत्र को उस चांध कर रूपांश में रख दें, दूसरे दिन यह प्रयोग पुनः

सम्पन्न करें, इस प्रकार ११ किनों तक प्रयोग सम्पन्न करने से सेवा पूर्ण रूप से दूर हो जाता है।

नियमित रूप से यह प्रयोग सम्पन्न करने से बेहरे का रंग निरवर जाता है, शरीर में हर समय जागरी, रघुनंत अनुभव होती है, रोग शान्त होता है, शरीर अत्यन्त किञ्चाशील हो जाता है। साधना सामग्री पैकेट - 240/-

2- द्वच्य प्राप्ति प्रयोग आर्थिक उद्घाति साधना

इच्छा का तात्पर्य है, धन, लाभ, वृद्धि और धन की देवी है लक्ष्मी तथा इसके विभिन्न स्वरूपों में गजलक्ष्मी स्वरूप विशेष प्रभावदायक, कलादायक माना गया है, 'सौभाग्य कल्प लतिका' ग्रंथ के अनुसार यदि कागड़ में निरन्तर हानि हो रही हो, किसी को उधार दिया हुआ धन बापिस नहीं आ रहा हो, आर्थिक दानि वसन कर रही हो, तो राधक की लक्ष्मी की पूर्ण कृपा के लिए 'गजलक्ष्मी प्रयोग' अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, यह साधना ११ दिनों की साधना है और विशेष बात यह है, कि यह साधना प्रयोग किसी पूर्णिमा को अथवा पंचमी तिथि को ही प्रारम्भ करना चाहिए, तथा ज्यारह दिन प्रयोग निरन्तर द्वाम में सम्पन्न करना चाहिए।

यह तो लिखित है कि किसी भी साधना में पूर्व सफलता हेतु गृह-कृपा, आशीर्वाद आवश्यक है, अतः साधना प्रयोग के पहले गुरु पूजन कर, एक माला गुरु मंत्र का जप अवश्य सम्पन्न करना चाहिए, तथा साधना प्रयोग के अन्त में भी एक माला गुरुमत्र जप सम्पन्न करें।

इस साधना में दो सामग्री, मंत्र रिक्ष ग्राण प्रतिष्ठा गुरु 'गजलक्ष्मी यंत्र' तथा लक्ष्मी बीज मंत्रों से सम्पूर्णि 'कमल गद्दे की माला' आवश्यक है।

साधना के समय साधक स्नान कर शुद्ध गोले वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुँह कर बेड़े, अपने सामने एक बाजेट पर चावलों की बड़ी ढेरी पर गुलाल, पूष्य हन्त्यादि रस्य कर उस पर गजलक्ष्मी यंत्र स्थापित करे तथा गजलक्ष्मी चित्र सामने लगाये, पूरे साधना काल में यो का दीपक अवश्य ही जलता रहे।

गुरु मंत्र का जप कर सामने स्थापित गजलक्ष्मी यंत्र पर दीपक पूजन कर पाय में दीपक रखें तथा मंत्र जप प्रारम्भ करें।

लक्ष्मी मंत्रों से सम्पूर्णि कमलगद्दे की माला से निम्न मंत्र की ११ माला का जप सम्पन्न करें -

साधना में सफलता के लिए यह आवश्यक है कि साधक के मन में अपने रूप के प्रति, मंत्र के प्रति तथा गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास आवश्य होना चाहिए इसके साथ ही साधना में संकल्प आवश्यक है एक बार संकल्प लेने के पश्चात उस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें तथा साधना सामग्री का पूजन पूर्ण श्रद्धा भाव से सम्पन्न करें। इस क्रिया से साधना में सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं गजलक्ष्म्ये श्रीं ह्रीं ॐ नमः ॥
इस बीज मंत्र के जप के पश्चात एक माला गुरु मंत्र का जप करें और लक्ष्मी आरती सम्पन्न करे लक्ष्मी के सामने चढ़ाया हुआ प्रसाद बहण करें।

इस प्रकार यह प्रयोग ११ दिन तक सम्पन्न करें। यारह दिन सात कन्याओं को भोजन कराएं, साधना प्रयोग पूर्ण होने-होने साधक को अपने कार्य में आश्चर्यनक लाप्ति दोनों लगता है, इका हुआ धन प्राप्त होने की विधि बनती है, लक्ष्मी प्रसिद्धि के नये अवसर बनने लगते हैं।

यंत्र को अपने पूरा स्थान में ही स्थापित किये रहें, तथा नियम अग्रसरता अवश्य करें।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

3- शत्रु हन्ता प्रयोग

सौभाग्य कल्प लतिका में लिखा है, कि शत्रु का तात्पर्य है वह प्रत्येक व्यक्ति जो आपको लाभ पहुँचाने का प्रयास करें, वह प्रत्येक स्थिति जिसके कारण उत्तरि सकती हो, और इस स्थिति को मिटाने के लिए शत्रु हन्ता प्रयोग के समकक्ष कोई भी प्रयोग नहीं है।

सामान्य रूप से अपने दैनिक किया कलाप के साथ किया जाने वाला नीं दिन का प्रयोग व्यक्ति अकेले या पति पन्नी दोनों मिल कर भी कर सकते हैं, विशेष तात् यह है कि वे दो नीं दिन तक अखण्ड तेल का दीपक अवश्य जलते रहना चाहिए,

इसलिए पहले ये बड़ा मिट्टी का दीपक हो बनाना चाहिए। प्राप्त होती है, और जब मान्योवत्व प्राप्ति हो जाता है, तो सके इसके अतिरिक्त साधना में 'इ शत्रु रत्नमन तंत्रोत्तम फल' हए कार्य भी पूरे होते हैं, एक सफलता के बाद दूसरी सफलता तथा शत्रु रत्नमन मत्री से अभिगमनित 'मूर्णा भाला' आवश्यक प्राप्त होती है।

किसी भी शनिवार को रात्रि को यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाना है, साथक काली धोती पहने तथा काले अस्त्रसं पर बैठ कर प्रयोग प्रारम्भ करें, साथक का मुह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए। उनुष्ठान चंचलों को अब तक किसी सोमवार से प्रारम्भ कर पाने सोमवार सम्भव करना चाहिए, अर्थात् प्रत्येक सोमवार को दोहराना चाहिए।

सर्वप्रथम अपने सामने बानोट पर एक ज्वेत वस्त्र लिया तथा 'लकड़ी चित्र' आवश्यक है। कर गिन्द्र से एक निकोण बनाएं, इस निकोण के तीनों कोनों सोमवार के दिन सुबह स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण पर शत्रु स्तम्भन तांत्रोक्त फल स्थापित करें, निकोण के मध्य कर, पृथि दिशा की ओर मुंह कर अपने सामने तीनों सामग्री में 'की' बाज मंत्र लिखें स्थापित करें, अब साध्यक अपने सामने पांच चाउल की दुर्याया

अब थप अगरबत्ती जला कर गुरु का ध्यान कर दीर बना कर प्रत्येक ढेरी पर एक मधुर रूपेण रुद्राक्ष स्थापित आसन में बैठ कर मंत्र जप प्रारम्भ करें, उस शब्दि को एक करें, तथा मध्य में भाव्य लक्ष्मी देवी को स्थापित करें प्रत्येक माला मंत्र जप अनिवार्य है।

मंत्र जप प्रारम्भ करने से पहले अपने हाँड़ छाथ में जल ले कर जिस शत्रु बाधा को पूर्ण रूप से दूर करना है, उस बाधा नष्ट की पुणि हेतु, “यह अनुष्ठान सभी देवताओं को साक्षी मान कर सम्पन्न कर रहा हूँ, मुझे इसमें पूर्ण सफलता मिले”, ऐसा स्मरण कर जल छोड़ दें।

三

॥ अै शत्रुणां ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
हो हीं क्रीं क्रीं नाशय नाशय रक्त प्रवहय
रक्त प्रवहय सम सिर्वे देहि देहि नमः ॥

जब नौ दिन पूर्ण हो जाय, तो उस रात्रि को तीनों लात्रोक्त गल मिलाकर उसमें मधुरुपेण रुदाल्प नवा धार्य नक्षी सिद्धि कल अपने पर ने आहर तीन अलग-अलग विशाओं में गढ़ देयं इति इति दै और इसे किसी भी शिव मंदिर में जाकर शिवानिः और उस पर बड़ा पत्थर रख देयं। पर चढ़ दै।

इस प्रभावशाली प्रयोग के एक महीने के भौतर-भौतर कुछ ऐसी घटनाएँ घटिने होती हैं, जिसकी साधक कल्पना ही नहीं कर सकता, जब भी कभी शृंखला आधार पर बदल हो जाय तो उसनिवार को यह प्रयोग दोहराया जा सकता है, इस साधना प्रयोग में काम आने वाली शहु स्तम्भन माला का किसी अन्य साधना में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

इसी प्रकार अगले सोमवार को प्रयोग सम्पन्न करे तभी पांच सोमवार की प्रयोग सम्पन्न कर अनुष्ठान की पूर्ण आठुति करें।

इस सिद्धि प्रयोग के बारे में यदि कहा जाय कि यह साधना प्रयोग सोबत हुए भाष्य को जाग्रत करने का प्रयोग है, तो भी कोई अविश्योगिक नहीं होती।

साधना सामग्री पैकेज - 300/-

4- कार्योदय प्रयोग

जब तक भास्योदय जाग्रत नहीं हो जाता, तब तक व्यक्ति अपने शिष्यों को, साधकों को सम्प्रशंसा करा कर ही शंख की नितने प्रदर्शन करता है, उसका एक अशा भी लाम प्राप्त नहीं रचना की थी, वस्तुतः शिद्ध योगियों का यह ज्ञान मारतीय हो पाता, योड़ी सी भी सफलता बार-बार प्रदर्शन करने पर ही संस्कृति का गीरव ही कहा जा सकता है।

कुपर वी गाँव आरों साधना प्रयोग स्थानी क्षेत्रानन्द ने

सिद्ध मंगल कवच

मंगलो शूभ्रिषुभश्वत् शुभ्रहर्ता धनप्रदः सिद्धरासवो महाभयः सवको विरोधकः ॥१॥

यह राज मंगल जिनका नाम है शूभ्रिषुभ, कृष्णहर्ता, धन प्रदान करने वाला, एक आसन पर सिद्ध रहने वाला, भीमकाय तथा सभी काखों में अवरोध वैदा करने वाला है।

लोहितो लोहिताक्षश्च सामग्रजो कृपाकरः । घरात्प्रजः कृजो भौमी भृतिदो शूभ्रिन्ददनः ॥२॥

रक्त बर्ण दूल, ज्वाला भौमी वाला, गन्धवं विद्या में रुचि रखने वाले, शूभ्रि पुत्र, बुबड़ युवत भौम नाम वाला, भृतिवाता तथा शूभ्रि नन्दन कहा जाता है।

अंगारको यमदेवत स्तरोगापहारकः । दृष्टि कर्ताप्रहर्ता च सर्वकामफलपदः ॥३॥

अंगारक, यम, सर्व रोग अपहारक, दृष्टि कर्ता, अपहर्ता, सर्व मनोकामना को देने वाले।

एतादि कुञ्जवामाजि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् । कृष्ण व जायटे तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥४॥

यह राज मंगल के इन नामों का जो व्यक्ति नित्य शृङ्खला पूर्वक पाठ करता है उसे कृष्णबाधा नहीं होती तथा वह धनधार्य से युक्त होता है।

थर्वीर्गो मंगृतं वियुत्काञ्जित्तरामद्यमः । कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमत्यहम् ॥५॥

शूभ्रि पुत्र मंगल विद्युत के समान कोनि दूर नूतन आयु से युक्त शक्ति हाथ में लिये हुए मंगल वेव को मैं प्रणाम करता हूँ। स्तो रमंगारकस्यैतत्पठनीय सदा नृभिः न देहां भौमजा नैद्वा स्पृलगड़ि भवति व्यवित ॥६॥

यह राज मंगल के इस स्तोत्र का नित्य पाठ करना चाहिए हस्ते के पाठ से मंगल जनित पीड़ा कभी भी नहीं होती है।

अंगारक महाभाग अग्वलभूतवर्तस्त्वा त्वा लमामि ममाशेत्पणमाश विजशय ॥७॥

हे अंगारक, हे महाभाग आप भूत वत्सल हैं आप मेरे समस्त वृष्ण बाधा को दूर करें आपको मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

कृष्णसेत्तादिदारिदयं ये सान्दे ल्लापमृतयदः शशकलेशमनस्तापा नश्यन्तु प्रम सर्वदा ॥८॥

जो भी कृष्ण, रोग तथा दरिद्रता अकाल मृत्यु भय, क्लेश मानसिक सम्नाप है मेरे सभी रोगों को दूर कर दें।

अलिङ्क दुरासद्य गोगमुक्तिरित्वात्मनः । दुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥९॥

वह गति वाले कठिनाई से प्रसन्न होने वाले, भौमों में आसक्त न होने वाले, मन को वश में किये हुए यह राज मंगल प्रसन्न होने पर साधारण्य प्रदान करते हैं और अप्रसन्न होने पर तुरन्त ही सब कुछ हरण कर लेते हैं।

पिरांचेशक्षिण्युर्जा मनुष्याणां तु का कक्षा । तेज त्वं शर्वरत्वेन शृणुजो महाबलः ॥१०॥

ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु, मनुष्य इन सभी का कहना सभी शक्ति से सम्पन्न यह राज मंगल बहुत ही बलशाली है।

पुमांदेहि धनं देहि त्वामिमि भरणं गतः कृगदारिदयदुर्खेन शभूर्णा च भयात् ॥११॥

हे यह राज मंगल में आपकी शरण में हूँ मुझे पुन तथा धन आदि प्रदान करें कृष्ण दरिद्रता तथा शशुओं के मय से मेरी रक्षा करें।

उपिडारिद्यभिः शलोकेऽस्तीति न धरायुत महती शियमाज्ञाति ल्लापदो धनदो यदा ॥१२॥

हन बारह श्लोकों से युक्त मंगल के श्लोकों का सदैव नो पाठ करता है वह अनन्त ऐश्वर्य को प्राप्त करता है तथा अद्वितीय धन प्रदान करने वाला और निरन्तर द्युवा यह राज की कृपा को ज्ञाप करता है।

प्रियतमा अप्सरा माला



प्रियतमा अप्सरा एक ऐसी श्रेष्ठ अप्सरा है, जो कठोर हृदय को भी कोमल भावनाओं से ओट-प्रोट बना देती है और वह ट्यूटि भी उस पर रंग कर जीवन में आबृद्ध से सराबोर हो जाता है और फिर वह अप्सरा प्रकाळ करती है सुगन्धित व्रत्य, विविध आभूषण तथा अपने साथक की समस्याओं का समाधान।

इस अप्सरा को आप सिद्ध कर सकते हैं और सिद्ध होने पर वह अप्सरा केवल आपको ही विज्ञाई देगी, आपके आस-पास अच्छे लोगों का कुछ भी अनुभव बर्दी होगा। अप्सरा साथना से सम्पूर्ण साथक के मन में एक नवीन उत्साह व्याप्त हो जाता है, उसके व्याप्तिक्षेप में सम्मोहन व्याप्त हो जाता है, जिससे लोग उससे भिन्नता करने का प्रयास करने लगते हैं।

इस माला को किसी भी जुलबा को दरि १० ढने के बाद युद्ध जल से त्यान कराएं तथा पोल कर किसी ताजे के पात्र में स्थापित करें। यह पर कुकुन अस्त तुग्निश्च इत्र एवं गुवाब के दीन पूज्य वडाक प्रियतमा अप्सरा प्राप्ति की इका व्यक्त करें। रात्रेक की चाहिए दिव वह तुम्हार वस्त्र पहन कर तथा हाथ लगाकर इस लाघना को करें। ऐर तरी मात्रा से 'ॐ श्री हि प्रियतमा प्रियतमा तुम्ह साथव लाभय क नमः' भज की पांच माला जप लगाकर करें। इस विधिन को ११ लिन रक्ष करें, ऐर मात्रा को जल में डिपित कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

जान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समाजोंमें, अंगल कार्यों में, बालगों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी उस श्रेष्ठ जान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बंधित हैं। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक जान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड ब्रमांक ३) मेज दें, कि 'मैं अपने एक परिचित को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाना चाहता हूं एवं २० पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप नि-शुल्क मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठित 'प्रियतमा अप्सरा माला' ३०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क ३००/- + डाक व्यय १०/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आपे पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। बी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे १० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक बाजार मेज दें एवं मेरे सिव को एक वर्ष तक पत्रिका भेजते रहें। आपका पत्र आपे पर हम ३००/- + डाक व्यय १०/- = ३१०/- की बी. पी. पी. से 'मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठित प्रियतमा अप्सरा माला' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको वह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। आपको बीस पत्रिका भेजकर आपके मंत्र को सदस्य बना दिया जायेगा।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, बाईकोट कलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफ़ोन - 0291 - 2432010

०१ 'मई 2003 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '79' ४४

श्री वैद्य साधना

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस मिठ्ठे चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

सप्तसूत्र साधकी-गवे विषयों के लिए
यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत
विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में
पूज्य गुरुदेव के निवासन में ये साधनाएं पूर्ण
विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती
हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 6 बजे के
बीच सम्पन्न होती है यदि ग्रहा व विश्वास
हो, तो उसी दिन में भाषणाओं में सिद्धि
का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार 20-6-2003

शुक्रवार के शक्ति दिवसों पर तेजुकर ज्ञान का भूषण अपने काम की विकासित हो जाता है।
जोर ऐसा हो स्पन्दन इन में लोने लगता है, जब सैनक्य को चाकर प्रतीना अपने पूर्ण
वीद्वन और रूप के साथ साधक के साथ आ खड़ी होती है, ठीक एक गुलाब के अधिगुणों
पूज्य की भूमि। उपर्युक्त दिवसों में सम्पन्न होने दी कृष्ण एवा द्वारा है, कि नाथक अपने राजी नाना,
बलश और विश्वासितों पर भूषा देना है और उक्त नवीन उपना, जोक के आप्लायिट हो
जाता है। इस एकल एक जटह के इनीत के रूप हुए जल में पैकड़े जैसे एक हिन्दू अली है, उसी
उपर निलोतपा के मोड़व कावज में साधक के जीवन में पक दिलाए सो हो तो आ जाती है।

यह निलोतपा के घटे वश में विद्या जा सकता है, तो यह सभी द्वारा साधन चल से।
इस साधन के जटह नाभ्रक लो जीवन में निलोतपा जा साहचर्य नाम होता है, वही उसके
नीचे बने में हास्य, विनोद की ओर प्रसिद्ध होती है। निलोतपा आपने साधक को हर प्रकार का
सुख दिया जाती है, आर्थिक वास्तव में रमाप सो जाता है।

शनिवार 21-6-2003

स्वर्ण पात्र साधना

यह साधना मध्य वा दीन काल में उत्तर भारत के शान विवारों
में प्रचलित थी, उस समय दर्शी साधना के बन पर भारत समुद्र
ओर ऐस्थिर की चरम चोपा पर पहुंच रहा था। वर्षातु उस साधना
में किसी स्वर्ण पत्र की आवश्यकता नहीं होती, अपितु वरका तहस्त
यह है, कि शर्व का कोप हो या धूर की निरोदी वह रवय ही एक
स्वर्ण पत्र बन जाए - ऐसा स्वर्ण पत्र विरामी जब चढ़े स्वर्ण
विकल्प हो जाए। इनी साधन के बन पर ग्रनाती रजा आपने
काल में प्रजा को धन-धान्य का भरपूर दान करते थे, और उसके
शक्तिशाली कोष नहीं देता था। स्वर्ण का तात्पर्य वहाँ धन या
नुद्वा हो देता है, उस समय में नुद्वा स्वर्ण के रूप में होती थी। इन साधनों
द्वारा साधक के जीवन की आर्थिक समस्याएं समाप्त होती हैं, तथा
धन के मद छोड़ पायते हैं।

शनिवार 22-6-2003 सिद्धाश्रम आत्म आहून साधना

सिद्धाश्रम डिग्गलड की पावन तपोभूमि है, जहाँ आज भी
अन्यतम उच्चकोटि के योगी, यति, ऋषि-गुरु उच्च साधनाओं में
स्ना हैं जीर ब्रह्माण्ड के उन रहस्यों को खोजने में गिरन्तर
गतिशील हैं, जो वही पी भजता है। सिद्धाश्रम की इन दिव्य
विभूतियों का दर्शन ही अपने वाप में परस्य गोप्यत्व होता है।
इनके दर्शन मात्र से ही जीवन के कई कार्य संबद्ध जाते हैं। इष्ट
जीर गुरु के दर्ता आज्ञा रखने वाले सन्तुरुओं को राजायता
पहुंचने के लिए सिद्धाश्रम की ओर प्रवासी साधनों सहित प्रवास से
रहते हैं। यदि साधना द्वारा सिद्धाश्रम की किसी विद्या ज्ञाना
का आवश्यक निष्ठा जाए और उनके साधक अपने प्रसन्न रखे
जाएं या मन में किसी संकल्प को रख तो यह साधन सम्पन्न
की जाए, तो निश्चय हो वे दिव्यतामाप साधक को रमाधान
प्राप्त होती है। कई बार साधकों का ग्रन्थों के रूप में यो
संकलन प्राप्त होते हैं, वायद साधन कान में किसी प्रकार को
कोई अनुभूति हो जाता है। सिद्ध हो जाने पर उस साधन
साधनिधन पत्र का बार-बार प्रयोग किया जा सकता है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भ्रात लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम सान्य होंगे

१. आप उपरे किन्हों दो किसी अधिक स्वयंसेवा को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं है) मन-तत्र-यंत्र विज्ञान परिका की वार्षिक सदस्य बनाकर विन्मो गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भ्रात ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको भ्रात रुपये 460/- दी जाना करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मन-सिद्धि, भ्रात प्रतिष्ठित सामग्री (वंश निकाल, जादि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भ्रात ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक पत्रिकार को वार्षिक परम्परा की इस पालनसाधनतामक जान धारा से जोड़कर एक पुनीत शुभ गुणदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयोग से एक पत्रिकार में अधिक कुछ प्राणियों में इश्वरीय चिन्तन, साधनान्मक चिन्तन आ पाया है, तो यह आपके जीवन की सफलता का दी प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क है और यह कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की नवीनतावर गणि को अर्थ के तराना में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

सातवीं में वर्णन आता है, कि भौतिक में मन यज्ञ किया जाता होता अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक गुणदायी होता है यदि नदी के किनारे करे, उससे भी अधिक समृद्ध तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करे, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी वह गुण श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी थोड़ा होता है यानि साधक गुण चरणों में वैदिक भाषण सम्पन्न करे और वह गुरुदेव आपो आश्रम अधिक गुरुधाम में से यह साधन स्वीकृत करे, तो इससे बड़ा भी माध्य तीव्र कुरु होता हो नहीं।

कुछ ऐसे व्याख्यान होते हैं, जहा विष्व वर्णियों का चाहा स्वैदेव रहता हो है। जो सगूहु होते हैं, वे सहृद रूप से अथवा सशरीर प्रतिज्ञन अपने भ्रात में उत्पत्तिके बहने हुए प्राप्त गतिविधि का सूक्ष्म रूप ये संचालन करते हों रहते हैं। हमनिय यदि विष्व गुरुधाम से वहूँ कर गुरु से माध्यम, मन एवं दीक्षा प्राप्त करता है और यह गुण चरणों का स्वर्ग कर उनको आज्ञा से साधना प्राप्तम् करता है, तो उसके सीधापै से तेवण्ण मी इष्ट्या करते हैं।

तीव्र अथवा युग्मप्रद है पर विष्व अधिक साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीव्र गुरुधाम होता है। यिस अग्नि में सदगुरुदेव का निवास अथान रहा हो, ऐसे द्वितीय स्थान पर यह गुण चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मन प्राप्त करने की इच्छा सीधाधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्तर्म गायन होते हैं। उसी तथ्य को इसन में रखते हुए मापदंडों के लाभार्थ गुरुदेव की अस्तसा के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन विष्वों में तीन विष्वों को साधनानाम प्रयोगों की श्रेष्ठता निर्धारित की गई है।

योजना केवल छन्द विनों के लिये 20,21,22 जून

विनों पांच व्यक्तियों की वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- जागाकर के वा उपरोक्त शशि का बैंक डाक्टर मन-तत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर योगदायों के लाक परे लिखाकर उपदार रूपरूप में दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फॉटो आण प्राप्त करना चाहे तो निर्धारित विष्वों के पूर्व भी अग्नि फॉटो एवं पांच सवार्णों के सवम्यता शुल्क की गणि का दाक्टर मन-तत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कावालिय के परे पर भेजे आपका फोटो पांच सवार्णों के नाम परे द्वाक्ट इसे उपरोक्त विष्व से पूर्व भी प्राप्त हो।

१० विष्व वर्षाक का योगदाय प्राप्ति उपर्युक्त दीक्षा के बाबत की जापन नाम्य, दीक्षा के बाबा दी अप्यन का शुल्क दीने वा, दीक्षा का नामान्तर का भाष्य विवरण शुल्क साधन विनों के नाम से बनाकर दिल्ली विज्ञान प्रयोग संस्था

११ विष्व वर्षाक का बाबा दी अप्यन का शुल्क दीने वा, दीक्षा का नामान्तर का भाष्य विवरण शुल्क साधन विनों के नाम से बनाकर दिल्ली विज्ञान प्रयोग संस्था

१२ विष्व वर्षाक का बाबा दी अप्यन का शुल्क दीने वा, दीक्षा का नामान्तर का भाष्य विवरण शुल्क साधन विनों के नाम से बनाकर दिल्ली विज्ञान प्रयोग संस्था

शक्तिपात्र यक्त दीक्षाएं

बगला मुख्यी दीक्षा

व्यक्ति जीवित है तो जीवित भी हुआर-हुआर बाधाओं से भरा हुआ है, ज धाहते हुए भी हमारे जीवित में शान्त हैं, बाधाएं हैं, अड्डचर्हे हैं, कठिनाइयां हैं, समस्याएं हैं। हम भूख से लड़ रहे हैं, हम गरीबी से लड़ रहे हैं, हम व्यापार की व्यूहाता से लड़ रहे हैं, और धाहे या ज धाहे तो भी हमारे शान्त भारजे के लिए टाटपर हैं, उससे हम भद्रभीत है, पिर आदिवर कौन सा रास्ता है जिसके माध्यम से हम विभिन्न रह सकें? शान्त मालसिक भी हो सकते हैं, जो मन में विना, तनाव, परेशानी, बाधा व अड्डचरे पैदा करते हैं। शान्त ऐसे भी हो सकते हैं - रोग, दुःख, पीड़ा, वारिद्रव्य वित्त होने वाले हैं, ऐसी प्रत्येक स्थिति में एक मात्र - केवल एक मात्र उपाय बनाना गुरु दीक्षा साधना है।

Progress of children

Very strange are the ways of fate. A child born in a rich family grows up and is forced by circumstances to lead a poor life while another born in a poor family comes into fortune and wealth. Then there are so many instances of children of well educated parents failing to achieve anything remarkable academically while offsprings of uneducated parents show an inclination to study and come out top in their studies.

Why does this happen?

The spiritual texts state that the mind of a child starts developing even when it is in the mother's womb. That is why Guru's prescribe *Garbh Chaitanya Diksha* so that when the child is born it attains to good virtues. When these children are born they grow up to be remarkable individuals. But what about the children who have already been born and who did not have the good fortune of getting initiated in the womb?

Is there any other method through which good virtues, good traits and intelligence could be instilled into the young minds so that they could grow up to be wise, strong and unique beings?

To give birth to a child is easy and is no big deal but to instill the right traits and virtues is something which requires the right efforts from the side of the parents. Good education and upbringing are fine but if these are complemented by spiritual powers then there would be no danger of the child straying onto the wrong path. One way of instilling spiritual energy is the following Sadhana that can virtually change the fortune of your child for the better. Through this amazing ritual one could bring about desirable transformation in one's children. They could be made more obedient, intelligent, virtuous. This powerful Sadhana also protects them from accidents, mishaps and ailments. There also remains no fear of a young mind being corrupted by wrong company. The child starts to fully realise his

duty and becomes sincere in his efforts. Also he gains the inner power of making the right decisions.

Early morning on a Monday the couple should sit for Sadhana with their child. They should first have a bath and wear fresh clothes and sit facing North. They should be seated on a white mat. A wooden seat should be covered with a white cloth and on it *Bhaagyodaya Kalp Yantra* (in form of an amulet) must be placed on mound of rice grains. First they should chant the following Mantra meditating on the form of Saraswati the Goddess of wisdom and learning.

*Shuddhsatik Sankaashaam, Chandrakoti
Susheetalaam. Abhayaam Var Hastaaam Cha,
Vande Vaageeshvareem*

After this worship Lord Shiva by chanting *Om Namah Shivaay* 51 times. Apply a mark of sandal-wood paste on the forehead. The child should be given a *Raksha Gutika* which he or she should clutch in the right palm throughout the Sadhana. In the left hand the child should clutch a betel nut. Then offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Then with a *Katarya Siddhi rosary* chant five rounds of the following Mantra. The parents should chant together and if the child too can chant along then nothing like it.

*Om Sham Ayeim Sheem Rakshaayeis
Oordhya Chetanaay Om Phat*

After Sadhana take betel nut and Raksha Gutika and move it around the child's head thrice. Take these and the rosary and drop them in a river or pond. Make the child wear the Yantra in a thread around the neck. Whenever in future the child faces any problem he should chant above Mantra 21 times before the picture of Sadguru Dev. This is a Sadhana that parents should not miss. For each child the Sadhana should be done separately with different Sadhana material.

Sadhana Articles - 300/-

Victory ensured!

It is a strange paradox that man who considers himself supreme among all beings is nothing but a slave to the circumstances. Instead of becoming capable of transforming things in his favour he easily gives in to the various pressures and adjusts himself to situations. And thus he becomes fated to lead an ordinary life that has nothing new in it. Most of his desires remain unfulfilled and he becomes nothing more than a straw that is carried away by the strong current against its will.

But if we go through human history we shall find that only those men and women have been honoured and remembered who dared to stand up against challenges and who came out victorious even while struggling against all odds. Life means struggle and problems but the real pleasure is in overcoming the same and emerging triumphant in every ordeal that life has to offer.

No matter which field in life you choose problems are bound to emerge. These could be in the form of enemies, ailments, tough situations or obstacles in your work. Any of these could make one fill up with despair and fear leaving one incapable of making the right decisions or facing the challenges of life.

However if a person is replete with divine energy then he would never accept defeat before any person or situation. He feels so filled with confidence and will power that he sees no obstacle as insurmountable. Instead of bowing to adversities he keeps endeavouring to attain to victory over even the most dangerous ordeals. It is only then that he is able to fulfil all his wishes and attain to true joy and a sense of fulfillment in life.

Presented here is a wondrous Sadhana that could help you achieve victory in every sphere in life. It is an ancient Sadhana once gifted to Lord Ram by his Guru Vishwamitra. When Ram was unable to defeat Ravan in spite of using the most powerful weapons he prayed

to his Guru and sought guidance. Vishwamitra appeared and suggested that Lord Ram should try *Kriyamaan Vijay Sadhana* after accomplishing which a person becomes definitely victorious. Any person facing dangers, enemies, problems in life that seem insurmountable could try this Sadhana.

In the night of a Monday after 10 pm have a bath and wear red clothes. Sit facing South on a red mat. Cover a wooden seat with red cloth. Write down your problems on a piece of paper with red ink. First of all pray to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Then light eleven mustard oil lamps on the wooden seat in a straight row. Before each lamp make a mound of black sesame seeds. On each mound place a Kriyamaan. Thus one needs *eleven Kriyamaans*.

On a separate mound of sesame place the *Vijay Yantra*. Offer vermillion and rice grains on the Yantra. Then start chanting the main Mantra. One has to chant 11 rounds with *Treilokya Vijay rosary*. Before each round pick up a Kriyamaan and speak out one of your problems. Keep it clutched in the left fist. Thus you can seek solution to 11 problems. The Mantra to be chanted is,

*Om Ayeing Hreeng Vijayaayei Hreeng
Ayeing Phat*

After completion of one round touch the Kriyamaan to the Yantra and then to the respective lamp and pray for the solution to that particular problem. Place the Kriyamaan on the respective mound. Do this each time you complete one round.

After Sadhana tie all the Kriyamaans, rosary and Yantra in a red cloth and drop the bundle in a river or pond the next day. Within a few days the results shall be obvious to you. In the future if you face any problem chant the Mantra 108 times before the picture of Sadguru Dev.

Sadhana Articles – 300/-

Boost your finances

Among the Jains the most avidly worshipped deity is Chakreshwari and not without reason. The powerful divine Goddess protects her worshippers and Sadhaks from all dangers and also ensures that there remains no paucity in their lives. Her blessings mean wealth galore and success in business ventures. And what more besides providing financial security for her worshippers she even helps them attain to amazing levels of success in the spiritual field.

According to Jain scholars if a Sadhak tries the Sadhana of Goddess Chakreshwari with full faith, determination and devotion then without doubt the Goddess is pleased and she showers all worldly and spiritual boons on him.

Specially if one is facing with failure in business or one is jobless then this Sadhana comes as a great boon. After accomplishing it within no time one attains to success in the desired field and financially speaking there remains no paucity whatsoever. However the first and foremost requirement for success in the Sadhana is unmoving faith.

This Sadhana that is being presented here is a very ancient ritual that has stood the test of time over the ages. It has been tried by hundreds of Sadhaks and has never known to have failed as yet. Even if there is some lapse on the part of the Sadhak there sure accrues some result, for the kind Goddess never overlooks even the slightest spark of devotion.

The Sadhana is of three days. It should be done early in the morning before sunrise. The best day to start it is any Monday of the bright fortnight of the lunar calendar.

For the Sadhana have a bath and wear fresh white clothes. Sit on a white worship mat facing the East. Cover a wooden seat with yellow cloth. Then

with vermilion write *Hreem* on it. On this inscription place the *Chakreshwari Yantra*.

Then chant one round of the Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana. Thereafter light a ghee lamp before the Yantra. Worship the Yantra by offering vermilion, rice grains and yellow flowers on it.

Then concentrating your gaze on the Yantra contemplate on the form of the Goddess Chakreshwari chanting the following Mantra.

Shree Chakre Bheeme Lalit Var Bhuje Leelaya Laalayantee.

Chakram Vidyutprakaasham Jwalit Shat Shikha Vei Khagrendraadhiroodde.

Tattvei Rud BhootbhaaSaa Sakal Gunnidhe Mantra Roop Swakaante.

Kotyaa Dityaa Prakaashe Tribhuvan Vidite Traahi Muam Devi Chakre.

Then with a *Hakeek rosary* chant 35 rounds of the following Mantra of Goddess Chakreshwari who in the Jain Tantra is believed to be the fulfiller of all wishes.

Om Ayeim Shreem Chakre Chakra Bheeme Jwal Jwal Garud Prishti Samaaroode Hraam Hreem Hroom Hroum Hrah Swaahaa

Do this daily for three consecutive days. After each day's chanting place the rosary on the Yantra. On the fourth day drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Soon you shall see wonderful opportunities coming your way that could help you make it big and earn more wealth than you could have ever imagined. Even if there are some delays do not lose heart and have patience. Keep your faith unmoved and without doubt soon you shall taste success.

Sadhana Articles - 240/-

Secret of eternal youth!

What actually is the definition of old age? Is it physical ageing or has it more to do with psychological effect that the passing years have on the human psyche?

No doubt after forty the body starts to grow slow but how about the mind? In many cases it is the remarks of others that make one aware of the increasing age, the wrinkles and the graying hair. But this is a natural process that everyone has to go through and it is quite inevitable. But why does it have to mar one's working capacity, one's thoughts and one's power to plan and implement?

May be it is rare but one can come across people of 70 to 80 who are more active than those in the twenties. Many of our famous international politicians and business persons are good examples. Churchill it is said led Britain out of the brink of defeat to victory when at the age of 80 he took over as the Prime Minister of UK. There are hundreds of such examples.

If we observe carefully we shall find that ageing is more of a psychological process. No sooner do the hair turn gray than people start nurturing the fear of ageing. Such fear, such thoughts only tend to make one grow listless. Slowly there creeps in a lack of enthusiasm in one's actions and style of working and then true enough ageing has a toll on one's body and mind.

Overeating and too much worrying also makes one prone to early signs of ageing and if one resorts to wine and drugs then the dusk of one's life manifests rather quickly.

Today plastic surgery it is said can take care of your wrinkles. But what about the wrinkles in your mind that make your thinking befuddled and compel you to lead a mirthless, joyless existence?

And if we study our ancient texts we find that Rishis in the ancient times used to live to thousands of

years. Are these claims false? How could they remain active and youthful for so long? What was the secret of their longevity and youthfulness?

The secret was Tantra. Through Sadhanas they could keep old age at bay for years and years. Even hundred years old Yogis could remain young and active. One of such Sadhanas is Amritatva Sadhana.

This Sadhana will not make your hair black or make your wrinkles vanish. But it sure shall fill you up with an enthusiasm for life and make a unique radiance glow on your face. It shall fill you with enough energy to work twenty hours a day without tiring or feeling bored.

Try this wonderful Sadhana on a moonless night. Have a bath and wear white clothes. Cover yourself with *Guru Chaddar* (special protective shawl). Cover a wooden seat with white cloth and in a copper plate place a *Amrutanjan Yantra* on it. Chant one round of Guru Mantra. Then offer vermilion, fresh white flowers and rice grains on the Yantra. Then light a ghee lamp and chant 75 rounds of the following Mantra with a *Kayakalp rosary*.

Om Shreem Amritatvam Saadhyu Shreem Om Phat

After the Sadhana for ten minutes pour water on the Yantra in the form of a thin stream all the while chanting the above Mantra. For this place the Yantra in a shallow vessel. Then chanting the Mantra further 21 times offer 21 roses on the Yantra.

After this drink some of the water and with the rest have a bath. For five days let the Sadhana articles remain in your worship place at home. After five days drop the Yantra and the rosary in a river or pond. You shall soon find a subtle transformation in yourself.

Sadhana articles - 330/

नाशयण स्मरण

सर्वश्रेष्ठ मंत्रों में से एक है। मेरा अपना अनुभव है, कि इस मंत्र के जप से किसी भी व्यक्ति का भूत भविष्य दर्शान स्पष्ट देखा जा सकता है।

साथ ही मानसिक पीड़ा, प्रेत बाधा, आर्थिक कठिनाइयों व पारिवारिक कलह से मुक्ति पाई जा सकती है। मनोवांछित फल की कामना करने वालों को नाशयण मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए।

साथ ही इसे ध्यान हेतु भी जप करना पूर्ण फलप्रदायक है।

**मुद्रोन्तरीलं विद्वत् विद्येयं लालात् शिवोरूपम् पद्मेशम्।
ज्ञानोक्षितां पूर्णं मद नृतत्वं तत्मै ना काशय नाशयणत्वम्॥१॥**

**रस्यं मुद्रोन्यं देवत्वं ल्पयं क्रिद्विर्छत्मान्य देवं विद्यात्।
विद्वाश्रमः प्राण प्रातः रमदेयं तत्मै श्रा काशय नाशयणत्वम्॥२॥**

**अणिमादि विद्वि पूर्णत्वं पूर्णं ब्रह्म रूपल्पं पूर्णं मदेत्यम्।
महत्वं देहं मुद्रोमनं च तत्मै यु काशय नाशयणत्वम्॥३॥**

**शिवोरूप लोभ्य ब्रह्मश विष्णु देव्य रूपरूप महाचिठ्ठ्य रूपम्।
प्रातः रमद विव्य उज्जवल उदात्तं तत्मै यु काशय
नाशयणत्वम्॥४॥**

**तेदोक्त वेदं लाक रूपरूपं लालात् शिवं पूर्णं देवत्वं पूर्णं।
शिव्यश प्राणोत्थकविव्य भव्यं तत्मै द्रु काशय नाशयणत्वम्॥५॥**

**गंगा छिमो ब्रह्म विद्वाट ल्पयं अणित्यं लक्ष वन्द्य ल्पयं मदेत्यम्।
अनुलनीय लालात् ब्रह्म रूपरूपं तत्मै त्रु काशय
नाशयणत्वम्॥६॥**

**नाशयण मिदं षष्ठं य पठति गित्य मानवः।
सर्वं विद्वि श लाफल्यं पूर्णं श्रेय गुरुस्ती लक्षा॥**

— स्वामी विरचितानन्द जी

आहु : जून में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

दिनांक
6-7-8 जून
स्थान
शुभधाम (जोधपुर)

पूज्य गुरुदेव निम्न निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 बजे से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

दिनांक
20-21-22 जून
स्थान
मिश्राश्रम (दिल्ली)

वर्ष - 22

अंक - 5

मंत्र-नक्ष-विज्ञान द्वा, श्रीमातीमाने डाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफ़ोन-0291-2432010
मिश्राश्रम 306, काश्मीर पूँजीव वीनमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27132248, टेलीफ़ोन 11-27196700



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

